श्री हिन्दी साहित्य संसार

चकाचक

गोपालप्रसाद व्यास



मूल्य तीस रुपये मात्र / प्रथम संस्करण 26 जनवरी, 1985
सर्वाधिकार गोपालप्रसाद व्यास / आवरण सज्जा सुकुमार चटर्जी
प्रकाशक श्री हिन्दी साहित्य संसार, 1543, नई सड़क, दिल्ली 110006
मुद्रक एम०एन० प्रिंटर्स 1539 गली मुकेश मार्केट गांधीनगर, दिल्ली 31

CHAKACHAK By Gopal Parsad Vyas
(Humorous Sketches) Price Rs 30 00

आम से आम

पुस्तक की व्यग्य विनोदमयी वार्ताए मैंने आगरा म बैठकर लिखी हैं। सन् 1983 मे जब दैनिक विकासशील भारत का आगरा स प्रभात सस्करण निकला तो मैं इसका प्रधान सपादक नियुक्त हुआ। अपन विविध सपादकीय दायित्वो को निवाहने के साथ-साथ पत्र को लोकप्रिय बनाने और पाठको को स्वस्थ एव साहित्यिक आनद की दृष्टि से मैंने प्रतिदिन 'चकाचक' नाम से एक दैनिक स्तम्भ प्रारम्भ किया। यह स्तम्भ कथोपकथन की वार्ता शली मे था। पत्र का प्रसार विशेषकर ब्रज-क्षेत्र मे ही था। ब्रज से लगते हुए राजस्थान, मध्यप्रदेश और हरियाणा के उन अचलो मे जो वास्तव मे वहत्तर ब्रज के अतगत ही आते हैं और जिनकी सास्कृतिक, साहित्यिक और भाषा परम्परा भी ब्रजमयी है, वहा भी बहुत शीघ्र उक्त दैनिक का तेजी से प्रचलन हो गया। इसलिए अपने पाठको की रुचि का ध्यान रखते हुए, मैंने इस स्तम्भ को ब्रज रस स सराबोर रखने का निश्चय किया। इसीलिए 'चकाचक' म मथुरा की मस्ती है, आगरा की पाट है, हाथरस की बगीचिया है, गोवधन और भरतपुर के रसिया हैं बरसाने की होली है, व दावन की भक्ति है, कृष्ण की लीलाए हैं और राधा की अनुरक्ति है। लेकिन पारम्परिक रूप मे नहीं, आधुनिक सदभ म।

नई किस्म के व्यग्य-लेखन म भी मेरी थोडी-बहुत पैठ है। उसकी वक्रता, नया शिल्प, नए मुहावरे और मौलिक प्रतीको की थोडी-सी जानकारी मुझे भी है। व्यग्य विनोद के नए लेखको को चौंकाने के लिए यदा-कदा मैं उनका सफल या असफल प्रयोग करता भी रहता हू। परन्तु नई विधा के सिद्धहस्त लेखको स मेरी यह शिकायत है कि वे प्राय आम आदमी से कटकर खास लोगो के लिए लिखा करते हैं। तक यह है कि इस प्रकार वह व्यग्य विनोद को स्तरीय बना रहे हैं। बात कुछ हद तक ठीक भी है, लेकिन मेरी समझ मे यह नही आता कि आम आदमी के स्तर को उठाए बिना लेखक के स्तर का एकाएक ऊचा उठ जाना, क्या मानी रखता है? आम आदमी से आम आदमी की तरह आचरण करो। उसकी भाषा मे उसके

मॅन की वात कहो । समाज के अन्दर पहले झाको । फिर हल्के-हल्के मीठे व्यग्य विनोद से उनम चेतना पदा करो । समाज़ का परिष्कार मरे मतानुसार शायद इसी प्रक्रिया से सहज सभव है । हो सकता है मेरा सोचना गलत हो, लेकिन मैं इसी रीति-नीति पर पिछले 45 वर्षों से चल रहा हू ।

सक्षेप मे यही मेरे व्यग्य-विनोद की पूव पीठिका है । मेरे लेखन का वतमान भी है । भविष्य क्या होगा, इसे कौन कह सकता है ?

इस पुस्तक के चकाचक प्यारेलाल, रामप्यारी और गुलक्दी सभी पात्र मेरे साथ वर्षों से जुडे हैं । इनका मुझसे ही नही स्वय आपस म भी पारिवारिक रिश्ता है । एक पति है, दूसरी पत्नी है, तीसरा पत्नी का भाई है और चौथी पत्नी की भाभी है । ये सभी मधुर रिश्ते हैं । इनकी छेडछाड भी मीठी है । इनके सामाजिक और राजनीतिक सस्कार भी वही है जो आज समाज म व्याप्त हैं । इन पर इनकी नुक्ता चीनी भी वैसी ही है जसी कि आज के राजनीतिक आर सामाजिक नेता परस्पर किया करत हैं । इस तरह 'चकाचक की इन वार्ताओ म जहा लोक साहित्य, लोकगीत लोक कहावतें और पग-पग पर लोकरस और लोक रग छाया हुआ है वही पर आज की राजनीति, समाज व्यवस्था और आज के अभाव-अभियोगा की भी मरम्मत कम नही है । इसमे लेखक ने अपने को भी नही बख्शा है । पहचानने वाले को इसम स्थान स्थान पर यास भी पकडाइ आ सकता है । जो अपन का बख्श दे वह व्यग्य विनोद का लेखक नही हो सकता ।

व्यग्य विनोद के स्तम्भ लेखन की श्रृखला मे यह मेरी चौथी और शायद अन्तिम कडी है । कैसी बन पडी है, यह आप जानें । किसी के मन को छू जाए तो लेखन साथक और न छुए तो 'कविता समुझाइवो मूढन को सविता गहि भूमि प लाइवो है ।'

—गोपालप्रसाद व्यास
व्यास निवास, बी 52 गुलमोहर पार्क
नई दिल्ली 110049

क्रम

□

❀ ❀ ❀

भग का रग

कहिए, चकाचक जी है ?

क्यो नही हैं ? हैं ! और जोरो पर हैं। आइए प्यारेलाल जी ! रामकृष्ण हेगडे की तरह कि गुण्डराव को हटाकर धडाधड अन्दर चले आइए और रगरप्पा को अगूठा दिखाकर सामने वाली कुर्सी पर जम जाइए।

जम गए।

ऐसे नही। ऐसे कि जैसे ठड मे कुल्फी जम जाती है। सामी के तालावो मे बर्फ जम जाती है। ब्रज के कुण्ड-सरोवरा मे अखड रूप से काई जम जाती है। हा ! अब जमे कि जैसे भारत की आम जनता की छाती पर महगाई जमी हुई है या एक के वाद दूसरे और तीसरे प्रदेशो मे हारकर भी काग्रेस (आई) जमी हुई है।

कहो चकाचक जी ? मधु दण्डवते तो कह रहे है कि फिर से जनता की लहर आने वाली है और काग्रेस (आई) जाने वाली है। छोडो इसे, आप क्या कर रहे है।

सिल्ली देवी पर लोढेश्वर का रगड रहे ह। हमने सोचा कि जब दुनिया हथियारो की होड मे दीवानी होगई है, हमारे नेताओ की मति बौरानी होगई है और जब सारे कुओ मे भाग, पडी हुई है तो एक लोटा हम भी छान ल। ओ, होऽ होऽ होऽ हो ! दाऊ दयाल, ब्रज के राजा ! भाग पीवे तो पागलखाने और जेलखाने के बीच मे विकास-शील भारत के छापेखाने आजा। लैना हो हल मूसर वारे। टेडी टाग वारे। सात कोस वारे। ब्रज के रखवारे। गोरे, दाऊ बाबा और कन्हैया वारे। मोर मुकटधारी। बाके बिहारी। चली आ छमाछम। तुझे धोखा न मुझे गम। ऐसो आवै, हरि गुन गावै। हरि के चरणारविन्द मे चित्त लगावै।

अजी चकाचक जी। चित्त नो श्रीमती इंदिरा गांधी के चरणों में लगाइए। भोसले की जगह किस्मत आजमाइए। अर्जुन की जगह दुर्योधन बनकर बैठ जाइए। माथुर डगमगाए तो अपनी किस्मत आजमाइए। भाग पीने मे क्या रखा है ? पीजिए और पढ़कर सो जाइए।

प्यारेलाल चुप हो जाइए।

कमलापति यानी त्रिपाठी जी ? जिनका इंजन चलते-चलते पटरी से उतर गया। अजी, इस नाम का ध्यान करने से अब कुछ नही मिलेगा, अब तो कृष्ण वल्लभ पन्त का ध्यान लगाइए। श्रीयुत श्रीपति से कहिए जनाब धोखे मे मत रहिए, नही तो दिल्ली से गोमती एक्सप्रेस धड़ाधड़ लखनऊ पहुच जाती है।

हा, हा। ऐसी आवै कि हाथी को सवार भुनगा ही नजर आवै। कोई कान खुजावै। कोई सिर सहलावै। कोई हमारी तरह ये रग लगावै—

भाग तो ऐसी छानिए ज्यों भादों को कीच।
घर के जानें मर गए आप नशे के बीच।।

नही चकाचक जी ! अब रग बदल गया है। इसे यू लगाइए—
हे अन्तुडिया जी। हे मेरे प्यारे पहाडिया जी। हे राजनीति के बुलबुले जी। चुलबुले जी। हे मेरे अन्तुले जी। कच्ची और गीली, यारो इतनी क्यों पी ली—

नशा उतर गया, लेकिन खुमार बाकी है।
गांठ की खत्म हुई अब उधार बाकी है।।

देखा प्यारेलाल ! हम राजनीति मे न खींचो, ब्रजरस मे ही रहने दो। नेताओं की भलाई बुराई तुम करो, हमे तो भाग की महिमा कहने दो—

बिल्ली जो पीवे तो स्वान हू के कान काट,
स्वान जो पीवे तो मार मृगराज को।
गढ़िया जो पीवे तो करै गढ़ कोट धाव
बनिया जो पीवे तो हाथ मार राज को।।
मामद जो पीवे तो कामिनि सग भोग करै
कामिनी जो पीवे तो बिसर जात लाज को।
कहैं कवि गग, या विजिया में ऐते रग,
चिड़िया जो पीवे तो झपट मार बाज को।।

अच्छा, चकाचक जी, अच्छा। चकाचक जी ! अगर सचमुच विजिया मे ऐसी ही मिफ्त है तो मोरार जी भाई के पास जाइए और उन्हें जीवन-जल की जगह यह बूटी पिलाइए। चौधरी साहब को दीजिए और कहिए कि पुन सत्ता प्राप्ति के लिए थोडी सी लीजिए ! भेजिए बाबू जगजीवन के पास इसकी गोली। कहिए कि होनी थी सो हो ली। चालीस दिन इस नुस्खे को आजमाइए और जीवनभर की मुराद पा जाइए ! अटलबिहारी जी से कह दीजिए, एक बार नही तीन टैम लीजिए। कुर्सी आपकी है, नही किसी के बाप की है।

ठीक है, प्यारे लाल। तुम यह नेक काम करो हमारी सिल और लोढे को सलाम करो। लो एक चुल्लू।

नही, गुरू !

क्योकि वकील दण्डवते साहब, यदि सचमुच जनता लहर आ जाएगी तो शराबियो का तो कुछ नही बिगाड सकी, इस बार भगेडियो को अवश्य खा जाएगी।

—29 जनवरी, 83



2



न जाने कब ?

ये मोटी खुरदरी चप्पलें, ये खद्दड खादी की धोती, कुर्ते पर पट्टू की नेहरू जाकिट और सिर पर नोकदार गाधी टोपी—क्या बात है प्यारेलाल ! आज कहा जाने की तैयारी है ?

राजघाट ! गाधीजी की समाधि पर। आज शहीद-दिवस है न ? आज के दिन हमारी यही ड्रेस होती है। दोपहर बाद इसे तह करके सन्दूक मे बद कर देते है और साल भर बाद फिर इसी दिन निकालते है।

यानी मामला चकाचक रखते हो ! और क्या-क्या करते हो प्यारे भाई आज के दिन।

चकाचक जी, आज के दिन हम वर्ष के तीन सौ चौसठो दिनो का सवेरे के केवल दो घटो मे ही प्रायश्चित कर डालते है। बडी श्रद्धा से राष्ट्रपिता की समाधि पर पुष्प चढाते है। प्रार्थना-सभा मे बैठकर होठ चलाते है और जेब मे से गीता निकाल कर अन्य लोगो के साथ साथ शुद्ध-अशुद्ध कुछ श्लोक भी बोलते है। गगा मे नहाने से और और गीता के कुछ श्लोक बोलने से जीवन भर के पाप जैसे कट जाया करते है, वैसे ही तीस जनवरी को एक बार गाधी समाधि पर मत्था टेकने से हम जैसे नेताओ के सभी पापाचरण स्वयमेव नष्ट हो जाया करते हैं।

तो महाशयजी, आज आप अपने पापो का प्रक्षालन करने जा रहे हैं ?

जी हा ! यह तो हमने आपको आन्तरिक बात बताई। जाहिरा बात कुछ और है, चकाचक जी !

यह भी हो जाए।

बात यह है गुरु जी, कि सरकार और अखबार भले ही इसे शहीद-दिवस कहते रहे, हमारे लिए तो यह एक राजनीतिक मेला है। सभी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हमे इस मेले मे मिल जाया करते है। आजकल जैसे श्मशान घाट पर भी दो-चार मिनट मरने वाले पर खर्च करके

व्यापारी अपने व्यापार की, रोजगारी अपने रोजगार की और राजनीतिज्ञ अपनी राजनीति की चर्चा मे जुट ही जाते है, वैसे ही गाधी जी की समाधि पर भी होता है। नेता लोग अलग-अलग हटकर और बैठकर आपस मे बतलाते हैं और फुसफुसाते हैं। स्वय बडे नेताओ को देखने है और छोटे नेताओ को अपना चेहरा चमकाते है। कभी प्रधानमत्री के पीछे चार कदम चलकर कभी किसी अन्य बडे नेता के साथ टहल कर उपस्थित लोगो, विशेषकर पत्रकारो और फोटोग्राफरो का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते है। सम्भावित लोगो के चेहरो को पढते हैं और आशकित लागो की ओर सात्वना सन्देश लेकर बढते हैं। बडी-बडी खबर मिलती ह। बडे-बडे राज खुलते है। बडा फल है आज के दिन गाधीजी की समाधि पर जाने का। आप भी चलिए न ?

प्यारेलाल जी ! आप पधारिए ! देर न कीजिए। राष्ट्रपति जी वहा पहुचने ही वाले है। अपने राम तो यही बैठे-बैठे गाधीजी का 'अनासक्ति योग' पढ रहे ह।

हा, बस चलता हू ! जरा एक मिनट को बहन रामप्यारी जी से मिल लू। बात ये है कि थोडी देर के लिए हमे चरखा-यज्ञ मे भी बैठना है। लेकिन अभ्यास न होने के कारण सूत का तार बार-बार टूट जाता है। जरा उनमे दो-चार मिनट की ट्रेनिग ले लू।

क्या दो-चार मिनट मे तार जोटना आ जाएगा, प्यारेलाल ? क्यो नही आ जाएगा ? हमने भाग छान-छानकर आपकी तरह बुद्धि का विनाश थोडे ही किया है। अजी हम सेकिन्डो में बात का तार निकाल लेते है, तो सूत का तार क्या चीज है ? जब असम वार्ता हर बार टूट-टूटकर जुड जाती है। पिछले दिनो अकाली वार्ता फिर-फिर सानन्द जुडती रही है तो ससुरी पोनी का तार क्या उनसे भी जटिल है ? फिर वहा चरखे के जुडते और टूटते तारो को कौन देखता है जी ? लोग तो यह देखते है कि कौन कौन कताई मे बैठा है। हमने एक फोटोग्राफर से साठ-साठ कर ली है। वह ऐसे एगिल से क्लिक दबाएगा कि बाबू प्यारेलाल का चमकता हुआ चेहरा उसमे प्रधानता से स्थान पा जाएगा। अहा ! वह कैसी शुभ घडी होगी जब राजधानी के अखबारो में मुखपष्ठ पर हमारी तस्वीर जडी होगी। हम उसकी पचास प्रतिया खरीद कर लाएगे, अपने बीवी-बच्चो महित मित्रो को उछल-उछल कर दिखाएगे, अपने चुनाव क्षेत्र के प्रमुख केद्रो पर उसे

भिजवाएगे। लखनऊ के अखबारो मे भी छपवाएगे। क्या पता कि गाधीजी की समाधि से हमारा सोया हुआ भाग्य भी जाग उठे, मत्रिमडल मे कुछ हेर-फेर शीघ्र होने लगे तो महात्मा गाधी को छोडकर राजीव गाधी की परिक्रमा लगाएगे। लग गया तो तीर, नही तो तुक्का तो है ही।

बहुत ठीक, तुम्हारे चासेस बहुत ब्राइट है, प्यारेलाल ! धोबी के गधे की तरह। तुमने वो कहानी सुनी है।

कौन-सी ?

सुनो—

एक धोबी अपने गधे से हर रोज बुरी तरह पेश आता था। खाना-पीना कुछ देता नही था, लेकिन काम कसकर लेता था। उसके रेकने पर या दुलत्ती झाडने पर जमकर डडो से उसकी पिटाई करता था।

बेचारा शीतला वाहन हचू, हेचू करके रह जाता था। एक दिन पडोसी कुम्हार के गधे ने उससे कहा— तू इतनी मार क्या खाता है, वे ! बिना दाना-पानी पाए इतनी भारी-भारी लादिया क्यो ढोता रहता ह ? असन्तुष्ट विधायको की तरह क्रान्ति का बिगुल क्यो नही बजा देता ? ऐसा तुझे क्या लालच है ?

धोबी के गधे ने लम्बी सास भरी। फिर कुम्हार के गधे के कान पर अपना मुह लगाकर बोला—बात तो यार ठीक कहते हो। मै भी वक्त की इस मार से बेजार होगया हू। लेकिन निराशा के इस कोहरे मे कभी-कभी आशा की एक किरण ऐसा उजाला भर देती है कि दल-बदल करने से मेरे पाव रुक जाते है।

कुछ क्षण चुप रहकर धोबी के गधे ने फिर कहा—मेरा मालिक बहुत जालिम है। मेरी ही नही अपनी बेटी की भी जमकर धुनाई करता है। जब वह अपनी बेटी को पीटता है तो अक्सर यह कहा करता है कि अगर तू कामचोरी से बाज न आई और तेरी हरक्ते ऐसी ही जारी रही, हरजाई ! तो देख लेना एक दिन म तेरी शादी किसी गधे के साथ कर दूगा ! बधू, इसी आशा मे म वहा अटका हुआ हू। न जाने कब चासेस ब्राइट हो जाए। न जाने कब मौका हाथ लग जाए !

—30 जनवरी, 83

□

❀ ❀ ❀

गेंद के सगई धायौ री !

प्यारेलाल ! आज तो धूप खिली है।

खिली है।

तो चलो, जमुना किनारे, हमारे-तुम्हारे बीच गेंद-बच्ची हो जाए।

गेंद-बच्ची ! क्या बला है ?

प्यारेलाल, तुम जैसे पश्चिमी सभ्यता के लोग जिस तरह अपने को बंदर की संतान मानते हो, वैसे ही हम जैसे महापुरुष आधुनिक क्रिकेट को गेंद-बच्ची की औलाद मानते हैं।

रिसर्च के लिए हम भागलपुर विश्वविद्यालय में सिफारिश करेंगे कि आपकी इस खोज पर डाक्टरेट की उपाधि दे दी जाए।

नहीं, नहीं। चकाचकों के घर में डाक्टर और डाक्टरी का प्रवेश निषिद्ध है। चलो आज गेंद-बच्ची खेलेंगे।

मगर, आपको यह उचंग आज सूझी क्या है ?

पाकिस्तान में भारतीय खिलाड़ियों के अभूतपूर्व प्रदर्शन को देख कर हमने भी सोचा कि तुम्हें गेंद-बल्ले के दो-दो हाथ आज दिखा ही दें।

मगर पाकिस्तान में तो भारतीय खिलाड़ी बुरी तरह पिटे हैं। क्या आपकी भी पिटने की इच्छा है ?

वह तो जमुना-तट पर ही मालूम पड़ेगा। चलो, जल्दी से रिक्शा ले आओ।

चुप क्यों हो गए ? क्या तुम भी भारतीय क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष की तरह भारतीय खिलाड़ियों कि धुनाई पर मौन होना मांगते हो ? कि अंपायरिंग के बारे में कुछ कहा तो पाकिस्तानी हल्ले के कारण उसका खण्डन करना पड़ जाएगा।

जी !

या कप्तान गावस्कर की तरह तुम भी हमारी इस बात का जवाब नहीं देना चाहते कि मंच पर मैच हारना मंजूर है, लेकिन साले बहिनोइयों को छोड़ना मंजूर नहीं ?

जी !

क्या जीजी-जीजी लगा रखी है ? जनाब की जीजी रसोई में है। वह भी क्या पाकिस्तानी प्रेसीडेन्ट जिया उल-हक से कम है कि विश्वनाथ भले ही रन न बनाए पच्चीस हजार रुपये का पुरस्कार पाने के अधिकारी तो है ही। श्रीमान प्यारेलालजी, आप भले ही हमारी बात का जवाब न दें, आपकी बहिन जी तो आपके लिए चाय-नाश्ता तैयार कर ही रही है।

जी, शुक्रिया।

शुक्रिया अदा तो प्यारे भारतीय टीम का हमारे विदेश मन्त्री को करना चाहिए कि हमारी गावस्कर एण्ड क० ने पाकिस्तान को मैच पर मैच जिताकर यह साबित कर दिया है कि हिंदुस्तान हार हारकर भी अपनी मैत्री-भावना से पीछे नहीं हटता।

चकाचकजी, आपकी इस टिप्पणी से हम भी सहमत हैं।

अब सहमत क्यों नहीं होंगे ? किचन से गरम गरम समोसे और हलुवे की सुगन्ध जो आरही है।

श्रीमान जी यह सुगन्ध भी वैसी ही है जैसे जिया साहब की निर्गुट राष्ट्रों के सम्मेलन में पधारने की खुशखबरी। ठीक है ना ?

बिल्कुल ठीक। एकदम समोसे के साथ चटनी आने की खबर।

बड बेशम हो प्यारेलाल ! एकदम भारत के क्रिकेट खिलाड़ियों की बल्ला पकड़ते ही पेवेलियन में वापस लौटने पर वे जरा भी शर्मिंदगी महसूस नहीं करते। भले ही लपक लिए जाए या गिल्ली उड़ जाए। खिलाड़ी क्या है, पूरे योगी है। 'लाभालाभऊ, जयाजयऊ' यानी जय पराजय से विचलित नहीं होते। कैच तो यूं छोड देते हैं जैसे योगीजन काम, क्रोध, लोभ और मोह को छोड दिया करते हैं। बॉल को अपने पास से ऐसे निकल जाने देते हैं और उससे जरा छेड़खानी इसी तरह नहीं करते, जैसे कि सन्तजन किसी अधनग्न आधुनिका के पास से गुजर जाने पर भी उसकी ओर पलक उठाकर नहीं देखते।

उपमाएं बढ़िया दे रहे हो, चकाचक जी !

लेकिन आधुनिक कविता के आलोचकों की तरह तुम पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड रहा।

प्रभाव तो तब पड़े जीजा जी जब हम अपने खिलाड़ियों से भली भांति परिचित न हों। महाशयजी, हमारी टीम पाकिस्तान में क्रिकेट खेलने और जीतने नहीं गई। वह तो भत्ता ऐंठन, पुरस्कार पाने, सैर-

मपाटे करने और आवभगत का आनन्द लूटने गई है। पाकिस्तान में जैसी उनकी आवभगत हुई है, उसे देखते हुए हमारे खिलाड़ियो के लिए क्या यह उचित था कि उनके घर मे जाकर उन्ही को शिकस्त देते। अजी, 'मुह खाता है और आखें झुकती हैं' जिसका खाना पडता है, उसका बजाना भी पडता है, चकाचक जी ! वह पाकिस्तानियो को हराने नही गए है। यह काम तो उन्होने भारतीय सैनिको के ऊपर छोड दिया है। वे पाकिस्तानियो का हौसला बढाने के लिए गए है। और कही नही सही, क्रिकेट के खेल मे ही जीत का जश्न मना लें।

अच्छा, यह बात है !

और क्या बात होती। नही तो हमारे खिलाडी इतने गए गुजरे नही है कि पाकिस्तानी बौलरा को निरन्तर सम्मानित करते रहे।

यह बात है ! तो फिर होजाए।

चाय-नाश्ता न ?

जी, नही। गेद बल्ची पर एक रसिया—

बारो सो कन्हैया,
कालो वह पै खेलन आयौ री !
मेरो बारो सो कन्हैया,
काहे की पट-गेंद बनाई
काहे को बल्ला लायौ री !
मेरो बारो सो कन्हैया
रेशम की पट गेंद बनाई,
चन्दन बल्ला लायौ री !
मेरो बारो सो कन्हैया
मारो टोल गद गई दह मे,
बु तौ गद के सगई धायौ री !
'मेरो बारो सो कन्हैया

क्या समझे प्यारेलाल ! हमारे कुवर कन्हैया क्रिकेट के बडे अच्छे खिलाडी थे, स्ट्रोक जमाया और गेंद के साथ ही रन लेने को दौड पडते थे।

—2 फरवरी, 83

4



उफ ठेगा सिंह

इनसे मिलिए।

आपका शुभ नाम ?

जी, मुझे ठगा सिंह कहते हैं।

कहिए, हम आपकी क्या सेवा कर सकते है ? प्यारेलालजी, इन्होने किसलिए कष्ट किया है ?

गुरुजी, ये सज्जन भारत सरकार के सिविल सप्लाई विभाग मे यू०डी०सी० यानी अपर डिवीजन क्लर्क है। जब हमने इनसे कहा कि बच्चा अब आए चक्कर म ! इन्दिराजी अब तुम लोगो की हुलिया टेंट कर देगी ! तो ऐसे हसे कि जैसे किसी का कब्ज टूट पडा हो। बोले—तुमसे क्या, चलो तुम्हारे चकाचक जी से ही बात कर लेगे। तो यह लो भई ठगा सिंह, तुम्हे क्या कहना है ?

तो सुनकर प्यारेलाल जी की बात, बाबू ठेगा सिंह सिगरेट सिलगाय ऐनक को तनक ऊची बठाय, किंचित मुस्काय या प्रकार बोलते भए—

हम पर ऐसे फरमानो, बयानो और कार्रवाई करने के थोथे अरमानो का कोई असर नही होता। हम परमानेन्ट है, जबकि मत्री हो या प्रधानमन्त्री सब टेम्परेरी होते है। अभी तीन साल बाद वोट नहीं मिलेगा तो इन सबकी छुट्टी हो जाएगी। अभी हमारा उमर थर्टी का है पूरे अट्ठाईस वष हम इण्डिया का राज करेगा। हा, हा बोला न, राज करेगा। राज इन्दिरा गाधी नही करता, उनका कोई मिनिस्टर भी नहीं करता। सेक्रेटरी स लेकर बडा बाबू भी नही करता। राज हम छोटा बाबू करता है यानी यू०डी०सी० क्लक उफ ठगा सिंह करता है जो कागज नीचे स चला देता है, उसे ऊपर तक कोई नही रोक सकता। अगर रोकेगा, तो कागज फिर हमारे पास आएगा। फिर हम जैसा चाहेगा कागज को घुमाएगा। बड बाबू से लेकर मत्री

तब को क्या मालूम कि सरकार चलाने के कायदे क्या है ? नोट कैसे लिखे जाते है ? टिप्पणिया कैसे की जाती हैं ? आर्डर कैसे निकालते है ? यह तो हम जानते हैं। तबादला होता रहता है, मि॰ चकाचक ! हमको छोडकर बाकी सबका डिसमिसल सस्पैन्ड और चाजशीट हुआ करता है। अरे, हमी सब तो उस साला का कागज तैयार करता है। हम सरकार की दाई है। हमारे ऊपर न कोई मन्त्री भाई है और न इदिरा माई है।

प्यारेलाल ने उनकी ताज एक्सप्रेस की जजीर खीची—मि॰ ठेंगा सिंह अब श्रीमती गाधी सख्त होगई है। वैसे ही जसे इमरजैन्सी मे हुई थी। तुम लोगो को अब वसे ही सीधा कर देगी जैसे 76 मे किया था। कान-पूछ हिलाना बन्द कर दो। टाइम से आना और टाइम से जाना शुरू कर दो। दफ्तर मे ट्राजिस्टर बजाना बन्द कर दो। आउट साइडरो को बुलाना, हसकर उनसे हाथ मिलाना और जेबे गरमाना बन्द कर दो। अब फाइल नही दबा सकोगे, बाबू ठेंगा सिंह ! सभल कर रहना, नही तो स्वच्छता अभियान मे जनाब की सफाई हो जाएगी।

ठेंगा सिंह ने फिर ठहाका लगाया, बोले—हम बाबा साहब भोसले नही हैं कि जरा-सी आखे दिखाने पर चुपके से रेजिगनेशन दे दे। बडे साहबो को घुडकिया पर हमे ठेंगा दिखाना आता है। ऐसा नोट भरेंगे कि साला साहब लोटपोट हो जाएगा। सिगनेचर के लिए एक साथ सौ कागज ले जाएगे और जब साहब का हाथ दद करने लगेगा तो ऐसे कागज पर दस्तखत करा लेगे कि हजूर की तबियत खजर हो जाएगी। कागज के ऊपर जाते ही, मिया की सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाएगी और हमे डाट-फटकार की घुट्टी पिलाने मे पहले ही उनकी छुट्टी के कागज आ जाएगे। मि॰ चकाचक जी, अपने प्यारेलाल जी को होश की गोली खिलाइए। अरे ! बडा बाबू हमारे माफत नोट घीसता है। बडे बाबू के माफत डिपाटमेट का बास रकम एठना मागता है। डिपाटमेट के काम की साठ-गाठ मिनिस्टर साहब से होती है। जिसको आप लोग भ्रष्टाचार बोलते है, उस स्वच्छाचार की धुरी हम जसे ठगा सिंह ही ह। प्राइम-मिनिस्टर का चिट्ठी ऊपर से चलता-चलता हमारे यहा फाइल हो जाएगा। उस चिट्ठी को पढकर मत्री बडबडाएगा। सैक्रेटरी सकपकाएगा। बास सोचेगा। बडा बाबू सिर के बाल नोचेगा। पर हम, साला उसे देखकर हसेगा और मन ही-

मन कहेगा—ऐसी चिट्ठी न जाने कितना आता है। लेकिन यह तो सरकारी झगडा है, ऐसे ही चू-चरर मरर, चू-चरर-मरर चलता रहेगा। ऐ मि० प्यारेलाल बिजलिया हमेशा पहाडो की ऊची चोटिया पर ही गिरा करती ह। अगर सख्त कारवाई हुई भी तो उसकी चपेट मे आएगे चन्द बडे लोग। यहा तो ऐसी ही छनती रही थी और ऐसी ही छनती रहगी। बस, इतना फर्क पडेगा कि हम कुछ दिनो तक मेजो पर टाग नही फैला पाएगे। फाइलो का ढेर अपनी मेज पर लगाएगे। अब जब बडे बाबुओ की बीविया उन्हे धमकाएगी और ऊपर की आमदनी के लिए चिमटा, बेलन उठाएगी और बाबू का बस न चलते देखकर, हमे चाय पर अपने घर बुलाएगी, तो हम बोलेगा—लोकतन्त्र है। लोकमत तैयार करो। यह सरकार निकम्मी है, यह प्रचार करो। अगले चुनावो के लिए भूमिका तैयार करो। चकाचक जी, हम पब्लिक म रहता है और दावे से कहता है, अगर हमको परेशान किया गया तो हम सरकार को भी ठिकाने लगा सकता है। हमारे बिना न सरकार चल सकता है, न लोकतन्त्र। हमने ठीक बोला न?

ठगासिह हमारा मुह देखने लगे और प्यारेलाल ठगा सिह का। हमने कहा—साप के दात मे जो रहता है, बिच्छू की पूछ म जो बसता है और जो मक्खी के सिर मे विद्यमान है वही भारत सरकार के इन दामादो की कलम की नोक मे छुपा है। सावधान!

—4 फरवरी, 1983

□



काला धन काले नाग

आओ, वाबू प्यारेलाल ! आज तो बडी देर से आए।

कल जरा दिल्ली चला गया था।

क्यो कैसे ? खरियत तो है ?

अजी, पश्चिमी जमनी से फैक्टरी के लिए एक मशीन मगवानी थी, उसी सिलसिले मे जाना पड गया।

क्या हालचाल है, हमारी दिल्ली के ?

इधर चुनाव परिणामो की बेचैनी से प्रतीक्षा की जारही है और दूसरी ओर सरकारी कार्यालयो म कामकाज ठप्प पडा है।

क्यों ? इन्दिराजी के निर्देशो के बाद तो कामकाज मे तेजी आनी चाहिए।

आनी तो चाहिए, लेकिन तेजी लाने वाले सुस्त पडे है। ऊपर से लेकर नीचे तक अनिश्चितता का वातावरण व्याप्त है। मत्री लोग अभी तक निश्चित नही है कि वे इस पद पर बने रहगे या वे भी बदल दिए जाएगे। यही हाल सचिवो का है। वे यह अनुमान लगा रहे है कि किस मत्री के साथ उन्हे काम करना पडेगा और किस मत्री की अभी और छुट्टी होने वाली है। इन्दिराजी ने तो निर्देश दिए हैं, उसकी वजह से सभी परेशान है।

किसी महत्त्वपूण सचिव से तुम्हारी बात हुई प्यारेलाल ?

जी हा, अपने काम के सिलसिले मे कई लोगो से मिलना हुआ। उन्होंने जो बाते बताई तो सुनकर हम दग रह गए।

जरा हम भी बता दो, प्यारे !

बता तो द, आपके पेट मे तो बात पचती नही, फौरन ही उसे अखबार मे उडा देते हो। इससे खबर देने वाले सकट म पड जाते है।

अच्छा। तुम खबर बताओ, लोगो के नाम मत बताओ।

वताया हमे यह गया चकाचकजी कि सरकार हमसे एक काम कराले। चाहे काम मे ऐफीशियेसी या पार्टी के लिए सुविधा और साधन। मुश्किल यह है कि सरकार दोनो काम चाहती है, लेकिन काम और दाम दोनो साथ-साथ नही चल सक्ते। दाम वही देता है, जिसका गलत काम कर दिया जाए। अगर निष्पक्षता से काम किया जाए तो छदाम नही मिल सकता।

यह वात तो सही हे, प्यारे वावू!

तो यह भी सही है, चकाचकजी, दिल्ली के इन चुनावो मे सभी दलो के प्रचार कार्यो पर एक मोटे अनुमान द्वारा लगभग 25 करोड रुपया खच हुआ है। यह रुपया कोई कम्पनी या साहूकार ने अपने एक नम्वर के खाते से अपने चहेते दल को नही दिए है। निश्चय ही यह दो नम्वर की रकम है और काले घन की कमाई से प्राप्त हुई ह। अव वताइए क्या ऐसे दाताओ के विरुद्ध हम कोई कारवाही कर सकते है? यह तो दिल्ली चुनाव की एक छोटी-सी वात है। राज्यो के चुनावो के लिए तो अरवो रुपए चाहिए। उसके लिए दाताओ को और वसूलकर्त्ताओ को सरक्षण चाहिए। अगर हम उनके विरुद्ध कारवाई करते है तो हमे तवादलो, पदावनतियो और घर बैठ जाने का तैयार रहना चाहिए। अव वताइए कि हम अपनी नौकरी वचाए या देश को भ्रष्टाचार से वचाए? मत्रियो के प्रति वफादारी दिखाए या देश के प्रति? देश की सेवा से कितने लोगा को कोठी, कार, फर्नीचर और फायदे तथा वेकायदे की आमदनी मिल पाती है? उन्हे तो आसू पोछने के लिए थोडी-वहुत चना चवाने लायक पेशन मिल जाती है।

भई, वडा वेलौस आदमी था, जिसने तुमसे यह साफ-साफ वाते कही।

जी हा, चकाचकजी! आदमी समझते सब कुछ ह। भले-वुरे की पहचान भी वडे अफसरो को अच्छी तरह से है। वे ईमानदार रहना भी चाहते ह, लेकिन कोई उन्हे रहने दे, तव न। आप जानते है कि इन राजनीतिक दलो के खर्चे करोडो रुपए महीने के हैं। लेकिन सदस्यता से कितना प्राप्त होता है? वह तो तव प्राप्त हो, जब पार्टियो के सगठनात्मक चुनाव हो या वे अपने दल के लिए सच्चे दानदाताओ से शुद्ध कौडी वसूल करे। उमका विधिवत् हिसाव रखा जाए। वह आडिट हो। अभी तो नीचे से ऊपर तक पोल चल रही है। पोल खाता खुला हुआ है कि चाहे जहा से लाओ और जमा कराते जाओ। चुनाव

जीतना चाहिए, चाहे जो खर्च कर दो। बस, इसी पोल की खोल मे सारे राजनीतिक सगठन घुसे हुए है। सब नोट खीचते है और सब दूध के धुले बन रहे है। अपने अलावा सबको बेईमान बताते है। लेकिन ईमानदारी राजनीतिक दलो से वैसे ही गायब है जैसे गदहो के सिर पर से सीग। जब दल स्वच्छ नही हैं तो देश कैसे स्वच्छ होगा ? देश स्वच्छ नही है तो सरकार कैसे स्वच्छ होगी ? अब तो स्थिति यह है कि काला धन, काले कारनामे और गोरे भेडियो की जगह लहराते ओर फुनकारते काले नाग !

—7 फरवरी, 83



6



कढी मढी ते कौन मूड मारै

रामप्यारी आज मूड मे थी। नहा-धोकर और गुलाबी साडी पहन कर जो गुसलखाने से निकली तो ऐसा लगा कि सर्दी के मौसम मे मानो पहली बार धूप खिली हो। बालो को झटका देकर जो हमारे पास आई तो ऐसा लगा कि आगरे मे मेनका आगई हो। हमारी बगल मे बैठते ही तपाक से उन्होने ऐसे पूछा, जैसे अटलबिहारी वाजपेयी चौधरी चरण सिंह से पूछ रहे हो कि बोलो क्या इरादे है।

उल्लसित श्रीमतीजी पूछ रही थी कि बताओ आज क्या भोजन बनेगा ? भोजन की बात सुनते ही हम ऐसे परमानदित हुए कि जसे चन्द्रशेखर को कपूरी ठाकुर मिल गए हो। हमारा गद्य तिरोहित हो गया और फूट पडी कविता—

भोजन मे भात होय, घी से मुलाकात होय,
बडी बूरी साथ होय, दार अरहर की।
हरी कछू साग होय, चटनी की लाग होय
फूले-फूले फुलका, परोस जाय घर की॥
'व्यास' कवि कहे, रबडी जो मिल जाय कहू
फेरि हमे चाहना न, विधि हरि, हरि की।
योजना बनाओ तो, बनाओ जामे खीर घुट,
पूरी कौन खाय ? बात मालपुआ तर की।

प्यारेलाल की बहन मुस्करा उठी, ठीक वैसे जैसे विदेशी महिमानो का स्वागत करते हुए श्रीमती इदिरा गाधी मुस्करा देती हैं। कहने लगी—बडी जीभ लहरके ले रही है, मैं तो आज कढी बनाने की सोच रही हू।

सुनकर रामप्यारी की बात हम आसमान से ऐसे जमीन पर आ गए मानो राजनारायण ने बहुगुणा से कह दिया हो—पार्टी डिसमिस। हमने कहा—डियर प्यारी, कढी भी खाने की चीज है !

जैसे सिंह घास नहीं खाता, जैसे मगर पानी नहीं पीता, वैसे ही यह जो तुम्हारे गोपाल लाल यानी चवाचकजी हैं न, कढ़ी नहीं आरोगते।

पत्नी ने बीच में ही बात काटी और महाकवि सूरदास का पद गुनगुनाने लगीं—"कढ़ी गुपाल दूसर मागी।"

हमने फौरन प्रतिवाद किया—प्यारी जू! सूरदास को पद गाने की तमीज भले ही हो, वात्सल्य रस के वह अनूठे गायक रहे हों। लेकिन रसना-रस से वह बिल्कुल अनभिज्ञ थे। सुनो, तुम्हारे भाई प्यारेलाल ने एक दिन तुम्हारी भाभी गुलकन्दी से कढ़ी बनाने को कहा था। तो जानती हो हमारी सलोनी सलहज ने क्या उत्तर दिया था? उन्होंने अपनी पति को यह कहावत कह सुनाई।

कढ़ी मढ़ी ते कौन मूड मार, याते दार भली ऐ।
घरे खसम से कौन पिटमो, जाते राड भली ऐ॥

—12 फरवरी, 83

□

7



कहा चले प्यारेलाल ?

ऊपर से नीचे तक आज तो बडे टिप-टॉप नजर आरहे हो ! य टखनो-टखनो धोती ! क्या कहने हैं पशमीने की शेरवानी के ! वल्लाह क्या कहने है इस ऊनी सफेद शाल और गाधी टोपी के ! हुजूर कहा जाने की तैयारी मे है ?

कुछ यू ही। एक जलसे मे शिरकत करने।

जलसे मे ! और ये टीका-बीका लगाकर। क्या जलसा विदेशी गौराग भक्तो का है ?

जी, नही। शुद्ध स्वदेशी और एक दम पसनल है।

जलसा और पसनल ? बात समझ मे नही आई, प्यारेलाल।

तो प्रेम से समझ लो कि आज हमारा जन्म-दिवस है। यह हुआ पसनल मामला। क्योकि मित्र लोग हमारी बथ-डे को धूमधाम से सेलीब्रेट कर रहे है तो यह होगया जलसा। आप तो जानते ही है कि अगर कही कोई हमे प्रेम से याद करे और सादर बुलाए, वहा समय से दस मिनट पहले पहुच जाना हमारी कमजोरी है। अब क्योकि यह जलसा हम ही को लेकर हो रहा है, इसलिए वहा हम आधा घटा पहले पहुच रहे है।

इतनी जल्दी जाकर क्या वहा दरिया बिछाओगे या कुर्सिया लगवाओगे ?

जी इसके लिए तो आप जैसे मुफ्तखोर रिश्तेदार हरदम तैयार रहते हैं। हम तो पहले से वहा इसलिए जारहे है कि आयोजको से जलसे की तफसील अच्छी तरह जान ले और मौके पर जरूरत हो तो उसमे तरमीम भी करवा दे।

मसलन ?

मसलन यह कि हमारे गले मे जो हार पडना है, वह इतना छोटा तो नहीं है कि हमारी टोपी उलझ जाए। जो शाल हमे इस अवसर पर उढाया जाने वाला है, वह फेरी या पटरी वालो से तो नही मगवा

लिया गया है। हमारी तारीफ मे जो लोग आज बोलने वाले है, उनमे कोई दुष्टग्रह तो नही है।

अगर हो तो क्या करोगे ?

पहले हम सयोजक को झिडकेंगे। फिर जेब मे मनीबेग निकालेंगे। फिर आप जैसे किसी विश्वस्त साथी से कहेंगे कि जाओ ले आओ जरी गोटे का एक लम्बा-सा हार और लाला भिखीमल की दुकान से एक उम्दा-सा शाल। जो हमारी शेरवानी को कन्ट्रास्ट करता हो और फोटो मे मजा देने वाला हो। अब रह गए दुष्टग्रह।

जानते हो वह कौन होते हैं ? वे होते है, रग मे भग डालने वाले। शाल म लपेट कर जूतिया मारने वाले। चुटकिया और चटखारे लेने वाले। इनके नाम पर हम स्याही फेर देंगे। जलसे मे सिर्फ उसी को बोलने देंगे जो सुपरलेटिव डिग्री मे विविध विशेषणो से युक्त सिर्फ हमारी तारीफ के ही पुल बाध सके। हमम जो गुण नही है, उन्ह भी वह हममे बता सके। हमारे पैर छूता हुआ वह माइक पर आए और जिन्दाबाद कहता हुआ जाए।

प्यारेलाल, हम इस जलसे मे नही ले चलोगे ? हमारे सागारजग होकर भी अभी तक तुमने इसका जिक्र भी नही किया !

जी, नही। रिश्तेदारी एक अलग चीज है और पोलिटिक्स एक-दूसरी वस्तु। तुम मजमा उखाड आदमी हो, बीच-बीच मे ही सुर्री पटाखे छोडने लगो—तो सब गुड-गोबर हो जाएगा। मुझे ऐसे अवसरो पर हूटर नही, सहृदय और श्रद्धालु श्रोताओ की आवश्यकता है। उसकी पात्रता श्रीमान मे नही। हा, इस अवसर पर जो मिठाई, नमकीन का प्रबन्ध है, वह बिना कहे आपके पास पहुच जाएगी।

अच्छा, जल-पान भी है! उसके लिए कौन-सा भूजी पछाडा है ?

चकाचक जी! हम तो अपने खेल अपने ऊपर ही खेलते हैं। आयोजनकर्ताओ से कह दिया है कि खर्च की चिन्ता न करो, जल-पान चकाचक होना चाहिए। आप तो जानते ही हैं कि ऐसे आयोजनो मे लोग जल-पान के लालच से ही आते हैं। नही तो हम कितने वर्ष के होगए तथा कितने वर्ष और दुश्मनो की छाती पर दाल दलेंगे, इसकी चिन्ता किसको है।

भई प्यारेलाल, मान गए तुम्हे। कोई अभिनन्दन या अभिनन्दन भी पढा जाएगा क्या ?

जी, उसके बिना क्या कोई जन्म-दिन सफल होता है ?

अजी, 'आप काज सो महाकाज।' दूसरा कोई हमारे बारे में हमसे ज्यादा थोड़े ही जानता है। यह शुभकार्य हर वर्ष हमी करते हैं।

बहुत ठीक करते हो, प्यारे भाई। बिना अपने मरे स्वर्ग नहीं दिखाई देता। 'चैरिटी बिगिन्स एट होम।' यदि खुद अपनी तारीफ नहीं करोगे, तो लोग क्यों करने लगे।

ठीक है। देर हो रही है। १५ मिनट का रास्ता है, १५ मिनट का मार्जिन हम और रखते है। आध घण्टा पहले पहुंचना है। हम चले।

चले तो भले। लेकिन कृपा करके एक बात और बताते जाओ कि इस आयोजन के पीछे असली राज क्या है? खर्चा यानी इनवेस्ट-मेंट, किस उद्देश्य के लिए कर रहे हो?

किसी से कहोगे तो नहीं?

अजी, राम भजो।

तो सुनिए, चकाचक जी! घर में खाने पीने को राम ने सब कुछ दिया है। आपकी कृपा से जान-पहचान का दायरा भी कम नहीं है। अब तो बस एक ही तमन्ना है कि जनता और जिम्मेदार नेता हमारे महत्त्व को समझें। हम कब तक यू ही पड़े रहेंगे?

अरे, लखनऊ भेजो, दिल्ली भेजो और कुछ नहीं तो विदेश की सैर ही करा दो। इस बार तो वक्त निकल गया, अगली छब्बीस जनवरी पर पद्म विभूषण या पद्मभूषण न सही तो पद्मश्री ही हो जाए। आखिर हमने यह जो जीवन धारण किया है, वह देश सेवा के लिए ही तो है, जीवन भर सेवा कर चुके, अब उसका पुरस्कार भी तो मिलना चाहिए।

—13 फरवरी, 83

☐

8



ओम ह्री क्ली फट् स्वाहा

चकाचक जी ! आज आप कुछ परेशान नजर आते है ?

हा है, तुम क्या कर लोगे ?

वन सकेगा तो कुछ उपाय करेंगे। नही तो दगा-पीडित क्षेत्रो मे जाने वाले नेताओ की तरह सहानुभूति तो प्रकट कर ही सकते है।

प्यारेलाल ! तुम कुछ नही कर सकते। समस्या का कोई हल आपके पास नही है। आप आदमी से लड सकते है, लेकिन भूतो से जूझना आपके वश की वात नही।

भूत ? कैसे भूत ? आपको भी भूत लगने लग गए क्या ?

हा प्यारे, इन भूतो ने आजकल हमे वहुत परेशान कर रखा है।

तो किसी झाड-फूक वाले सयाने को वुलवाया जाए ? मिर्चों की धूनी दी जाए ? उतारा करके चौराहे पर दिया जलाया जाए ? किसी खेत की मेड के नीचे हाडी मे वद करके भूत का गढन्त किया जाए ?

नही भाई, इन भूतो पर इन उपायो का कोई असर नही होता। ये वडे विकराल है।

क्या ये भूत राजनीति के है ? दक्षिणपथी हैं या वामपथी ? हिन्दू भूत है या मुसलमान जिन्न ? क्वारे भरुआ है या बूढे वावा ? मौला-दौला है या कलेजी वाले ?

नही, ये सव नही। जो भूत हमे लगे है, वे इन सवसे भी विकट हैं।

तव तो प० कमलापति त्रिपाठीजी ने इन्हे काशी विश्वनाथ के के दरवाजे से भेजा होगा ?

नही !

फिर तो यह निश्चय ही औघडनाथ नेताजी राजनारायण ने तुम्हारे पीछे लगा दिए है। पिछले दिनो तुमने उनके सम्वन्ध मे कुछ लिख मारा था न ?

नहीं प्यारेलाल, इन भूतों का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं।

तो क्या यह मन पर छूट हुए शनि हैं ?

नहीं।

तो क्या दारू पिए हुए पत्रकार हैं ?

नहीं।

तब तो अवश्य ही ये दिल्ली में हारे हुए उम्मीदवार होंगे ?

यह भी नहीं।

यह भी नहीं यह भी नहीं, तब फिर कौन हैं ?

भैया मेरे, ये प्रेस में भूत हैं। जिनके पीछे लग जाते हैं, उसकी खैर नहीं। यह चाहे जिसकी खबर छाप दें और चाहें जिसकी गोल कर दें—कोई इनका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। मगीलाल को भगीलाल बनाना इनका बाएं हाथ का खेल है। यहो गोपाल को भोपाल छाप दे। प्रमाद को प्रमाद सिद्ध कर दें और व्यास को क्यास बना डाले। हम कुछ नहीं कर सकते। हम कह-कह करके थक गए कि भई 'चचाचच' के साथ तो छेड़खानी मत किया करो, लेकिन कम्पोजीटर से लेकर प्रूफरीडर तक ऐसे भूखे हैं कि लाइन की लाइन खा जाते है। हमारी छोड़ो, सम्पादक को भी नहीं बख्शते। वित्तमंत्री का बयान मुख्यमंत्री के मुह मे डाल देते है और मुख्यमंत्री को अमुख्य-मंत्री कर डालते हैं। सम्पादक ने स्वस्थ पत्रकारिता की वकालत की और इन्होने 'अ' स्वस्थ छाप दिया। वहां तो खीस निपोर दिए। डाटा तो चुप होगए। अब बताओ क्या करें ?

चचाचचजी ! आपने संस्कृत का श्लोक सुना है कि "मृदंग मुख लेपन करोति मधुर-ध्वनि"।

क्या मतलब ?

मतलब यही कि डाटो मत इन्हें। कुछ मीठा-मीठा दो और कहो कि लो इसे खाओ और उंगलियों को चाटो। कुछ खिलाओगे पिलाओगे तो प्रेम के भूत वश में आ जाएंगे। इनका उतारा यही है।

तो ले आओ पांच आने के बतासे और बांट दो इनमें।

चचाचचजी ! कुछ दाल आटे का भाव भी मालूम है, ५ आने में आजकल १० बतासे आते हैं। इनके लिए मंगाओ लड्डू ! गोल गोल,

पीले-पीले, दल-बदलू नेताओ की तरह इधर मे उधर लुढकने वाले। पहले इनका मुख भरो और फिर प्रार्थना करो कि हे ! कम्पोजीटरो, हे देवताओ, गुरु वृहस्पति यानी "जुपीटरो" कृपा करो। नाराजी रफा-दफा करो। हे प्रूफरीडरो ! हे नाइट ड्यूटी करने वाले निशाचरो और दिन के लीडरो ! जरा आख खोलकर काम करो। पत्रकारिता को मत बदनाम करो।

अगर इस पर भी न मानें तो ?

तो फिर हाथ मे एक जोडा लौंग का लेकर तीन बार इस मन्त्र का उच्चारण करो और इन नए भूतो को पार करो—

ॐ ह्रीं क्लीं फट् स्वाहा

—15 फरवरी, 84



9

'च' का चक्कर

कहिए, चकाचकजी कहा से आ रहे हैं ? बड़ी फूलों की मालाएं लटकाए हुए हैं, गर्दन में ! यह रोली-चावल का तिलक किसने लगा दिया, आपके माथे पर ? बड़े दिव्य नजर आ रहे हो पण्डितजी ! कहीं आज चकाचकी थी क्या ?

बिना चकाचकी के तो चाचकजी कहीं सरकते ही नहीं। इस समय हम एक धार्मिक अनुष्ठान में प्रवचन करके लौट रहे हैं।

हां, पिछले कुछ वर्षों से देश में कथा-कीर्तनों, शंकराचार्यों के भाषणों और योगियों के प्रवचनों की धूम मची हुई है। बड़े-बड़े पढ़े लिखे, सेठ-साहूकार और ऊंचे अफसर अपने पापों को धोने के लिए इनमें उपस्थित होते हैं। महिलाओं का तो कहना ही क्या है। धर्म आज भारतीय नारी के कंधों पर ही टिका हुआ है। आज आप जहां गए वहां भी बड़ी भीड़ होगी ?

अजी, भीड़ चकाचक की सभाओं में कहां होती है। वह तो मेनका की सभा में होती है या फूलन के समर्पण में। कोई फिल्मी हीरो-हीरोइन आ जाए तो उसके दर्शन करने के लिए लोग चारों ओर मक्खियों की तरह भिनभिनाने लगते हैं। हमारी सभा में तो बूढ़ी ठेढी महिलाएं थीं। उनके पोती पोते थे या वे आयोजक थे, जो माइक्रोफोन पर जनता को बार-बार बुला रहे थे। लेकिन जनता ध्यानावस्थित योगियों की तरह अपने-अपने मकानों, दुकानों और संस्थानों पर दृढ़ता से आसन लगाए बैठी हुई थी। लेकिन प्यारेलाल हम भीड़ में कभी नहीं जाते। भीड़ में जाय वो भाड़ में जाय। जैसे मुर्दे को उठाने के लिए चार आदमी काफी होते हैं। वैसे ही चकाचकजी की सभा में चार जने ही पर्याप्त हैं। इन चारों की बड़ी महिमा है।

भगवान विष्णु के चार हाथ हैं। ब्रह्मा के चार मुख हैं। उनके मुख से निकले हुए वेद भी चार हैं। आप जैसे लोगों को झख मारने के लिए चार दिशाएं हैं। पहले राजाओं के पास चतुरंगिनी सेनाएं हुआ

करती थी। पहले कवि लोग 'चोखे चौपदे' लिखा करते थे। कविता और सवैयो में भी चार पंक्तियां हुआ करती थी। मनु महाराज ने मनुष्य समाज को चार वर्णों में विभक्त किया था। भरत के नाट्य-शास्त्र में पद्मिनी, चित्रिनी, शंखिनी और हस्तिनी—चार प्रकार की नारियां बताई गई हैं। बताओ तुम्हारी गुलकंदी इनमें से कौनसी है ?

पदार्थ भी चार ही थे—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। आदि शंकराचार्य ने देश में धर्म की स्थापना के लिए चार धामों की स्थापना की थी। अगर चार आदमी किसी काम में लग जाएं तो वह अवश्य ही पूरा होता है, क्योंकि कहने वाले कह गए हैं—

चार जने, चारहू दिशा ते, चारों कोन गहि,
मेरु कों पकरि क, उखार तो उखारि जाय।

बस बस ! अपने इस चकार-पुराण को बन्द कीजिए।

डीयर प्यारे, चकार की बड़ी महिमा है। हमने गीता में गिने हैं, उसमें चार-सौ छप्पन बार 'च' का प्रयोग हुआ है। 'च' से ही तुम्हारे चमचे, चिलम भरने वाले, चुगद धरा-धाम पर अवतीर्ण हुए हैं।

और आप जैसे चकल्लसी और चकाचक भी।

जी, हां ! 'च' के प्रताप से ही लाला तुम चांदी चीर रहे हो और च्यवनप्राश खा-खाकर बुढ़ापे में भी गबरू बने हुए हो। अगर वर्ण-माला में 'च' अक्षर नहीं होता तो 'चीन' को कौन पूछता ? दुनिया के नक्शे पर चेकोस्लोवाकिया का अस्तित्व संभव था ? चीन के च्यांग काई शेक से लेकर जनता पार्टी के अध्यक्ष चंद्रशेखर तक सर्वत्र 'च' का ही चमत्कार छाया हुआ है। आपको पता है कि चौ० चरणसिंह चार दिनों के लिए भारत के प्रधानमंत्री कैसे बन गए ? अरे, वह 'च' की ही महिमा है। 'च' से चाकी चलती है, चूल्हा जलता है, चिमटा बजता है, चूर्न चलता है और खाई है, तुमने कभी चमचम ? यह रसगुल्ले की भौजाई है। रामप्यारी ने आज ही ताजी-ताजी सेठ गली से मंगवाई है। जाओ चखो और हमेशा चकाचक का ध्यान रखो।

—17 फरवरी, 83

10



दिल्ली बढी चली आय रही है, गुरु !

सकाचक जी, नमस्ते ।

नमस्ते तो नमस्ते ही सही ।

उखड क्या रहे हो ? आज हम आपके लिए बडी-बडी खबर लाए है ।

खबर ही तो लाए हो, काई भाग के लड्डू तो नही लाए ।

भाग के भी लडडू हुआ करते हैं क्या ?

लड्डू भी बर्फी भी, समोसे भी कचौडी भी, पकौडी भी और पापड भी । भाग के नाना प्रकार है, प्यारेलाल ! खाओगे ?

नही-नही, हम तो माफ ही कीजिए ।

भई इदिराजी की तरह हमने भी माफ करना नही सीखा । चाहे प्यारेलाल हो या घमडीलाल । जो हमारे सामने पडता है उसे कोटा-बूदी से मगाया हुआ भाग का गुलकद खिलाकर साफ कर देत है । साफ कर देते है का मतलब है तबियत साफ कर देते है । तुम्ह भाग का एक अचूक फायदा मालूम है ।

क्या ?

कि कहने वाले कह गए है और हमने आजमाकर देखा है कि "भाग खाये क्या नफा ? इधर पीओ उधर सफा ।" यानी पेट का पाकिस्तान पीते ही साफ हो जाता है और तबियत एकदम हल्की यानी गाडन गाडन हो जाती है । चित्त और पित्त आनदित हो जाता है ।

ऐसे आनद को आप अपन पास रखिए ।

अपने पास तो हम सिफ अकल रखते है प्यारेबाबू ! बाकी तो बीरबल की तरह तुम्हारे जसे अक्बरा को बाट दते है । जानते हो, एक बार क्या हुआ ? अक्बर ने बीरबल स पूछा—बीरबल सबसे बडा आनद किस चीज स मिलता है ? तो बीरबल न निहायत गभीर

होकर वताया कि हुजूर जीवन मे सबसे वडे आनन्द की अनुभूति तब होती है, जब खुलकर पेट साफ हो जाया करता है। प्यारेलाल, यह जो भाग-भवानी है न, यह गगा के समान पापो का ही सफाया नही करती, मन को परिष्कृत करके चित्त को भी निमल बना दिया करती है। इसीलिए महात्मा लोग कहते है—

भोजन हो तब रोचक हो,
जब घोय धरी शिव के मनमानी।
मिश्र मसालों मिलाय दियौ,
फिर घाट करी बाकी रस यानी।
स्वाफी सुलफत राय बनी जब,
ब्रह्म-कमण्डल के जल छानी।
गग से ऊची तरग उठ,
जब अग मे आवत भग भवानी।

आगई क्या ? अगर आगई हो तो हम चले।

'चले बुरे की पेट राड की चरखा'। तुम तो प्यारेलाल वैठे ही रहो। लो ये बनारस से भाग की रसगुल्ली आई हैं, डालो एक-दो घट मे।

नही-नही।

तो ये सम्भलपुर का विजयानदी पेडा है, पाओ प्रेम से। क्या कहा यह भी नही चलेगा। तो यह लो माजूम चखो। फागुन के महीने मे इसे हम घर मे ही सिद्ध करते हैं। यह भी नही ! रवडी की कुल्फी खाओगे ? मलाई की बर्फ चलेगी ? यह भी हम भाग के सम्पुट से जमवाया करते है।

क्षमा कीजिए हम इन वाहियात चीजो का शौक नही।

क्या कहा, शिवजी की बूटी वाहियात है ? और बीयर, व्हिस्की और ठर्रा बडी अच्छी चीजे है। पियो और नाली मे पड रहो। अरे, भाग पीने वाला घाट मे पडा-पडा भी आकाश मे उडता है। गदी, भद्दी गालियो से नही, भगवान् के भजन से जुडता है।

और यह भी तो कहो कि आधुनिक सासाइटी के योग्य नही रहता। आगे की नही सोचता। पीछे की ओर लौटता है।

एकदम गलत। भाग पीने वाला हमेशा आगे की सोचता है, दूर की कौडी लाता है—एक बार मथुरा म चकाचक भाग छाने दो चौबे

आपस मे बात कर रहे थे। पहला बोला—दिल्ली मथुरा की तरफ वढी चली आय रही है, गुरु !

दूसरे ने पूछा—कहा तक आय गई है, भैया ?

पहले ने बताया—फरीदाबाद, बल्लभगढ होती भई पलवल ते चलकर कोसो तक पहुच गई है ।

इस पर पहले ने पूछा—जे बताओ भूतेश्वर पै कब तक आय जायगी ?

सुनकर दूसरे चौबेजी बोले—वस्स ! अब आई ही समझो।

सुनिके जा बात कू पहले चौबेजी मगन है गए, और कहने लगे—तब तो आनन्द आय जायगो ! अपन-तुपन निपट छान के रोज सझा कू कनाट प्लेस घूमिबे चलौ करिंगे।

—20 फरवरी, 83

□

11



रसो मे रस वतरस

चकाचक जी, रस कितने होते है ?

प्यारे भाई, उनकी कोई गिनती है—वेल का रस, गाजर का रस, सेब का रस, सतरे-मौसमी का रस, तुम्हारे लिए गन्ने का रस और हमारे लिए आमरस।

अजी, हम साहित्य के रसो के बारे मे पूछ रहे हैं। कोई कहता है कि उसमे नौ रस होते है, कुछ कहते है दस।

अरे हमे साहित्य के रसो से क्या लेना-देना ! हम तो व्यजनो मे प्रयुक्त होने वाले षट्-रस को जानते है—खट्टा, चरपरा, तीखा, कसैला और तुम्हारी तरह से कडवा और हमारी तरह मीठा।

चकाचकजी, हर समय भोजन-भट्ट जैसी बात मत किया करो। ये बताओ कि साहित्य मे आप शृगार रस को श्रेष्ठ मानते है या करुण रस को ?

प्यारेलाल, ये दोनो रस स्त्रियो के लिए हैं, हमारे जैसे पुरुषो के लिए नही। आचार्यों ने सधवाओ के लिए शृगार रस और विधवाओ के लिए करुण रस की उत्पत्ति मानी है। हम ठहरे सत्य-पुरुष। न किसी की पत्नी की ओर आखें उठाकर देखते हैं और न किसी विधवा पर डोरे डालते हैं। हमारे लिए यह दोनो ही प्रकार के रस निषिद्ध हैं।

तो आपके लिए सिद्ध-रस क्या है ?

उसका नाम है—रसराज हास्यरस। बच्चा भी हसता है और बच्ची भी। नौजवान भी हसता है और नवयुवती भी। बुड्ढा भी खीसे निपोरता और बुढिया भी पोपले मुह से अपने बुड्ढे से कहती है—चलो हटो आखो से दिखता नही, कानो से सुनाई पडता नही,

बाल सफेद होगए, कमर झुक गई, लेकिन मन मरा अब भी तुम्हारा यू-यू करे है। प्यारेलाल, कुछ दिनो बाद तुम्हारा यही हाल होने वाला है इसलिए जिन्दगी मे जितना हस-बोल लो, यही तुम्हारा है, नहीं तो बाद म कोई टके को भी नही पूछेगा।

तभी तो हास्यरस आज टकउआ हो रहा है और उसके लेखको को साहित्य म कोई टके के भाव नही पूछना।

पूछ तो जानवरो की होती है—घोडे की पूछ, गधे की पूछ, बदर की पूछ और कुत्ते की पूछ। हास्यरस के लेखको का तो सम्मान होना है। काका हर साल दस हजार रुपए देता है। चक्रलस ने बीस हजार रुपए के पुरस्कार की घोषणा की है। तुम चार चार सौ बीस रुपए रोजाना देने का ऐलान अखबार मे साया करा दो और जैसे कि हर पुरस्कार अपनो मे ही बाट लिए जाते हैं, रोज हमारे घर पर कवि-गोष्ठी करके हमे दे डाला करो। बडा रस रहेगा।

अजी, हम बात पुरस्कार की नहीं, रस की कर रहे हैं।

तो प्यारे, आगरे मे रस कहा? वह तो बनारस म है या हाथरस म।

यह तो वही बात हुई कि आप जैसे एक कवि ने नारी यानी नार पर काव्य लिखा और बैठ गया करने शब्दो की शल्यक्रिया—

झोडा अनार तो नार मिली, कचनार खिली तो नार खिली।
कश्मीर चिनार कतार खडी, दिल्ली मे कुतुब मिनार खडी।

है नार बनारस के उर मे वह नार नौल मे है आगे,
जबसे पीछे पड गई नार, फिरते सुनार भाग भागे!

वाह प्यारेलाल! खूब लाए, समय की! क्या आजकल हमारी मलहज गुलकन्दी देवी तुम्हारे पीछे पडी हुई है? या यह चौदह कैरेट वाला मामला है?

चकाचकजी, जो भी हो आप तो रस पर आ जाइए। कृपया बताइए कि आजकल सवश्रेष्ठ रस कौनसा ह?

नही मानोगे?

नही।

अजी, अटलबिहारी वाजपेयी की तरह मान भी जाओ।

जी, नहीं ।

देखो, अकालियो की तरह जिद पकडना अच्छी बात नही होती ।

भले ही न हो ।

देखो प्यारे ! हमने इंदिराजी की तरह बडे-बडे असन्तुष्ट सीधे कर दिए हैं। तुम क्या अतुले से भी बढ कर हो ? या आज वह फिल्मी रिकाड सुनकर आए हो—ना मानू, ना मानू ना मानू रे ।

जी ।

अच्छा तो सुनो—आजकल अन्तरग म तो वत-रस सबसे श्रेष्ठ है और बहिरग मे निन्दा-रस सर्वोपरि है। क्योकि वत-रस का आधार भी प्राय पर निंदा ही होता है, इसलिए आचाय चकाचक जी, प्रतिपादित करते है कि ससार मे निन्दा-रस के समान दूसरा कोई रस नहीं ।

इसकी व्याख्या ?

अभी चापलूसी का चूण खिलाना तब हम निश्चित होकर निन्दा-रस पर अपना प्रवचन करेंगे ।

—25 फरवरी 83

□

12



चना के लड्‌आ क्यों लायौ

प्यारेलाल, हाथ में क्या है ?

दाना।

दोने में क्या है ?

जलेबी।

ओह ! आज क्या बात है ? कहीं चुपके से कल जो तुम्हारी बहिन हमें सुना रही थी, वह रसिया तो नहीं सुन लिया ?

कौन सा रसिया ?

बात यह हुई प्यारेलाल कि हम कल मनकामेश्वर के दर्शन करने चले गए। एक दुकान पर ताजे बने देखे तो लौटते हुए तुम्हारी तरह एक दोने में बेसन के लड्डू लेते चले आए।

दोना दिया रामप्यारी के हाथ में। तुम तो जानते ही हो कि चना बड़ा उत्पाती होता है। इससे जो भी चीज बनती है वे बड़ी शाहना और उत्तेजक होती है। दोना हाथ में आते ही रामप्यारी को शरारत सूझी और वह मटक-मटक कर गाने लगी—

'चना के लड्‌आ क्यों लायौ,
मेरे पीहर में जलेबी रसदार"

क्या अजब संयोग है कि कल रामप्यारी ने रसिया गाया और आज उसका भैया पीहर से दोना भर कर जलेबी ले आया। हमने आवाज लगाई—अजी सुनती हो ? मैंने कहा, प्यारेलालजी आए हैं। आज खाली हाथ नहीं, जलेबिया लाए हैं।

बोले प्यारेलाल—बस सही सलामत यहां तक पहुंच गई, यही गनीमत है। नहीं तो राजामण्डी के चौराहे पर इन पर एक बन्दर

टूट पड़ा था। आगरे के बन्दर और कवि दोनो ही बड़े विराट होते हैं, जिसके पीछे खो-खो करके पड़ जाते हैं, उसे छोड़ते नही। हमने बहुत बचाया, लेकिन कविराज इनमे से दो जलेबिया तो झपट ले ही गए।

अच्छा, तो यह हादसा तुम्हारे साथ पेश आया ? अब सुनो आगे की बात—जलेबिया लेकर बन्दर एक पेड़ पर चढ़ गया और जलेबियो को ऐसी ललचाई दृष्टि से देखता परखता रहा, जैसे नेता कुर्सी को।

फिर ?

फिर यह कि आगरे में प्यारेलालो की कोई कमी थोड़े ही है। जैसे अतुले टापते रह गए और मुख्यमन्त्री की कुर्सी ले उड़े दादा पाटिल। वैसे ही बन्दर का ध्यान मगन देख कर एक काग भुशुन्ड जी ऊपर से झपटे और दोने से एक जलेबी को उठाकर बिहारी हो गए। बन्दर को बड़ा गुस्सा आया। कौए की यह मजाल ! तो बन्दर चित्त लेट गया जमीन पर। ऐसे कि जैसे मर गया। छाती पर रखली बची हुई दूसरी जलेबी। कौआ आ गया झासे मे। फस गया बन्दर के फासे मे। कौए ने मुह मे दबाई जलेबी। बन्दर ने पकड़ी उसकी गरदन और बोला—क्यो रे फरेबी, मुझे भी क्या प्यारेलाल समझा है ! कौए को अपनी चतुराई का फल मिला। पकड़ो रामप्यारी यह दोना। रख लाओ तीन प्लेटो मे। शुरू होजाए सिलसिला।

रामप्यारी गई अन्दर। कहने लगे प्यारेलाल—अरे, वाह रे बन्दर। सयाने कौए को भी मात दे दी। हमे कहने के लिए एक बात दे दी।

क्या बात प्यारे ?

जलेबिया आने ही वाली हैं, जल्दी सुना रे !

बात यह है, चकाचकजी। एक बार बहस छिड़ गई कि कायस्थ और कौए मे से ज्यादा सयाना कौन होता है। लोग कौए को ज्यादा सयाना बताए चले जा रहे थे। मुशीजी से यह नही सहा गया, बोले—फैसला हो जाए। हाथ कगन को आरसी क्या ? मैं अभी कौए की औकात बताए देता हू।

बोलते गए प्यारेलाल—मुशी जी जमीन पर चित्त लेट गए।

मुह खोल दिया और भर लिया उसमे ऊपर तक दही। कौआ पेड से नीचे आया। पहले चारो ओर टहला, फिर फडफडाया। छाती पर चढकर ऐंठा। फिर मुशीजी की नाक पर जा बैठा। सोचा, मुशीजी तो मर गए। कौए ने मुह के अन्दर चोच डाली। मुशीजी ने दातो की दुनाली उठा ली। लम्बी-लम्बी, काली-काली कौए की चोच कस कर दातो मे दबाली। कौआ चकराया। मुझसे भी चालाक यह कौन निकल आया। पूछा—का ! का ! कौन तू ? मुशीजी ने चोच को दबाए-दबाए दातो दातो मे ही कहा—का य स्थ !

—26 फरवरी, 63



❀ ❀ ❀

रेल से जेल भली

कहा से आरहे हो प्यारेलाल ! ये कुर्ता कैसे फट गया ? ऐनक भी कुछ टेढी-टेढी नजर आरही है ! क्या किसी से कुछ झगडा होगया ?

जी, नही। मुसीबत हमे मथुरा ले गई। चढ गए रेल मे, विराट हिन्दू सम्मेलन देखने के लिए। रेल मे ऐसी भीड थी, ऐसी भीड थी कि कचूमर निकल गया। कपडे फट गए। चश्मा गिर गया। टोपी खो गई। पैन निकल गया। बटुआ साफ होगया।

तो किसने कहा था तुमको रेल मे जाने के लिए ? चकाचक की बातो पर अमल नही करोगे, तो यही होगा। कितनी बार तुमसे कहा है कि 'भीड मे जाए, सो भाड में जाए।' जाए तो कच्छा पहन कर जाए। शरीर मे तेल की मालिश कराकर जाए। सिर पर तवा और तवे पर मुडासा बाध कर जाए। फिर चेताए देते हैं कि रेल की सवारी करे तो पैरो मे नालदार मोटे जूते हो और हाथ मे लाठी। प्यारे, जिसका नाम रेल है न, उसका असली नाम धकापेल है। सवारिया इसमे बोरियो की तरह फेंकी और चिनी जाती हैं। असबाब इनमे या तो सडास मे रखा जाता है या रास्तो मे अडाया जाता है। भारतीय रेलें तुम जैसे लल्लू-पंजुओ के लिए नही बनी, वे तो हम जैसे दमदारो के लिए चला करती है। शर्म नही आई ? कपडे फटवाकर लौटे हो।

अजी, लौट आए यही क्या कम गनीमत है। पहले तो लोगो ने चढने ही नही दिया। लाला भैया, राजामनुआ और चौधरी, ठाकुर साहब कह-कहकर जैसे-तैसे चढ गए तो किसी ने टिकने नही दिया। फटबाल की गेद की तरह इधर से उधर लतियाते रहे। इस ठेलमठेल मे एक बार हमारा पाव किसी चौधराइन की जूती पर पड गया, तो भर लिया चौधरी साहब ने हमे जेट मे। फेंकने लगे हमे खिडकी से

बाहर। वह तो कुछ लोगो को हम पर दया आगई, नही तो हम आपके पास की वजाय इस समय अस्पताल मे होते।

शुक्र है खुदा का कि तुम बच गए। सैकडो लोग इसी तरह बच जाते हैं। क्योकि उनकी जान-माल की हिफ़ाजत हो जाती है। इसीलिए तो सरकार किराया वढा-बढाकर वसूल करती है। बताओ हड्डी-पसली का अधिक मूल्य है या कुछ पए वढाकर किराया देने का ? भैय्या प्यारेलालजी, हमने तो इसीलिए रेल वजट की आलोचना नही की। हमने रेल वजट की नुक्ताचीनी की तो फेका किसी ने हमे खिडकी से बाहर।

बाहर तो कोई तब फेंके, जब तुम रेल मे सफर करो।

हमे कोई कपडे फडवाने हैं या गालिया सुननी है ? जेब कटवानी है या मार खानी है ? लाला प्यारेलाल, अपना कहना तो यह है कि एक घडी को जेल मे भले ही चला जाए, पर भूलकर भी कभी रेल मे न जाए। ढकेल मे जाना अच्छा, पर रेल मे नही। सेल (भाला) खाना मजूर, पर रेल का सफर करना मजूर नही। इसमे अच्छे-अच्छो का तेल निकल जाता है। तो भैय्या रेल मे बैठना तो दूर, हम तो स्टेशन के करीब से भी नही गुजरते। क्या पता कोई जलते हुए कोयले की चिगारी ही कपडो पर पड जाए। क्या पता कब प्लेटफाम टिकट ही अटी से खिसक जाए। और क्या पता किसी का मनी बैग खो गया और तुम्हारी शकल देखकर पुलिस वाले पकड कर ठोक दें हवालात मे ! सब कुछ हो सकता है प्यारे—रेल के सफर मे। इसलिए हम तो ववाल से दूर ही रहते है। अपना माल-असवाव अपने पास ही रखते हैं। वढते रहे किराए हमे कोई फर्क नही पडता। हम तो रेल-मन्त्री को धयवाद देते हैं कि वह भी हमारी विचारधारा के मानने वाले हैं और चाहते हैं कि रेल मे सिवाय उनके या रेल-विभाग मे काम करने वाले मुफ्त पासखोरो के या प्रथम श्रेणी और वातानुकूलित डिब्बो में सफर करने लायक जिनके पास पैसे हो, कोई सफर न किया करे। मुसीवत उठाएगे और गाठ कटाएगे तो अपने-आप रेल-यात्रा छोड देंगे। जय हो, वदरग गनी या वदरग वली साहव की !

चकाचक जो, इसमें इतना और जोड लीजिए कि ससद में और उससे बाहर आलोचनाओ से बचने के लिए एक ही रास्ता है कि थड क्लास की तरह सेकण्ड क्लास को भी रेलो से खत्म कर दिया जाए।

मजूर ! मजूर !! प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ !!!

—1 माच, 83

□

14



रामप्यारी का बजट

रामप्यारी ने आज घरेलू बजट पेश किया, इसमें खर्च की मद इस प्रकार थी—

मद	रुपया
मकान खाते	आठ हजार
बिजली खाते	पन्द्रह सौ
जलकर	छ सौ
गृहकर	पच्चीस सौ
सडक कर	पचास
लीज किराया	सौ
टेलीफोन	साढे छ: हजार
घरेलू नौकर	चार हजार
पत्र-पत्रिकाए	एक हजार
पुस्तकें	दो हजार
बर्तन-क्रॉकरी	दो हजार
कपडे पहनने के	पाच हजार
कपडे ओढने बिछाने के	दो हजार
दूध	तीन हजार
घी	पन्द्रह सौ
तेल	आठ सौ
चाय-काफी	तीन हजार
चीनी	तीन हजार
भाग-ठण्डाई का मसाला	बारह सौ
मिर्च-मसाले	पन्द्रह सौ
दालें	दो हजार
चावल	बारह सौ

बूरा-शक्कर	छ सौ
सब्जी	तीन हजार
फल	तीन हजार
मिठाई	तीन हजार
नमकीन	बारह सौ
मेवा	दो हजार
खोआ-पनीर	पन्द्रह सौ
आमोद-प्रमोद	पाच हजार
यात्रा	तीन हजार
राशन (गेहू, सूजी, मैदा आदि)	पच्चीस सौ
ईंधन	अठारह सौ
त्यौहार-वार	पाच हजार
बहन-बेटिया	बारह हजार
हारी-बीमारी	छ हजार
फर्नीचर	तीन हजार
आए-गए	छ हजार
भूले-बिसरे खर्चे	छ हजार

रामप्यारी बोली—इस तरह वार्षिक खर्चे की मद में इस बार तीन लाख अठासी हजार पचास रुपये का प्रावधान किया गया है।

सुनकर खर्चे की मदो को हमारी आखें फटी की फटी रह गई। खोपडी खुजलाते हुए हमने श्रीमती जी से पूछा—यह हिंदी के कवि, लेखक, पत्रकार का बजट है या नम्बर दो की कमाई करने वाले किसी नए रईसजादे का। इसमे कटौती करो।

रामप्यारी ने जवाब दिया—अपने व्यय में जब सरकार कटौती नही कर सकती तो मैं कैसे करू ? यह तो अनुमानित बजट है। जैसे-जैसे महगाई बढेगी, खर्चे की मदें भी बढती चली जाएगी। इसके लिए आवश्यकता पडने पर बीच में पूरक मार्गे भी पेश की जा सकती हैं।

हमने परेशानी से अपना सिर दोनो हथेलियो के बीच में ले लिया। अब श्रीमती जी प्राप्ति की रकमो का ब्योरा दे रही थी—

मद	रुपया
रद्दी की बिक्री से	छ सौ
पुराने कपडो व टूटे बर्तनो की बिक्री से	बारह सौ

टूटे जूते-चप्पलो व काठ-कबाड की बिक्री से	तीन सौ
लेखो का पारिश्रमिक,	आठ सौ
तीस पुस्तको की रायल्टी से,	छ सौ
कवि-सम्मेलनो से	ढाई हजार
पुरस्कार मे मिले ताम्रपत्रो और	
शालो की बिक्री से ।	छ सौ
अखबार की नौकरी से	तीन हजार
किराए की आमदनी से	पन्द्रह हजार
फिक्स डिपोजिट से	नौ सौ
शेयरो से	अस्सी

रामप्यारी ने आमदनी का जोड लगाते हुए बताया कि आमदनी के मद मे केवल बावन हजार पाच सौ अस्सी रुपए हुए, इस प्रकार बजट का कुल घाटा तीन लाख पैंतीस हजार चार सौ सत्तर रुपए रहा ।

हमने घबराकर कहा—वित्त मन्त्राणीजी, यह तो बताने की कृपा करें कि यह घाटा कैसे पूरा होगा ?

इस पर श्रीमती जी ने तुनककर कहा—मेरे पास सरकार की तरह नोट बनाने का कोई कारखाना तो है नहीं, जो नोट छापकर आपका घाटा पूरा कर दू । मैं तो सरकार की तरह आपसे यही कह सकती हू कि लेखो और पुस्तका का उत्पादन बढाओ, जहा नौकरी मे अच्छे पैसे मिलते हो, वहा काम करो । और कुछ नही हो सकता हो तो लाटरी लगाओ । उससे उम्मीद न हो तो कोई साइड बिजनेस करो । मेरा महकमा खच करने का है, आमदनी बढाने का नही । घर के मुखिया होने के कारण आप जाने, आपका काम जाने ।

हमने कहा, रामप्यारीजी आप सरकार की तरह कर तो लगा सकती हैं । अपने समथ लडको और बहुओ पर टैक्स आयद क्यो नही कर देती ? बजट का घाटा पूरा हो जाएगा ।

श्रीमती जी ने तत्काल जवाब दिया । अजी जब समथ सरकार बडे-बडे लोगो से टैक्स वसूल नही कर पाती तो अपने बेटे-बहुओ से कर वसूलने मे मैं भी असमथ हू । तुम्हारे लडके तुमसे भी ज्यादा शैतान हैं । करो से बचने व चोरी की कला उन्हे खूब आती है । तो हमने खीझ कर कहा—फिर क्या करोगी ?

श्रीमती जी ने जो उत्तर दिया, उसे सुनकर हम आसमान से जमीन पर आगए। उन्होंने कहा मेरे हाथ मे तो सिर्फ एक ही उपाय है कि आपकी भाग-ठण्डाई बन्द कर दू। पान, तम्बाकू, इत्र, फुलेल पर पाबदी लगा दू। मेरे पास अभी साडिया हैं—आप नगे बदन रहने का अभ्यास करें। दरवाजे पर बोर्ड टाग दू कि मेहमानो का प्रवेश निषिद्ध है। इस तरह मिठाई, नमकीन, दूध, कॉफी वगैरह का खर्चा कम हो जाएगा। दिन मे एक बार खाना बना लिया करूगी। आप सुबह का रखा शाम को खा लिया करिए। राशन-पानी और ईंधन की मद मे भी कटौती हो जाएगी। घर ताला लगाकर पार्क मे या मन्दिर मे जा बैठा करेंगे। न होगा बास, न बजेगी बासुरी। बिजली का खर्च भी बचेगा और फोन का भी।

हमने कहा—रामप्यारी यह नही हो सकता।

रामप्यारी ने भी उसी लहजे मे उत्तर दिया—यदि यह नही हो सकता तो सरकार भी नही चल सकती।

—2 मार्च, 83

□

15



भगवान बचाए कुत्तो से

जीजाजी, आपकी गुलकन्दी आगई है।

सवेरे-सवेरे बहुत अच्छी खबर सुनाई, प्यारेलाल। होली के मौके पर सलहजो, सालियो और भाभियो की हमे सख्त जरूरत रहती है। क्या बताए, भगवान ने हमे साली व भाभी दी नही। कोई बात नही। इस बार सलहज से ही काम चला लेंगे। यह बताओ अकेली आई है, या अपने दूसरे पालतू जीव को भी साथ लेती आई हैं?

यह दूसरा पालतू कौन पैदा होगया?

अरे भाई, पहले तुम और दूसरा तुमसे भी अधिक प्राण प्रिय स्पेनिश नस्ल का गुदगुदा, झबरीला, कलेजे से लगाने लायक उनका डार्लिंग रूबी।

अजी, बिना उस मनहूस कुत्ते के तो वह बेडरूम मे भी कदम नही रखती।

और यह भी तो कहो कि जब हमारी सलौनी सलहज रूबी के साथ खूबी से सुस्सी खेलती हैं तो तुम्हें 'गेट आउट' कह दिया जाता है।

जी। मुझे तो इन कुत्तो से बडी नफरत होगई है।

होनी ही चाहिए। कुत्ता काटे तो बुरा और चाटे तो बुरा।

लेकिन नई सभ्यता वाले लोग बिना कुत्ते के अपने को अधूरा समझते हैं।

इसका कारण जानते हो, प्यारेलाल? वे इससे दुम हिलाने की ट्रेनिंग प्राप्त करते हैं। तुम तो जानते ही हो कि घर मे बीबी के सामने और दफ्तर मे 'बॉस' के आगे दुम हिलाना आज के आदमी की मजबूरी है। जो इस कला मे पारगत नही है, वह घर-बाहर सभी जगह एकदम असफल है। माल का आर्डर दुम हिलाने से मिलता है।

नौकरी पूछ हिलाने से मिलती है। चुनावों की टिकट के लिए तो दुम हिलाना बहुत ही आवश्यक है। तुम हमारे सामने अगर दुम दबाकर नही रहते, तो इतने दिन टिक सकते थे ? सपादक भी उसकी खबरें और लेख छापते हैं जो उनके सामने, आगे पीछे, रात-दिन, दुम हिलाया करते हैं। यह जो सरमा की सन्तान और भैरो का वाहन श्वानदेव है ना, दुम हिला-हिलाकर लोगो को यह जताता रहता है कि उससे कुछ शिक्षा ग्रहण करो। अगर दुनिया मे श्वानवत आचरण किया, तो सुख पाओगे। नही तो देशी कुत्तो की तरह कू-कू कर मर जाओगे।

वात तो आपकी ठीक ही है, चकाचक जी।

ही है नही, सौ फीसदी सही है। यह कुत्ते सिखाते हैं कि घर मे शेर रहो। अपनी बिरादरी पर गुर्राओ। मालिक खुश हो तो पूछ को आसमान की तरफ उठा दो। सीने को तान लो। थूथडे को फुला लो। लेकिन अगर पालने वाला तुम पर नाराज है तो सोफे के नीचे घुस जाओ। पैरो मे लोट जाओ। रूबी ऐसा ही करता है ना ?

अजी वह तो और भी बहुत सारी बदतमीजिया करता है। आपकी गुलकन्दी जब मूड मे होती है तो वह दोनो पैरो पर खडा हो जाता है। पजो के सहारे कधे तक आ जाता है। कभी-कभी तो नालायक गले से लिपट जाता है और मुह को चूमने लगता है। चकाचक जी, उस समय ऐसा गुस्सा आता है कि उठा के रिवाल्वर अपने इस जानी दुश्मन पर गोली दाग दू, लेकिन क्या करू ? गुलकदी देवी उस हरामजादे कुत्ते की इस हरकत पर, बजाय नाराज होने के परम प्रसन्न नजर आती हैं। वह उसे दोनो हाथो से उठाकर सीने से लगा लेती है—और वह दुष्ट हमारी आखो के सामने उनके आचल से खेलता रहता है।

डूब मरने का मौका है, प्यारेलाल ! यह तो तुम्ही हो, जो इन बेजा हरकतो को बर्दाश्त कर लिया करते हो। लेकिन हमारी तरह के जो मद लोग दुनिया मे हैं, वे ऐसी हरकतो पर उक्त अवाछित कुत्ते को ही नही, डाकू-सरदार नेकसे की तरह कुत्ता बिरादरी का ही सामूहिक वध कर दिया करते हैं। तुमने अभी एक समाचार पढा ?

क्या ?

खबर मेरठ की है। मामला बागपत का है। एक आवारा कुत्ते ने किसी अधिकारी की पत्नी के साथ कुछ ऐसा ही अभद्र व्यवहार कर दिया। अधिकारी का पारा चढ गया। उसने उठाई बन्दूक और दाग दी। वह कुत्ता तो मरा ही, लेकिन उसके अन्य छह साथी भी गोलियो से भून दिए गए। लोग लाठिया ले-लेकर गली-मुहल्लो मे घूम गए। जहा जो भी कुत्ता मिला उसे प्रेम की वेदी पर शहीद कर दिया गया। इस तरह कुल अठारह कुत्ते उस दिन मारे गए। लेकिन एक तुम हो कि बन्दूक छोड, रूबी को छडी भी नही घुमा सकते।

अजी, एक दिन हमने उसकी अकेले मे मरम्मत कर डाली थी। तो देवीजी ने सारा घर आसमान सर पर उठा लिया। कहने लगी—माइड यू प्लीज ! मैं आगे से ऐसी हरकत बर्दाश्त नही कर सकती। यह तुमसे अधिक वफादार है। तुम तो दिनभर घर से बाहर रहते हो। तन्हाई मे यही तो मेरा साथी है। यह घर की ही नही, मेरी भी रक्षा करता है। इस मासूम को अपनी मर्दानगी दिखाने में तुम्हे शर्म नही आई ? खबरदार ! जो आगे से इसे छुआ तो

जीजाजी, हमने तो उसी दिन से अपने दोनो कान पकड लिए। न कुत्ते को कुछ कहते हैं, ना कुत्ते वाली को।

और दुम दबाकर हमारे पास चले आते हो। जियो, प्यारेलाल ! भगवान तुम्हारी कुत्तो से रक्षा करें।

—10 मार्च, 83

□

16



अखियां छक्क ले, गल्ल न कर

हल्लो! डियर गुलकन्दी! कम ऑन! वेलकम, ग्लैड टू सी यू! ओह स्वीट हार्ट! आई एम एक्शसली वेटिंग फॉर यू! हर हाइनेस!

अरे वाह! नन्दोईजी तो आज अंग्रेजी की टांग तोड़ रहे हैं।

जहे किस्मत! आपने इस नाचीज के गरीबखाने को अपने हुस्ने-मुबारक से आखिर रौनक अफरोज कर ही दिया। मलिकाए मोहब्बत मावदौलत आपकी खिदमत में पलकों का शामियाना ।

अपने कुंदकली जैसे दांतों से मन्द मुस्कान के मोती बरसाती हुई, हमारी गुलनार बोली—बस-बस! निर्गुट सम्मेलन में आए राष्ट्राध्यक्षों की तरह तारीफों के पुल न बांधिए। हम इन्दिरा गांधी नहीं हैं।

पर मैंनू तो हुजूरेवाला इन्दिराजी से चंगी लग्ग रही हो।

कहो तो तैनू एक फिल्मी गीत ।

चंदन सा बदन, चंचल चितवन,
धीरे से तेरा ये मुस्काना।
मुझे दोष न देना जग वालो,
हो जाऊं अगर मैं दीवाना।

इस बार तो गुलकंदी ताली बजाते-बजाते उछल पड़ी और खिले अनार की तरह खुलकर कहने लगी—जनाब के दीवाने होने में अब कोई कसर नहीं रह गई है। मुश्किल से एक फर्लांग चलना पड़ेगा। नहीं तो मैं ही गाड़ी में डालकर आपको वहां दाखिल करा आऊंगी। खड़े क्यों हैं? आराम से बैठ जाइए। हां-हां हम भी तशरीफ रख रहे हैं। क्या हाल हैं, आपकी पेठे जसी तबियत के? जीजी नहीं दिखाई दे रहीं?

दिखाई तो हमें भी आपके सिवाय कुछ और । याद आ रहा है, फिराक साहब का एक मशहूर शेर। इजाजत हो तो अर्ज करूं?

इरशाद!

जी अर्ज किया है—

तुम करीब भी हो, और मुखातिब भी,
तुमको देखू या तुमसे बात करू ।

अजी, अब हम देखने-दिखाने लायक कहा रहे। आपके भी बालो पर जनाव सफेदी आगई है। देखा-देखी के दिन गए। अब तो करने को दो बातें रह गई हैं।

लेकिन हमारे उस्ताद तो हमसे यह कहकर जन्नत रसीद होगए कि "अख्खियां छक्क ले, गल्ल न कर।"

तो फिर यही सही, हम किचन से बहन जी को बुलाकर लाइत हैं। तब आप अच्छी तरह से आखे सेंक लीजिएगा।

और यह कहती-कहती मेडम गुलकदी तीर की तरह हमारे कमरे से निकल गई। रह गई उनके कपडो मे बसी 'इटीमेट' की आला खुशबू।

हम इस सदमे से सभल भी नही पाए थे कि दाल-भात मे मूसलचद की तरह प्यारेलाल आ टपके। पूछने लगे—क्या हुआ? यह चेहरे पर हवाइया कैसे उड रही है? पहली ही मुलाकात मे चारो खाने चित्त!

हम उखडते हुए बोले—'डोन्ट डिस्टब मी' भडक रहा है इस समय हमारा पित्त।

तो सुनलो जीजाजी, इस पर हमारा एक कवित्त—

जाल को चूनरी, चोकनों गात,
चकोर थके मुख चद के धोखे।
बाकी लटें, लटक, कटि छीन,
पयोधर हृय मनमोहन सोखे।
वेधे 'मुबारक' के हिय मे,
सर एको परें न कटाक्ष के ओपे।
बाको न राखो कजा को कछू,
जब बाको चितौन ते झाको झरोखे॥

उधर देखिए, आपकी सलहज साहिबा खिडकी मे खडी-खडी आपको सीग दिखा रही है।

—11 मार्च, 83

17



निर्गुट सम्मेलन के हाल तुको के कमाल

कहो प्यारेलाल, दिल्ली हो आए ?

हो क्या आए, यू कहिए कि झक मार आए !

अमा, निर्गुट राष्ट्रो के सम्मेलन मे तुम कौन सी मछली मारने गए थे ? वहा की मछलिया तो उस दिन आगरे मे ही आगई थी। बन्द गाडियो मे किले से ताजमहल जाते हमने भी उन्हे भीड मे से उचक-उचककर देख लिया था। तब तुम नाहक दिल्ली धूल फाकने क्यो गए ?

चकाचक जी, गए तो इसलिए थे कि निकट से कुछ नजारा देखने को मिल जाएगा, मगर वहा तो मामला ही विकट था। बडे से बडे सम्पादको व पत्रकारो तक को शाहजादो, शाहजादियो आदि के दर्शन नसीब नही होते थे। विज्ञान-भवन के मुख्य हॉल म तो इनका भी प्रवेश निषिद्ध था।

अलग एक कमरे मे दूरदर्शन मे सम्मेलन के हाल देखते रहते थे और छपे हुए भाषण चश्मे लगा-लगाकर पढते रहते थे। हमे तो विज्ञान भवन की सडक पर भी किसी ने जाने नही दिया। हमारी कौन गिनती थी ? आयोजन व्यवस्था मे लगे बडे-बडे अधिकारियो को पुलिस दरवाजे पर ही रोक देती थी। तो हमने भी अपने एक मित्र के घर देर रात तक निर्गुट सम्मेलन की कार्यवाही देखली।

और लौट के बुद्धू घर को आए। चलो देख नही पाए तो कोई बात नहीं, यह बताओ सुन-सुना क्या आए ?

जीजाजी, सुना बहुत कुछ।

सालिगराम जी, वह तो तुम्हारी पुरानी आदत है। कुछ हम भी तो सुनें।

सुना यह है कि जैसे एशियाई खेल, निर्गुट राष्ट्र सम्मेलन के रिहसल थे, वैसे ही वह आयोजन राष्ट्र मण्डलीय देशो के आगामी सम्मेलन का एक वृहद रिहसल था।

किए जाओ सम्मेलन और लिए जाओ मजे ! जिओ मेरी सरकार, ओलम्पिक खेलो से लेकर ब्रिटेन की महारानी के आगमन तक का मार्ग साफ। इस सफलता पर असम के हजारो खून माफ।

चकाचकजी, धकाधक विश्व के राष्ट्राध्यक्ष आए। भारतीय बैंड-वादको ने उनके साथ अपने भी राष्ट्र गीत गाए। पालम हवाई अड्डे पर राशन की दुकानो की तरह क्तार मे लगे। तोपो के गोले दगे। रात-रात भर के जगे राष्ट्राध्यक्ष अपने-अपने होटलो को भगे। जलसे मे जा-जाकर अपनी सीटो पर बैठ गए। मूवी वाले और कैमरामैन सामने आए तो ऐंठ गए। जब बारी आई तो तैयार की हुई स्पीच पढ सुनाई। बज उठी तालिया, भोज पर भोज और फिर नृत्य-गीत, कव्वालिया। प्रस्ताव हुए पास। जाते-जाते सभी प्रतिनिधि यही कह रहे थे कि ऐसे आयोजन हुआ करे प्रति मास। मन की कली खिलेगी। आल वर्ल्ड पब्लिसिटी मिलेगी। हल्दी न चूना, रग चढै दूना। जो होना है वह तो होगा ही, किन्तु आवश्यक है कि विचार-विनिमय हो। भारत सचमुच महान् है, इन्दिरा गाधी की जय हो।

वाह प्यारेलाल, देखा तुम्हारी तुको का कमाल। बाकी सब तो भल्ले-भल्ले थे ?

यह बताओ इन्दिराजी के क्या हल्ले थे ?

सारे सम्मेलनो मे और था ही क्या, केवल वह ही वह थी। जिसकी बात को न टाला जा सके ऐसी शह थी। ऐसे बुने थे खूबसूरत धागे। सौ राष्ट्राध्यक्ष पीछे पीछे, और हमारी इन्दिराजी आगे-आगे। वह जलवा था कि चकरा जाए इग्लिस्तान। सकपका जाए चीन, और धकपका जाए पडोसी पाकिस्तान। सोवियत सघ रह-रह कर सोचे। करवटे बदल-बदल कर अमरीका सिर के बाल नोचे। क्यूबा तो क्यूबा यह यार तभी हिन्द महासागर मे हमे ले डबा। महाशक्तियो का मूच, किन्तु भारत का मूवा। दिल्ली का निर्गुट सम्मेलन वास्तव मे था अजूबा।

प्यारेलाल, आज तुम्हारी कापी मे हम प्रेस के दस नम्बर बढाते है—जीजाजी जब खुश होते हैं तो अपने सालिगराम को पिस्ते की लौज खिलाते हैं। खाओ, मत शरमाओ। गुलकन्दी अदर बुला रही हैं, जाओ। —12 मार्च, 83

□

18



यह मजाल बेतुके सवाल

गुलकन्दी देवी, रामप्यारी के साथ होली के पकवान बना रही थी। इधर हम बैठक मे बैठे 'चकाचक' लिखवा रहे थे। मावा और मेवा के साथ कढाई मे जब कसार भुनने की खुशबू आई, तो हमसे बैठा नही रहा गया। जैसे अपना नाम सुनते ही मुख्य अतिथि के गले मे माला पहनाने के लिए लोग मच की ओर लपक उठते हैं, वैसे ही हम तेज कदमो से रसोई की ओर चल पडे। हमने देखा कि गुझियो की तैयारी होरही है। पडोसिन बेल रही है, गुलकदी गोंठ रही है और रामप्यारी तल रही है।

इस दृश्य को देखकर हमे अचानक पजाब की अकाली समस्या का ध्यान आगया कि दरबारा बेल रहे हैं, सेठी गाठ रहे हैं और इदिराजी तलने की तैयारी मे हैं। पजाब तो अगीठी की तरह सुलग ही रहा है।

निकट जाकर जरा ध्यान से देखा तो मामला कुछ उल्टा नजर आया। गुलकन्दी बेलने वाली से शिकायत कर रही थी कि मोमन जरा ठीक से लगाओ। गुलकन्दी रामप्यारी से कह रही थी कि घान जरा जल्दी मत उतारो। अभी और सिकने दो। रामप्यारी गुलकन्दी से कह रही थी—भाभी जरा उठकर दरवाजा बन्द कर दो, वे शायद इधर ही आरहे हैं। बिना भगवान का भोग लगाए गुझिया किसी को नही मिलेंगी। फटाक से दरवाजा बन्द होगया और हम जनरल जिया की तरह वापस अपने पाकिस्तान लौट आए। आते ही बयान दिया—इस बार होली का खेल मित्रता के अच्छे वातावरण मे होने की सभावना है। रसोई मे जो आयोग बैठा है, उसके अच्छे परिणाम निकलने की आशा है।

सुनकर प्यारेलाल मुस्कराए, बोले—लगता है श्रीमान की दाल वहा नही गली ?

हमने उत्तर दिया—दाल नही, वहा माल बन रहे है। गुझिया उतर रही हैं।

लेकिन हिन्दी के किताबी समालोचको की तरह हमारे प्यारेलाल भी बडे रुखे किस्म के आदमी हैं। रसना-रस का आस्वाद तो वह नाम को भी नही ले पाते हैं। रस-परिपाक के स्थान पर वह शब्द विपाक मे उलझ जाते हैं। हमसे पूछने लगे—गुरुजी, यह गुझिया शब्द की व्युत्पत्ति क्या है ? यह गुजिया है या गुझिया ? अगर गुजिया है तो निश्चय ही इसका सम्बन्ध जिया साहब के साथ होगा। ठीक उस प्रकार जैसे लड्डू का सम्बन्ध लाडू से होता है। लाडू को पहले लाढू कहा जाता था और जिस पर बहुत लाड प्यार किया जाता था, उसे लाढू खिलाया जाता था।

जैसे सभा मे वक्ता को विषय से बाहर जाते देखकर अध्यक्ष बोलने वाले को टोक दिया करते हैं, वैसे ही हमने प्यारेलाल को ब्रेक लगाया—माइड यू, मिस्टर प्यारेलाल ! हमारे पाठक रोज-रोज मिठाइयो के जिक्र से ऊब गए है। उनका कहना है कि जिस तरह सरकारी कामकाज मे हिन्दी का प्रयोग निषिद्ध है उसी प्रकार 'चकाचक' की पत्तल मे भी अब मिठाइया नही परोसी जानी चाहिए। इनके आधिक्य के कारण पाठको को अजीर्ण रोग होगया है और बहुतो को तो डाइबिटीज की शिकायत हो चली है। इसलिए आप आगे से चाय की चर्चा कर सकते हैं। कडवी काफी के किस्से कह सकते हैं। बियर पर आपकी बकवास बियर की जा सकती है। शेम्पेन पर उसके पक्ष मे केम्पेन (आदोलन) चलाया जा सकता है। व्हिस्की किसकी ईजाद है ? इस पर रिसर्च की जा सकती है। लेकिन कभी भूलकर भी भविष्य मे जलेबी का नाम नही लेना। नही तो जम्मू-कश्मीर की तरह तुम्हारी कार्रवाइयो पर साम्प्रदायिक जमातो के मानिंद प्रतिबन्ध लगाया जा सकता है। अगर आपने कभी यह पूछा कि जल तो इसमे है ही नही फिर इसका नाम जलेबी क्यो रख दिया गया, तो आपको भी राजस्थान विधानसभा के सदस्य मिस्टर भाटी की तरह निलम्बित कर दिया जाएगा। आपके रिसर्च का विषय यह तो हो सकता है कि इग्लैण्ड की प्रधानमत्री थ्रेचर पर जो अडे फेंके गए थे, वह उनको क्यो नही लगे ? लेकिन जलेबी पर इस प्रकार के अनुसधान करना कि इसके अन्दर रस क्या भीतर से खोखला करके

डाला गया है अथवा इजेक्शन द्वारा भीतर पहुचाया गया है। कहना और सुनना दोनो पर सख्त पाबन्दी आयद कर दी गई है।

प्यारेलाल हमारी इस रूलिंग से पसन्न नजर नही आए और पूछने लगे—क्या हम पूछ सकते हैं कि निर्गुट सम्मेलन की समाप्ति पर इंदिरा जी ने अपना प्रेस सम्मेलन पहली बार विज्ञान भवन के मुख्य हाल मे ही क्यो किया ? या आपसे यह पूछा जा सकता है कि कम्पूचिया की खाली सीट पर एक भारतीय पत्रकार ने बैठ जाने की जुर्रत कैसे की ? अगर हम आपसे यह पूछे कि हमारी प्रधानमन्त्री ने शिखर सम्मेलन के और सब कामो को बडी बारीकी से देखा और व्यवस्था की, लेकिन उस समय उन्हे भाषणो के हिन्दी अनुवाद का ध्यान क्यो नही आया ? सवाददाता सम्मेलन मे अचानक उनका हिंदी-प्रेम कैसे उमड आया ?

हमने व्यवस्था दी कि प्यारेलाल के ये प्रश्न वैध है और किसी भी समय उठाए जा सकते हैं। हमने उन्हे आगाह किया कि वे सब कुछ पूछ सकते है, लेकिन यह प्रश्न नही पूछ सकते कि उक्त सम्वाददाता सम्मेलन मे प्रधानमन्त्रीजी हरी साडी और गुलाबी ब्लाउज ही पहनकर क्यो आई ? यदि ऐसे बेतुके सवाल किए जाएगे तो उन्हे कार्रवाई से निकाल दिया जाएगा।

—15 माघ, 83



19



गीदड़ उवाच !

आते ही प्यारेलाल बोले—और ?

हमने कहा—

और चाकी का कौर।
पीसनहारी राम कौर।
चाकी चल पाट घर्राय।
पीसनहारी को लिरिया खाय।

सुनकर प्यारेलाल पूछते भये—ये पीसनहारी कौन है और लिरिया किसे कहते हैं ?

हमने बताया—इसका सांकेतिक अर्थ है कि मर्द की मौत नामर्द के हाथ होती है। अब पीसनहारी का अर्थ तुम लगा लो और लिरिया कहते हैं सियारिया को।

चकाचकजी हिन्दी बोलो न ? यह स्यारिया क्या बला है ?

स्यारिया, मेरे प्यारिया, कहते हैं नारे लगाने वाला, ऐसे नारे लगाने वालों को जो पुलिस के आने के पहले तक तो बड़ा हो-हल्ला मचाते हैं, लेकिन उसके आते ही सिर पर पैर रखकर ऐसे गायब होते हैं जैसे 'विकासशील भारत' के प्रथम पृष्ठ पर छपने वाले कार्टून उवाची (गदभ) के सिर पर से सींग। प्यारेलाल, स्यारिया तुम्हारे बिरादरी बन्धु हैं। हिन्दी में उन्हें ऐसे लिखते हैं कि पहले लिखा गधा वाला 'ग', फिर लगाई उस पर स्त्री वाली बड़ी 'ी' की मात्रा, फिर लिखा दवात वाला 'द' और अन्त में कीचड़ में से अगर कीच को निकाल दो तो 'जो अक्षर बच रहता है—'ड' । अब बताओ यह क्या शब्द हुआ ?

प्यारेलाल मुस्कराए, फिर तपाक से बोले—यह तो आपका उपनाम हुआ चकाचकजी। हास्यरस के कवि प्राय ऐसे ही 'ड' वाची

उपनाम रखते हैं, जैसे'—हुल्लड', 'अल्हड' और 'कुल्हड' वगैरह। 'गीदड' शब्द बच गया था, इसे होली के अवसर पर आप रखलो।

बहुत अच्छे प्यारेलाल, आज तो तुम्हारा दिमाग बागडी होगया है, पर हम तुम्हे एक सप्ताह के लिए सदन मे निष्कासित नही करेगे। चलो, आज तुम्हे गीदडो से सम्बन्धित एक कहानी सुनाए देते हैं।

सुनाइए—

मथुरा नगरी मे यमुना जी के किनारे एक मदिर म एक गुसाईंजी महाराज विराजते थे।

विराजते थे।

गुसाईंजी महाराज ठाकुरजी को शयन कराकर अपनी हवेली की छत पर गादी-तकिया लगाकर चादनी रात मे विराजते और सेवक, चेला तथा मथुरा के चौवे भी उनको दडवत करके आसपास बैठ जाते।

बैठ जाते।

गुसाइजी से लेकर चौबेजी तक सब छाने हुए होते। मोद विनोद की बातें चलती। भाति-भाति के किस्से-कहानी कहे जाते।

कहे जाते।

एक दिन क्या हुआ प्यारेलाल कि यमुना के उस पार विरोधी दल के नेताओ की तरह गीदडो की एक विशाल रैली हुई।

हुई।

स्यारिया बडे जोर-जोर से रोने लगे कि असम म राष्ट्रपति शासन लागू किया जाए। गन्ने की कीमत बढाई जाए। रेलो का किराया कम किया जाए। डाकुओ का आतक समाप्त हो। नही तो इक्लाब जिंदाबाद।

चकाचक जी, जिंदाबाद!

सुनकर गीदडो के इस सदन को, गुसाईंजी ने चौबेजी से पूछा—यह गीदड क्यो रो रहे हैं?

चौबे जी बडे चतुर थे—अब्दुल रहमान अतुले की तरह। उन्होंने फौरन उत्तर दिया—जय-जय महाराज। इन्हें जाडा लग रहा है। ठड के मारे रो रहे हैं। अगर इनके लिए कम्बलो का प्रबन्ध हो जाए, तो बडा पुण्य हो।

प्यारेलाल ने पूछा—फिर क्या हुआ ?

हुआ यह प्यारेलालजी कि गुसाईं जी महाराज बड़े दयानिधि तो थे ही, तुम्हारी तरह 'निपट' भी थे, यानी भोले भी थे। फौरन हुक्म दिया कि सौ कम्बल खरीदे जाएं और इन गीदड़ों को उढ़ा दिए जाएं।

गीदड़ों को कम्बल !

अरे कैसे कम्बल ! किसके कम्बल !!

कम्बलों के नाम से रुपया निकाल लिया गया। खरीद का फर्जी पर्चा मुनीमजी की फाइल में नग गया। रुपया चौबेजी सहित सभी मुसाहिबों में बट गया।

आप तक नहीं पहुंचा ?

हम तक तो तब पहुंचता जब आपसे बचता।

आगे ?

आगे दूसरी रात फिर सभा जुड़ी। रात को स्यारिया फिर रोए। गुसाईंजी ने फिर पूछा अब ये क्यों रो रहे हैं ? तो चौबेजी ने बताया— जय-जय महाराज ! ये रो नहीं रहे, आपकी जय-जयकार कर रहे हैं।

यह क्या हुआ ?

यह हुआ गीदड़-उवाच !

—16 माघ, 83

□

20



तोता-मैना सवाद

एक बात कहू ?—रामप्यारी बोली।

अजी, एक क्या सो बात मारो ! और एक भी मत गिनो। कहिए, सदा सुनते आए है और इस समय भी सुनने को तैयार हैं। इस पर रामप्यारी ठमक कर बोली—मानो तो कहूँ ?

हम बोले—बिना माने यही गुजारा है ? हुक्म सिर माथे, मेरे चश्मेबद्दूर आज्ञा कीजिए।

तो मुझे एक तोता खरीदकर ला दीजिए।

तोता ! और आपको ? हमारे रहते आपको तोते की क्या जरूरत पड गई ? हम जो हैं आपके तोता।

रामप्यारी हसी—तुम तो सिर्फ टाय-टाय करते हो या आखें बदलते रहते हो। मुझे बोलने वाला तोता चाहिए। उसके लिए एक शानदार पिंजडा चाहिए। पिंजडे मे जडी हुई कटोरिया चाहिए।

हा-हा, बोलिए चने की दाल चाहिए, मिर्चें चाहिए। और फिर उससे प्यार मुहब्बत करने के लिए एक तोता भी चाहिए।

आप पहले तोता लाकर दीजिए तो सही, बाद मे सब हो जाएगा।

वह तो ला देंगे, जरूर ला देंगे। कल नही, आज ही ला देंगे। घर मे सुख-शान्ति पूर्वक रहना है तो आज नही, अभी ला देंगे। लेकिन मैडम यह तोते की सनक आपको कैसे सवार हुई ?

जी, अरब के शाहो-शहजादियो, अमीर और उमरावो को देखकर निर्गुट राष्ट्र शिखर सम्मेलन से लौटते समय वे अपने-अपने साथ एक-एक बढिया किस्म का तोता लेते गए है।

वे वहा तोतो का क्या अचार डालेंगे ?

जी नही, उन्हे अरबी पढना सिखाएगे।

अगर हिन्दी तोते अरबी न सीख सके तो ?

तो अरवी लोग कह गए हैं कि ऐसा न हुआ तो हम तोतो की जुबान सीख जाएगे।

तो रामप्यारीजी यह वात है। आप भी हमसे तोतो की बोली मे वोलना मागती हो ?

जी नही, मैं उसे अग्रेजी पढाना मागती हू। जरा पहाडी किस्म का कठीदार, लम्बी दुम वाला, मजबूत-सा तोता लाकर दीजिए। मैं उसे भारत की राजभाषा पढाऊगी।

तोते को अग्रेजी !

देश के छोटे-छोटे बच्चे जब अग्रेजी पढ रहे हैं तो तोते अग्रेजी क्यो नही पढ सकते ? जब बच्चे मातृभाषा भूले जा रहे हैं, तो तोतो को अपनी मादरी जुबान याद रखने का क्या हक है? जब अरब के लोग उन्हे अरबी पढा सकते हैं तो मैं उन्हे अगेजी क्यो नही पढा सकती ? जब लोगों का प्रेम-व्यापार अग्रेजी मे चलता है, धन्धा-रोजगार अग्रेजी मे चलता है, सरकार अग्रेजी से चलती है, तो तोतो को भी अपनी जुबान अग्रेजी मे ही चलानी पडेगी। इसके विना तोतो का गुजारा नही। जैसे ही हमने दो-चार तोते अग्रेजी पढाकर जगल मे छोडे कि भारत-सरकार के प्रयत्न शत प्रतिशत सफल हो जाएगे। तब नगरो, कस्बो मे ही नही, तोतो के तुफैल से अग्रेजी गाव गाव मे ही क्यो, नदी, पवतो, जगलो से लेकर आकाश तक फल जाएगी। मैं ठीक कह रही हू न ?

अजी, रामप्यारी जी, आपको जो गलत कहे वह महा गलत। भारत मे अग्रेजी का प्रचलन अग्रेजो के मिट्ठुओ ने ही किया है। जाते-जाते गोरी चमडी वाले उनसे यह कह गए कि हमारी पढाई हुई तोता रटन्त को भूलना मत।

हमेशा अग्रेजी-अग्रेजी की ही रट लगाते रहना गगाराम, तुम्हे इसीलिए पाला पोसा कि हमारे जाने के बाद हमारी याद को ताजा रखो। मगर रामप्यारी तुम ऐसा क्यो कर रही हो ? तुम तो तोता नही, मैना हो, और हम हैं तुम्हारे तोते। इस दुलभ जोडे को देख-देखकर लोग खा रहे हैं गोते। शायरो ने लिखी है किता और कवियो ने लिखी है कविता—

मैं तेरे पिजडे का तोता,
तू मेरे पिजड़े की मना,
यह बात किसी से मत कहना।

—17 माच, 83

□

21



ले, पी ले सोठ का पानी

महाराष्ट्र के उतरे हुए मुख्यमन्त्री मैरिज ब्यूरो स्टाट कर रहे हैं। इसमे क्या होगा ?

चकाचकजी, जिनको जीवनरूपी गाडियो के इजन फेल हो जाएगे, उनमे नया इजन फिट करके उन्हे फिर चालू कर देंगे।

इजन बदलेंगे या स्टेपनी भी ?

जी, दोनो काम होगे, इस ब्यूरो मे। विवाह-इच्छुक नारियो के लिए पुरुष भी और शादी के लिए लालायित पुरुषो के लिए नारिया भी इस ब्यूरो से मुहैय्या की जाएगी।

जिन पहियो की हवा निकल जाएगी, उनमे हवा भी भरी जाएगी ?

जी हा, शादी के लिए हवा भी बाधी जाएगी और पुरानी ढच्चर और परित्यक्ता गाडी को रग रोगन और सीट गद्दी बदलकर यानी एकदम नई बनाकर ड्राइवर को सौप दिया जाएगा।

धन्धा तो प्रोफिटेबिल (लाभदायक) लगता है ?

जी हा ! "हरद लगै ना फिटकरी, रग चोखा ही आवै।' घर पर साइनबोड टागा और अखबार मे विज्ञापन दिए कि गाहक आने लगे, कि एक धनी विधवा महिला को फरमाबरदार पति चाहिए।

कि एक वेदान्ती (जिसके दात न हो) अत्यन्त विनयी (जिसकी कमर झुक गई हो) ऊपर से नीचे तक अमल धवल (जिसके बाल सफेद होगए हो) और जिस पर उलूकवाहिनी (लक्ष्मी जी), की महती कृपा है, ऐसे भद्रपुरुष को खेलने के लिए एक गुडिया चाहिए। वह चाहे 18 वर्ष की हो या 26 वष की। उसे घर का काम-काज करने की कोई आवश्यक्ता नही। उसका काम एक ही होगा कि भगवान न करे कि उसे बीच मे ही पति का वियोग सहन करना पड जाए तो

उमर भर वह अपने पति के गुणो और कर्मों का ऊचे ऊचे स्वरो में प्रतिदिन कम से कम तीन वार अवश्य बखान कर सके। कि कोई समाज की सताई और वनिता-गृह में बसाई महिला नए सिरे से अपनी जिन्दगी प्रारम्भ करना चाहती है, उसके लिए आवश्यकता है एक ऐसे वर की कि जिसकी याददाश्त कमजोर हो। कि जो अत्यन्त सहनशील हो। कमाऊ तो हो, मगर जोड़ू न हो।

कि 'आवश्यकता है एक कवि, कलाकार, लेखक व पत्रकार के लिए एक अन्नपूर्णा की, जो काम पर लगी हो। अपनी साडियो का ही नही, पति के पट-बुशर्टों का भी खच चला सके। मकान किराया और बिजली का बिल भी अदा कर सके। कलाकार कला की साधना करता रहे और उसकी कलादेई (भावी पत्नी) उसकी घर गृहस्थी बिना शिकवे शिकायत के चलाती रहे।

कि आवश्यकता है एक काम पर लगी महिला के लिए ऐसे हट्टे-कट्टे पुरुष की जो उसके बच्चो को खिला सके। घर की सफाई से लेकर खाना तक बना सके। सुबह उठते ही चाय तैयार करके दे। रात को सोते समय सिर पर बाम लगाए। किसी आगन्तुक को यह न बताए कि वह उसका पति है।

प्यारेलालजी, नेताजी ने काम तो परोपकारी चुना। जनता जनादन के लिए बडा उपयोगी भी सिद्ध होगा। लेकिन इससे एक बात साबित होगई।

क्या ?

कि राजा की सवारी का घोडा सवारी से उतरते ही खच्चर से भी गया—बीता हो जाता है। ऐसे ही उतरे हुए पहलवान को खुराक के भी लाले पड जाते हैं। यही हाल नेताओ और अभिनेताओ का भी है। यश के शिखर से गिरते ही लोग उन्हे पहचानने से इन्कार कर देते हैं। नेहरुजी ने ऐसे लोगो को किरकिरी से बचाने के लिए एक धमशाला खोली थी—'भारत सेवक समाज।' इन्दिराजी ने इनके राशन-पानी के लिए पेन्शनें बाध दी।

लेकिन इनसे उनके गुजारे कहा चलते हैं ?

तो फिर खोलें मैरिज ब्यूरो। बनें पान, बीडी, सिगरेट यूनियन के नेता, खोलें मुर्गीखाने, चराए बकरिया, वेचें अडे—जस-जस करनी, तस-तस भरनी।

चकाचकजी, हमने सुना है कि अन्य कुछ मुख्यमन्त्री और निवर्तमान केन्द्र व प्रदेश के मन्त्रीगण भी धन्धे की तलाश मे हैं। आप उनके लिए कोई कम बताएगे ?

क्यो नही !

देश मे अच्छे केश-कर्तनालयो की काफी कमी है। लाड्री का धधा भी बहुत लाभदायक है। लडके पढ-लिख गए हैं और बडो ने यह काम छोड दिया है। इसलिए जूते और चप्पलो के भी हाल फटेहाल हैं। जन-सेवा के इस काय को भी मन्त्रीगण महत्त्व प्रदान कर सकते हैं।

और ?

भैया प्यारेलाल, आजकल लोग मन्दाग्नि से पीडित है। उन्हे अपच का रोग होगया है। गर्मिया भी आगई हैं। एक ठकेल मे घट की स्थापना करें। उनमे, पोदीना, सोठ, हीग, जीरा और कालीमिर्च डालकर ठडा पानी भर दे। घडे को लाल कपडे से ढाप दें। साथ मे शीशे के गिलास या मटकने भी ले लें। ठकेल को ठेलते हुए बाजारो मे पदयात्रा को निकल पडे, आवाज लगाए—

ले, पी ले सौंठ का पानी !
तेरी जाली रहे गिरानी !!

—18 माच, 83

□

22



आज किसका मुँह देखा था!

सुन लिया आपने ? डाक्टर साहब क्या कह रहे थे ?

अरे रामप्यारी, तुम भी यू ही हो। डाक्टर यहा कोई चुप बैठने को थोडे ही आए थे, कहने आए थे, कह गए। हम सुनने को बैठे थे, सुन लिया। बात आई-गई हुई।

नही, नही! वह तुमसे ही नही, मुझसे भी कह गए हैं कि इनका आलू बद, चावल बद, चाय बद, पान-तम्बाकू बद और मिठाई तो इनके लिए जहर है, अगर उसे छू लें तो साबुन से हाथ धुलाकर तौलिए से रगडकर पोछ देना।

तो रामप्यारी, दरवाजे पर एक साईनबोर्ड लगा दो कि यह घर डाक्टरो, हकीमो और वैद्यो के लिए हमेशा के लिए बद। भला यह भी कोई बात हुई कि आलू मत खाइए, चीनी मत खाइए। नही सुना, तुमने होली का यह रसिया—

जुग-जुग जियो मेरी नाचनहारी
नाचनहारी के दो दो हुजौं
मुकदम और पटवारी
जुग-जुग !
जो रसिया मेरे छोरा होयगौ
करूंगी पांत तिहारी ।
पूरी ऊपर बूरो दउगी, आलू की तरकारी।
जुग-जुग !

आलू बिना कोई सब्जी बनती है ?

गोभी मे आलू। बैंगन मे आलू। मटर मे आलू। गाजर मे आलू। सेम मे आलू। सेंमरी मे आलू। आलू के पराठे। आलू की कचौडी।

आलू के समोसे। आलू की टिकिया। दही के आलू। सोंठ के आलू। आलू के पापड। जो आलू पर रोक लगाए, उसे झापड।

डाक्टर साहब के सामने कहकर देखना, वही तुम्हारी अक्ल ठीक करेंगे। मैं तो उनकी एक-एक बात मानूगी। उन्होंने कहा है कि चावल खिलाना तो दूर, चकाचक जी को चावलो के दर्शन भी मत कराना। जैसे लाल कपडे से साड भडकता है, वैसे ही चावलो को देखकर इनका रोग भडकेगा।

और चावलो के लिए हमारा चित्त जो भडकेगा। जीवन मे आदमी दो ही चीजो की तो कामना करता है—धन की या धान की। जिस आदमी के घर मे धान नही, उसका बिरादरी मे मान नही। डाक्टर तुम्हारे यू ही हैं। उत्तर भारत के नब्बे प्रतिशत लोगो को गेहू खाने के कारण आखो की बीमारिया हुआ करती हैं। लेकिन चावल खाने वाली बगाली, उडीसी, केरली, तमिली, गुजराती, मराठी, हैदराबादी और कर्नाटकी महिलाओ की आखें बडी-बडी कटोरे के मानिंद हुआ करती हैं। गेहू को पचने मे देर लगती है, चावल को नही। गेहू को पहले पीसो, फिर माडो, फिर पोओ, फिर बेलो और फिर सेंको। लेकिन धान बिचारे भल्ले, कूटे काटे चल्ले। लेबर की बचत, और आज के युग मे दुर्लभ ईंधन की बचत। अहा, जब चम-चमाती स्टील की थाली मे खिल खिल करता भात आता है, तो ऐसा लगताहै कि जैसे अमिताभ बच्चन के पास फिर से रेखा आगई हो। चावल तो धानो का राजा है, रामप्यारी! सादे चावल, मीठे चावल, दूध भात, दही भात। ये लो मेवा वाले केसरिया चावल। बिना भात के कढी पडी-पडी रोती रहती है। चावल के बिना दोसा नही, इडली नही। और छोडो हमारी खीर बिना चावल के नही बनती। रामो! डाक्टर साहब को फोन कर दो कि जैसे इन्दिरा का विदेश मन्त्रालय बिना पी०वी० नरसिम्हाराव के नही चल सकता, वैसे ही हमारा भोजन बिना भात के नही चल सकता।

तुम सौ मूड के हो जाओ, मैं तुम्हारी थाली मे चावल को वैसे ही नही आने दूगी, जैसे इन्दिरा जी काग्रेस इ मे बाबू जगजीवनराम को लाने के लिए तैयार नही। मैं आपको चीनी, मिठाई से वसे ही दूर रखूगी, जसे काग्रेसियो को विश्व हिन्दू परिषद से दूर रहने को कह दिया गया है। बहुत खा लिए रसगुल्ले और गटक लिए खीरमोहन। अब खीर से भी कुट्टी और रबडी से भी छुट्टी। पराई लुगाई की तरह

अगर मिठाई से दूर नही रहोगे, तो यहा अकेले पडे रहना । मैं दिल्ली चली जाऊगी । यूरिन मे दो प्रतिशत और ब्लड मे दो सौ नब्बे प्रतिशत शुगर का होना माने रखता है । समझाती था कि मिठाई मत चरो ! मिठाइयो पर मत लिखो । मिठाइयो की बात मत करो । लेकिन तुम्हारा तो हाल यह है कि हरि भूलू, हरिनाम न भूलू । चलो मूग की दाल और हल्का फुल्का बनाया है तथा लौकी तुम्हारे लिए छोक दी है । खालो और खाकर सो जाओ ।

हम बोले—हाय राम आज सुबह सुबह किसका मुह देखा था ? वह कौन भला आदमी था, जो डाक्टर को लिवा लाया ? वह डाक्टर था कि हास्यरस का लेखक ? उसने हमारे साथ बडी दिल्लगी की । अच्छी बात है, अब हम भी किसी दिन उनके घर जाएगे और उनकी पत्नीजी से कहकर आएगे कि डाक्टर जमाने का इलाज करते हैं, अपना नही । इस उम्र मे वजन बढाए जा रहे है, यह ठीक नही । इन्हे चालीस दिन तक मूग की दाल के पानी पर रखिए और कहिए कि घर से सीधे मनब जाए और दवाखाने से सीधे लौटकर घर आए । चकाचक से दोस्ती करने पर इनकी बादी बढ गई हैं । इसका छटना बहुत जरूरी है ।

24 मार्च, 83

□

23



मागे आवै माल

कोई धन्धा बताओ, प्यारेलाल !

क्यो मजाक कर रहे हो, जीजाजी।

मजाक नही प्यारेलाल, तुम्हारी बहन अब पैर उखाड़े दे रही है।

प्यारेलाल शैतानी पर उतारू थे, कहने लगे—उखड़े कहा है ? पैर तो आपके जहा के तहा जमे हुए है। गठी हुई पिंडलिया, भरी हुई जाघें सब अपनी जगह चकाचक है। ये धधे के फदे जीजाजी, आपके वश के नही। जनम भर बाप दादो की कमाई बैठकर खाई है। अब आखिरी वक्त क्या खाक मुसलमा होगे ?

होना ही पडेगा, प्यारेलाल ! तुम उस दिन गुलकन्दी को दस हजार रुपए की शापिंग करा लाए, तो रामप्यारी हमसे कहने लगी—देखा ! मर्द ऐसे होते है। पत्नी को खुश रखने के लिए भैया ने दस हजार रुपए दस मिनट मे निकाल दिए। तुमने कभी दस रुपल्ली भी मेरे हाथ मे रखी कि बाजार जारही हो तो अपने लिए एक ब्लाउज पीस लेती आना। दो भी तो कहा से, कुछ कमाओ धमाओ तो बाल-बच्चो को लाड लडाओ। ससुर जी की कमाई, सदा बैठकर खाई।

अच्छा ! ऐसे बोली रामप्यारी बाई ? तो हम बताते है, बोलो क्या धधा करोगे ?

यार प्यारे, कुछ ऐसा बताओ कि 'हर लगै न फिटकरी, रग चोखा आवै।' यानी कोई व्यापार ऐसा बताओ कि उसके करने के लिए सरकार से कर्जा मिल जाए। फिर उसे तुम कर दो। बाद मे मजदूर कमाते रहे और हमे देते रहे।

व्यापार मे तुम्हारी पार नही पडेगी। इसमे दो-दो तरह के बहीखाते चलते है। दो-दो तरह का रुपया होता है। बात-बात मे

झूठ बोलनी पडती है। हर घडी फजीता होने का खतरा रहता है। कानून-कायदे आजकल ऐसे बन गए है कि जरा चूके और जेल गए।

तो भैया, पुरखो की कुछ जमीन पडी है, उसी को जोतने-बोने लगे ? कहा भी है कि उत्तम खेती, मध्यम बज।

चकाचकजी, देहात मे रहकर खेती करना भी आपके वश का नही। कीचड, मच्छर, धूप-ताप, साप, बीछू, बिजार और भैंसो को देखते ही भाग लोगे।

तो भैया कोई नौकरी चाकरी ही दिला दो, तुम्हारी बहन का मन तो रखना ही पडेगा।

अजी, हमारे जीजा होकर नौकरी किस साले की करोगे, तुम तो फटे कपडे पहनकर राजामण्डी स्टेशन पर टूटा कटोरा लेकर बैठ जाओ और आखें मूदकर आवाज लगाने लगो—कोई दाता दे! कोई माता दे। अधे-सूरदास पर दया करो भाई! देखते ही देखते कटोरा भर जाएगा। किसकी नौकरी और किसका व्यापार ? लोग कह गए हैं—

करै चाकरी आव खोट,,
सबत भले भीख के रोट।

तो सरऊ अपने जीजा पर भीख मगवाओगे ? शरम नही आती!

करी शरम तो फूटे करम। अरे भाई राजामण्डी मे नही मागना चाहते तो मथुरा चले जाओ। वहा पर आगरे से भी अच्छे चास है। कहा भी है, देश चोरी, परदेश भीख। और चकाचकजी आप तो जनम और करम दोनो से बामन हैं। सुना ही होगा—

औरन को धन चाहिए बावरी,
बामन को धन केवल भिक्षा।

भीख मागना ब्राह्मण के लिए कोई बुरी बात नही है। इसलिए हमारी सीख मानो, नही मानोगे तो हम कहना पडेगा—जिन्होने न मानी बडो की सीख, लेकर खपरा मागी भीख।

सुनकर हमें ताव आगया, बोले—प्यारेलाल, अपने पुरखो की याद करो। अपने को करोडपति समझते हो। वह दिन भूल गए, जब हमारे पिताजी के घर से आपके घर मे आटा आता था। याद करो हमारे पिताजी ने आपके पिता जी को पैसे देकर यह धधा चालू कराया था। अब तुम ऐसे रईसजादे होगए हो कि हमसे भीख मागने को कहते हो।

प्यारेलाल ठडे बने रहे और कहने लगे—गरम होने की बात नही है, चकाचकजी ! यह तो धधे का मामला है। आपने पूछा है तो बता दिया। नुकसान का नही, फायदे का बता रहे हैं। लो उठाओ आज का अखबार, पढो यह समाचार—

कानपुर, 22 मार्च। आपको शायद विश्वास नही होगा कि यहा एक गुरुद्वारे के सामने भीख मागने वाला 65 वर्षीय भिखारी गरीबे लाल न केवल लखपति है, बल्कि इसका एक बेटा 'डाक्टर', दूसरा 'पी०सी०एस०' तथा तीसरा लडका गाव मे 60 एकड भूमि मे ट्यूबवेल और ट्रैक्टर से खेती करता है। चौथा लडका वकालत पास कर चुका है। गरीबेलाल इस लडके को पुलिस कप्तान बनाना चाहता है। गरीबेलाल से जब सम्वाददाता ने पूछा कि क्या तुम्हारे लडको को यह पता है कि तुम कानपुर मे भीख मागकर अपने परिवार को प्रतिमाह नौ सौ से एक हजार रुपए तक भेजते हो।

गरीबेलाल ने नम नेत्रो से कहा कि वह पिछले 40 वर्षों से भीख मागने का धधा केवल एक ही उद्देश्य से कर रहा था कि उसके चारो बेटे बहुत बडे आदमी बन जाए। बस्ती के लोग और मेरे परिवारी जन केवल इतना ही जानते हैं कि मैं कानपुर मे दलाली करता हू।

सुनकर समाचार को हम बोले—धधा तो वाकई मे जोरदार है, पर हिम्मत नही पड रही।

इस पर प्यारेलाल हसते हुए बोले—मालामाल होना है तो कगाल का स्वाग भरना ही पडेगा। कहने वाले कह गए हैं कि "मागे आवै माल, उनके कहा कमी रे लाल ?" तो हे गोपाललाल ! जरा मोटी करो अपनी खाल ! कमजोरी का उठता ही नही सवाल ! कह रहे हैं प्यारेलाल—

भीख, दलाली, आढ़त पेशा,
कमजोरों का काम नहीं।

25 मार्च, 83

□

24



होली है भई, होली है !

' होली मुबारक, ननदोई जी—गुलकदी आई और हमारे सिर पर गुलाल-अबीर छिडककर बडी तेजी से कमरे से बाहर होगई । हमे न गुलाल छिडकने का अवसर दिया, न शुभकामनाए व्यक्त करने का ।

हम उठे । कमरे से बाहर गए तो देखा कि वह दूसरे कमरे मे अपने पति और ननद के साथ चाय-नाश्ते पर पर जुटी है । हमे देखते ही बोली—वहा क्यो खडे हैं, अदर आ जाइए । थोडा साथ दीजिए ! बैठिए ! मैं अभी आपके लिए नाश्ता लाती हू ।

एक साथ वह इतना बोल गई कि हमसे कुछ कहते न बना । हमे लाल-गुलाल देखकर रामप्यारी मुस्करा रही थी, और प्यारेलाल मजे ले रहे थे ।

हाथ मे ट्रे लिए हुए गुलकदी ने पुन कमरे मे प्रवेश किया । नाश्ते का सामान मेज पर रखकर बोली—माफ कीजिए, मैंने निहायत अदब के साथ सिफ आपके सिर पर गुलाल डाला है । देखिए सफेद बाल किस कदर गुलाबी होगए । अब पहले से कही अधिक सुन्दर लग रहे हो, ननदोई जी ! पर आप बडे कजूस हैं । हमारी मुबारकबाद का भी कोई उत्तर नही दिया । चलो, कोई बात नही । आपकी करनी आपके साथ । लीजिए पहले थोडा नाश्ता कर लीजिए । यह स्पेशल डिश मैंने केवल आपके लिए ही बनाई है । यह देखिए गुझिया है । यह गम समोसे अभी तले हैं । बर्फी म थोडो आपकी प्रिय विजया डाल दी है । उसका आपके 'चकाचक' लिखने पर अधिक असर न पडे, इसलिए कटोरे मे मलाई भी है । चसक के लिए ऊपर से उसमे थोडा सा सफद बूरा डाल दिया है । अब आपकी मर्जी है कि चाहे नमकीन से शुरू करें या मिठाई से ।

अब हम बोले, बोले क्या, उठ खडे हुए । देखने लगे कि कही आसपास रग-गुलाल है या नही । परन्तु रग तो गुलकदी की साडी

ब्लाउज पर था, और लाल गुलाल तो उनका चेहरा होरहा था। हमने कहा—गुल्लो, यह बात गलत है। बिना सूचना आक्रमण करना भारतीय नही, पाकिस्तानी तरीका है। आक्रमण करके लौट जाना चीनी पद्धति है। हौंसला है तो मैदान मे आओ। चाहे गुलाल से खेलो या रग से। हम कमजोर नही है। यह क्या डरपोको का तरह अपने पति और ननद के पास भाग आई। जैसे ये तुम्ह बचा ही लेंगे।

कहते कहते हमने अपने कपडा स गुलाल झाडा और उसे समेट कर गुलकदी के दोनो गालो पर दो छोटी-छोटी बिंदिया जड दी।

रामप्यारी तालिया बजा रही थी। प्यारेलाल कह रहे थे—होली है भई, होली है। गुलकदी हस रही थी ऐसे कि ताज महल के आगन मे कुद की कलिया फूट पडी हो।

अब हमने कहा—माई डियर गुलकदी, होली बहुत-बहुत मुबारक हो आपको। बधाई तुमक भी मिस्टर प्यारेलाल। रामप्यारीजी, आज इन दोनो से निबट ले, हमारी-तुम्हारी तो कल छनेगी।

हमारी इस बात पर गुलकदी ने तालिया बजादी और कहने लगी—हा ननदोईजी इस बार इनके साथ जरा गहरी खेलना।

प्यारेलाल बोले—कल की तो कल देखी जाएगी, जीजाजी! आज तो यह मेज पर पडा हुआ नाश्ता अपने आपको अपमानित अनुभव कर रहा है। इसको अपने अन्तराल मे पहुचाइए।

शुक्रिया, प्यारेलाल!—हमने कहा और नाश्ते पर झुक गए।

शुभारम्भ बर्फी से किया। क्या बढिया मिस्तई मालूम थी। वह भी गुलाब जल मे बसी हुई। तबियत तर होगई। फिर उठाया समोसा। दात बज उठे—कट्ट। हमे ऐसा लगा कि जैसे जनता पार्टी मे कोई राजनारायण घुस गया हो। रामप्यारी ने मुह फेर लिया था। गुलकदी मुस्करा रही थी। प्यारेलाल कह रहे थे—कक्ड ही तो है, कोई बिच्छू तो नही है। निकाल फॅको इसे चौधरी साहब, देवीलाल की तरह, और बिना दात लगाए निगल जाओ समोसे को लोकदल (क) की तरह।

हम अकड कर बोले—मिस्टर प्यारेलाल, हम ककड-पत्थर चुगने वाले कबूतर नही हैं। इसे अपने मुख मत्री पद से निकाले दे रहे हैं, भोसले की तरह।

पूरा समोसा हमने मुह मे निकाल कर दूरी निशाने के साथ खिडकी के रास्ते से सडक पर ऐसे फेंक दिया, जैसे प्रधानमत्री निवास से मेनका का सामान कभी सडक पर प्रेस्थापित कर दिया गया था।

अब हमने गुझियाओ को उपकृत करने की बात सोची। एक बार मन मे यह बात आई अवश्य कि कही इनमे भी कोई गडबड न हो, लेकिन यह तो सामूहिक प्रयत्नो से सिद्ध हुई थी। इनमे तो रामप्यारी के साथ-साथ पडोसिन कुमारी कान्ता और श्रीमती शाता या भ्राता भी तो लगी थी। नही, इनमे कोई खतरा नही हो सकता। यह सोचकर हमने एक छोटी सी गुझिया को इस प्रकार मुखस्थ कर लिया, जैसे कभी इराक ने ईरान के एक छोटे से नगर को दबोच लिया था। लेकिन जब इराक की तरह गुझिया के अदर भरे हुए गोबर ने हमारी जीभ पर प्रत्याक्रमण किया, तो हमारे सामने बैठे खोमैनी पक्ष के लोग खुशी से उछल पडे।

आखिर रामप्यारी को दया आई और वह हमे हाथ पकड कर गुसलखाने ले गई। गुझिया थूकी, कुल्ले किए। तौलिये से हमारा मुह पोछते हुए रामप्यारी ने धीरे से कहा कि अब मलाई मत खाना। इसमे ऊपर-ऊपर मलाई और बुरा है, नीचे गुलकदी ने राख भर दी है।

हम वापस कमरे मे आए तो प्यारेलाल बोले—अब मलाई-वलाई छोडो, यह पान खाओ।

हमने पान तो ले लिया, लेकिन जब गुलकदी मुह खोलकर हसी तो मलाई का कटोरा उसके मुह मे उडेल दिया। अब मलाई उसके लिपस्टिक लगे होठो पर और राख अदर।

प्यारेलाल हमे ऐसे घूर रहे थे, जैसे बदरिया को पकड लेने पर बदर।

अब हमारी बारी थी। हम बडे जोर से बोले—होली है भई होली है ! यह मस्तो की टोली है। गुलकदी हमजोली है, चढी भाग की गोली है।

—28 माच, 83

□

25



वह बात औरहै

मथुरा के विश्रामघाट स्थित राधा-दामोदर के मंदिर म चोरी हुई।

हुई।

ठाकुर जी देखते ही रह गए। चार उनके वस्त्राभूपण और भोग-राग की वस्तुओ को उठा ले गए।

ले गए।

पडित कमलापति त्रिपाठी के पैतृक स्फटिक शिवलिंग को लोगो ने पार कर दिया।

कर दिया।

महादेव बाबा ने एक बार भी चोरो से यह नही कहा कि भाई, उन्हें त्रिपाठी जी के स्थान से विस्थापित क्यो कर रह हो ?

नही कहा।

खबर आई कि वहा से अष्टधातु की मूर्ति गायब होगई।

होगई तो होगई।

काशी के विश्वनाथ मदिर की चोरी का पता प्यारेलाल तुम्हे है ही ?

हा, है ही।

और यह भी पता है कि बाबा विश्वनाथ अब उत्तर प्रदेश सरकार के कब्जे मे चले गए हैं।

वह तो जाते ही।

और यह भी सुना होगा कि जब उत्तरप्रदेश के एक मत्री मथुरा गए और उन्होंने कुछ शिकायतें सुनी तो कह आए कि बाबा विश्वनाथ की तरह द्वारिकाधीश को भी हम सरकारी सरक्षण म ले लेंगे।

ले लेंगे तो ले ही लेंगे।

अब कल की घटना सुनो।

सुनाओ।

कि पुरी के जगन्नाथ जी जब रात को गहरी नींद में सो रहे थे तो यार लोग उनका भी सोने का मुकुट उतार कर ले गए।

वह सोने का मुकुट पहनकर सोये ही क्यो थे ? हम तो हमेशा अपनी टोपी उतार कर सोते हैं।

तुम कोई देवता थोड़े ही हो !

तो आपके देवता इतने कमजोर होगए हैं कि ठग और चोर उनका सामान लूट लेते है, लेकिन न वे अपनी गदा उठाते हैं और न चक्र चलाते हैं। न त्रिशूल सम्भालते और न तीसरा नेत्र खोलते हैं। इन्ही सब दृश्यो को देखकर ही तो स्वामी दयानन्द सरस्वती मूर्ति पूजा के विरोधी बन गए थे।

लेकिन तुम तो नही बने, प्यारेलाल ? हर मगल और शनिश्चर को हनुमान जी के मन्दिर मे जाकर पुत्र प्राप्ति के लिए मनौती मागते हो। वह भी सिर्फ सवा रुपये का प्रसाद चढ़ाकर।

वह बात और है।

और क्या है ?

तुम्हें समझना चाहिए।

क्या समझना चाहिए ?

कि जिस देवता के खुद सन्तान नही है, वह तुम्हें सन्तान कैसे दे सकता है ?

वह बात और है।

और क्या है ?

तुम्हें समझना चाहिए।

क्या समझना चाहिए ?

यही कि जो बातें समझ से बाहर हैं, उन पर तर्क-वितर्क नही करना चाहिए।

इसमे समझ मे न आने वाली बात क्या है ?

यही कि देवता लोग नही चाहते कि उन्हे सोने-चादी, हीरो पन्नो से लादा जाए। वह राजा-रईसो और धनी लोगो के आराध्य न होकर अब दीनबंधु होना चाहते हैं। अपने स्वर्णाभूषणों को

उतारकर, लुटाकर वह जनता जनार्दन के साथ होना चाहते हैं। उन्हे दीन प्यारे है। वे दीनानाथ है। आज के सम्पन्न लोगो की तरह अपने वैभव का प्रदर्शन नही करना चाहते। वह चाहते हैं लोग उनकी भक्ति करे। उनके वैभव की चकाचौंध मे न आए।

धन्य है, गुरूजी !

धन्य है तो चेला, हमारी एक बात और सुनो। गुलकन्दी के पास जो सोने-चादी और हीरा-जवाहरात के जेवर हैं, उन्हें लखनऊ जाने से पहले हमारे पास जमा करा जाओ। जब लोग देवताओ को नही बख्श रहे तो देवियो का क्या पता है ?

वह बात और है।

—30 माघ, 83

□

26



बीमारी सुख-चैन की

रामप्यारी पूछने लगी—आज इस समय तक क्यों लेटे हो ? उठो। कपडे बदलो। आज प्यारे बाबू नही आए तो तुम्ही उनके पास चले जाओ।

नही, रामप्यारी, आज दुश्मनो की तबियत कुछ अलील है।

रामप्यारी पास आई। सिर पर हाथ रखा। पूछा—क्यो, क्या हुआ ?

हमने हाथ की अगुलियो को खोलकर फैलाकर कहा—दिल कुछ यू, यू—यू, यू कर रहा है। सिर चकरा रहा है। मन उठने को नही कर रहा। लेटा रहने दो। छेडो मत।

सुनकर घबरा गई रामो। बोली—डाक्टर को बुलाऊँ। बाम मल दू। काफी पी लो। तबियत ठीक हो जाएगी। मैं डाक्टर को फोन कर रही हू।

हमने उत्तर दिया। हमारे मर्ज की दवा तुम्हारे डाक्टर के पास नही। यह बडा मूजी और मूडी रोग है।

कौन सा रोग है जी ?

इसे सुख-चैन का रोग कहते हैं। जब आराम करने को दिल करता है, या तुमसे सेवा कराने का मन हो आता है तो हम इस रोग को सादर अपने पास बुला लिया करते है। फिर देखते हैं तुम्हारे चेहरे की घबराहट, परिचर्या मे तत्परता और कर लेते हैं तुम्हारे प्यार का अहसास।

हिश्श !—रामप्यारी बोली, यह भी कोई रोग है।

हमने जरा सा तकिये के सहारे उठकर और रामप्यारी की आखो म आख डालकर कहा—मल्लो ! बडे काम का रोग है यह। जब घर मे अवाछित मेहमान आ जाते हैं, तो तुम पर भी इसका प्रकोप हो जाता है। सिर दर्द का बहाना करके तुम भी लेट जाती हो। चाय

तब या तो हम बनाते हैं या मेहमान स्वय । आते हैं हमारे यहा ठहरने और खाने, लेकिन तुम्हारे सुख-चैन वाले रोग को देख हम बैठ जाते हैं तुम्हारे सिरहाने और मेहमान बेचारे अफसोस प्रकट करके लगते हैं जाने ।

झूठ बोलते हो । मैं तो ऐसा कभी नही करती । तुम्हारे यार-दोस्तो और मेहमानो की खिदमत करते-करते मैं तो आधी होगई हू ।

यही बात तुम्हारी भाभी गुलकन्दी कहती है । उन्हे भी सुख-चैन का रोग है । आए दिन पलग पर लेट कर उई-उई करती रहती हैं । प्यारेलाल डाक्टरो के लिए दौडते है, डाक्टर नब्ज टटोलते ह, पहचान लेते हैं कि इन्हे भी सुख-चैन का रोग है । कुछ ट्रिकोलाइजर और कुछ विटामिन्स की गोलिया देकर आराम की सलाह दे, वह खुशी-खुशी लौट जाते हैं और तब चौके मे जाना पडता है तुम्हारी माताजी को । झाडू-पोछा लगाना पडता है तुम्हारे भाई प्यारेलाल को ! मिजाजपुर्सी के लिए जाना पडता है हमको और तुमको । क्या है न ?

जी हा, गुलकदी बडी शरारती है । उसे महीने मे 20 दिन यह सुख-चैन की बीमारी हो जाती ह । अम्मा जी काम मे खटती रहती है और नवाबजादी गुलकदी पलग पर पडी-पडी जासूसी और 'सक्सी' (कामोत्तजक) उपन्यास पढती है ।

रामप्यारी, हमने ता तुम्हारी सभी सहेलियो को इस रोग से पीडित पाया ह । वे सब इस बीमारी का बहाना लेकर आराम फरमाती रहती ह और उनके मर्दुए, उनकी ननदे और सासे बडबडाती जाती है और काम करती रहती हैं । चलो अच्छा है, डाक्टरो का धधा चल रहा है । अपनी माताजी से कहो कि कभी-कभी वह भी इस सुख-चन की बीमारी का बुला लिया करे, जिससे गुलकदी को काम-काज करने की आदत बनी रह ।

अजी हमारी माताजी ऐसी नही, वह तो बहू की बीमारी की बात सुनते ही घबरा जाती ह । गुलकन्दी पलग से उठना भी चाहे तो उठने नही देती । कहती हैं कि बहू तू आराम कर । काम कितना है, मैं अभी निबटाए देती हू । यह बीमारी ता आपके खानदान मे ही है । मैं जब आई-आई थी तब आपकी माताजी को अक्सर यह बीमारी हो जाया करती थी । वह चादर ओढकर पलग पर लेट जाया करती थी । और मजे की बात यह है कि डाक्टर को नही बुलाने

देती थी। कहती थी कि जरा-सी तुलसी की चाय बनाकर दे दो, मैं ठीक हो जाऊंगी या दूध मे केसर डालकर ले जाओ गर्मी आ जाएगी। या पैरो मे धडकन हो रही है जरा दवा दो। जब तक जिन्दा रही, इसी सुख-चैन की बीमारी से पीडित रही। अब यह खानदानी रोग आप मे भी आगया है।

कहते-कहते उन्होने हमारी चादर को झटक कर दूर फेंक दिया। अपने एक हाथ से हमारा दाहिना हाथ पकडा और दूसरे से बाया कान और खीचती हुई बोली—यह है सुख-चैन की बीमारी का का रामबाण इलाज।

—6 अप्रल, [redacted]

□

27



चड्ढी आंदोलन

चकाचक जी, आपने आज यह क्या भेष बना रखा है ? ड्राइंग रूम में ठीक से कपड़े पहन कर बैठा कीजिए। यह क्या चड्ढी पहनकर तख्त पर जमे हुए हो ! कोई भला आदमी आ जाए तो क्या कहेगा ?

भला आदमी तो प्यारेलाल सिवाय तुम्हारे, हमारे पास कोई आता ही नहीं। और आ भी जाएगा तो हमारा क्या कर लेगा ? हम अपने घर में कैसे भी बैठें, इससे किसी को क्या लेना-देना ? अपने घर में ही तो बैठे हैं। नई दिल्ली में बोट क्लब पर सरकारी कर्मचारियों की तरह केवल जांघिया पहन कर तो प्रदर्शन कर नहीं रहे। जब उन्हें कोई नहीं रोक सका, तो हमें रोकने वाला कौन होता है।

नई दिल्ली के सरकारी कर्मचारियों ने तो खादी के विरोध में टैरीकोट के कपड़ों की मांग के लिए प्रदर्शन किया था। आप किस बात के लिए यह अभद्र प्रदर्शन कर रहे हैं ?

प्यारे लाल, हम तुम्हारे टैरीकोट के कपड़ों के विरुद्ध खादी की मांग के लिए यह प्रदर्शन कर रहे हैं। यह अशुद्ध कपड़े त्याग कर तुम्हें खादी का प्रयोग शुरू कर देना चाहिए।

यह भी कोई बात हुई ! यह तो अपनी-अपनी पसन्द है। खादी आज जितनी महंगी है और उसकी धुलाई में कितने पैसे खर्च होते हैं, यह देखते हुए आम आदमी उसे नहीं खरीद सकता। खादी फटती जल्दी है। फटने पर उसकी सिलाई नहीं हो सकती। खादी आजकल वह पहनते हैं जिन्हें नेता बनना होता है। हमें नेता बनकर जनता की गालियां नहीं खानी हैं। आप चड्ढी पहनें या इसे भी उतार दें, हमें खादी का व्यवहार स्वीकार नहीं।

प्यारेलाल तुम भूलते हो। खादी के गुणों को नहीं जानते। इसे पहनने वाले के तन का ही नहीं, मन का भी मैल छिप जाता है।

चकाचक अमल धवल खादी पहनकर बाजार मे निकल आइए तो लोग सम्भ्रम मे पड जाते हैं कि हो न हो यह व्यक्ति या तो एम०एल०ए० है या एम०पी०। चौराहे का पुलिस मैन खादीधारी की गाडी को पहले रास्ता देता है। दरबान झुककर आदाब बजाता है। मत्रीजी उसे पहले मुलाकात मे लिए बुला लेते हैं। पार्टी मे खादी के वस्त्र पहनकर बिना निमत्रण-पत्र के घुस जाओ तो कोई रोकने-टोकने वाला नही। बैरा वाला मिठाई की प्लेट पहले उसी के पास रखता है। खादी के इन महान गुणो को समझो और हृदय से अपनाओ। यदि खादी पहनोगे तो इस जन्म मे नाना सुखो को भोगते हुए अत मे स्वग के अधिकारी बनोगे। ऐसा गाधी बाबा गोली खाने से पहले हमारे कान मे कह गए थे।

लेकिन हमे गाधी की तरह से गोली नही खानी है। हम नही चाहते कि रास्ता चलते हुए लोग हमारे सफेद खादी के कपडो को देखकर हमे धुर्रा कहे। गाधी टोपी को देखकर हमे टुपिहा कहे। कधे पर खादी का झोला लटके देखकर हमे चदा-बटोरक मानें। किसी रईस की महफिल या अफसरो की दावत मे पहुच जाए तो हमे असभ्य, उजड्ड व दकियानूस माना जाए। लोग हमे धोती प्रसाद कहे। फालतू का आदमी समझें। सीधे मुँह बात न करे। चकाचकजी, आज के सभ्य समाज मे खादी का लिबास पहनने वाले को देहकानी, माडन सोसाइटी के अयोग्य और सवथा तिरस्कृत समझा जाता है। हम आपका मेमोरेन्डम लेने से इन्कार करते हैं। माग आपकी एकदम नामजूर।

अच्छा हुजूर, तो नौ दो ग्यारह हो जाइए। हम खादी की बुराई बर्दाश्त नही कर सकते। यह वह बाना है, जिसे पहनकर लोगो ने आजादी की लडाई लडी थी। यह वो पोशाक है, जिसे पहनकर लोग अग्रेजो की कुर्सी पर बैठे थे। इसमे भारत का इतिहास छिपा है। हमारा तिरगा झडा खादी का है। सविधान की जिल्द खादी की बनी हुई है। जवाहरलालजी खादी पहनते थे। इदिराजी खादी पहनती हैं। विनोबाजी तकली कातते-कातते मर गए। हम खादी को नही छोड सकते।

तो मत छोडिए, हम आपको छोड रहे हैं। नमस्ते।

—8 अप्रैल, 83

□

28



नकटी की नाक क्यो कटी ?

प्यारे लाल, इन दिनो क्या करते रहे ?

रामायण पढते रहे। नवाह्न पाठ बैठाया था, चकाचकजी !

रामायण सुनी या गुनी भी, या तुम्हारा वही हाल रहा कि—एक राम, एक रामन्ना ! वह क्षत्री, वह बामन्ना। वानें याकी नारि हरी, याने वाको मारन्ना।

यह तो अपनी-अपनी समझ है। गुलकदी ने प्रेम से पढी और हमने ध्यान से सुनी।

ध्यान से सुनी तो बताओ कि शत्रुघ्न ने दासी मथरा पर हाथ क्यो चलाया ? आज के जमाने मे अगर कोई नौकर को पीटता है तो वह जेल जाता है, पर वह तो नौकर नही, नौकरानी थी। क्या यह उचित काम हुआ ?

हुआ तो हुआ।

तो फिर यह बताओ कि लक्ष्मण ने सुन्दरी और बडे-बडे नाखून बढाने वाली आधुनिका शूर्पणखा की नाक क्यो काट दी ? आज के जमाने मे काटना तो दूर अगर कोई किसी सुन्दरी लडकी की नाक की तरफ अगुली भी उठा दे तो पुलिस वाले उसका सिर मु डाकर गधे पर बैठाकर बाजार मे घुमाया करते हैं। क्या किसी कन्या का किसी युवक से शादी के लिए स्वय प्रपोज करना कोई गलत काम है ? ऐसा करके लक्ष्मण ने आधुनिकाओ का घोर अपमान नही किया ?

किया तो किया।

किया तो किया, और मर्यादा पुरुषोत्तम राम देखते ही रह गए। यह भाई के साथ पक्षपात नही तो और क्या है ? फिर नाहक ही लोग आज के नेताओ को अपने बेटो के साथ पक्षपात करने को भला-बुरा क्यो कहते हैं ?

कहते हैं तो कहत है ।

और आप जैसे समाज सुधारक उस पर चुप रहते है ।

रहते हैं तो रहते है ।

नही, ऐसे अवसरो पर चुप रहना और धम लगती न कहना अच्छी बात नही है ।

नहीं है तो न सही ।

कैसे नही, औरत कोई खूटे की गाय, पैर की जूती या एसी वस्तु नही है, जिसे चाहे जहाँ ट्रासफर कर दिया जाए। बाली की पत्नी तारा को सुग्रीव को ट्रासफर क्यो कर दिया ? मन्दोदरी कोई रावण की रखैल थी—जो उसके मरते ही विभीषण की पटरानी होगई। नारी जाति के ऐसे अपमान पर तुम्हारा ध्यान क्यो नही जाता ?

नही जाता तो नही जाता ।

बस, कह दिया नही जाता, अरे जब सबके सामने भगवती सीता ने अपनी अग्नि परीक्षा देकर अपने को निष्कलक सिद्ध कर दिया—तो अपयश की आशका से मात्र एक धोबी के कहने पर राजाराम ने सीता को वनवास क्यो दे डाला ? आजकल तो विधानसभा व ससद मे आए दिन निंदा प्रस्ताव आते रहते हैं—और सरकार को हर रोज अपयश झेलना पडता है । लेकिन इसके कारण किसी केन्द्रीय मत्री या मुख्यमत्री को वनवासी नही बनाया जाता । क्या राम का सीता के प्रति ऐसा व्यवहार अनुचित नही था ?

था तो था ।

प्यारेलाल, वतमान कानूनो के अनुसार हम तुमको शूद्र तो नही कह सकते, लेकिन तुम हो पूरे ढोरा और गवार । अब कहो, ?

हैं तो हैं । आखिर ऐसी नास्तिक और अधार्मिक बाते कहने के पीछे आपका उद्देश्य क्या है ?

यही कि रामायण के लका काड को छोडकर तुम प्रम और श्रद्धा से उत्तरकाड पढा करो तो तुम्हे उत्तर देना आ जाएगा ।

चकाचकजी, हम अज्ञानियो की बातो का उत्तर नही देते । न उनकी कही हुई बातो का बुरा ही मानते हैं । क्योकि तुलसीदासजी कह गए हैं—

'तुलसी बुरौ न मानिए, जो गवार कह जाय'

गवार का अथ जानते हो प्यारेलाल, गवार का अय है, ग्वार यानी ग्वाला अर्थात गोपाल।

तब तो गवार शब्द आपके लिए बिल्कुल सही है, क्योंकि आप भी गोपाल के प्रसाद ही हैं।

हा, अब तुमने काम की बात कही। नवाह्न पाठ समाप्त कर लिया, लेकिन प्रसाद कहा है ?

जी, उसी के लिए तो हम आए है। गुलकदी ने कहलाया है कि जीजाजी आज प्रसाद यही लेंगे। चलिए उठिए।

क्या बना है ऐसा प्रसाद मे जो कि इतनी दूर खीचे लिए जा रहे हो।

चकाचकजी, बने हैं माल पुए और वह भी खोए के और वह भी रबडी के साथ।

तब तो भाई चलना ही पडेगा। क्योंकि हमारा सिद्धात है—

बासी कूसी, कोस, दुकोसी, पूरी-पत्ता बारह।
जो सुन पाय माल पुअन की भाग कोस अठारह॥

21 अप्रल 83

□



❀ ❀ ❀

नाय मानै मेरो मनुआं

प्यार लाल, कभी गिरिराज महाराज की परिक्रमा का गए हो ?

पहले जाते थे, आजकल नही जाते ।

क्यो ?

यो कि भगवान की यह लीला भूमि भी आजकल टक्सो की मार से पीडित है । मथुरा से गोवधन मे घुसो तो टैक्स, गोवधन से चन्द्रसरोवर और सूयपुरी की यात्रा से वापस फिर गोवर्धन आओ तो फिर टैक्स । गोवधन से वरसाने वाली राधारानी के दर्शन करके फिर गोवधन लौटो तो फिर टैक्स । यहा टैक्स, वहा टैक्स । आगरा मे तो टैक्सी नही मिलती, लेकिन ब्रज मे टैक्सो की भरमार है । इसलिए दूर से ही ब्रज को नमस्कार है ।

लेकिन भैया प्यारेलाल, तुम्हारी बहन यानी हमारी जो रामप्यारी है ना, वह तो हमे आए दिन ब्रज की यात्रा के लिए उकसाती रहती हैं । कहती हैं कि आज एकादशी है, चलो गोवधन । पूर्णमासी आगई है, चलो परिक्रमा दे आए । मरे आगरे लाकर पटक रखा है, न कोई बोलने को, न बतराने को । दिन भर मानुष के दर्शन नही और रात मे मच्छरो से चैन नही । सुनती थी कि आगरे मे बहुत गर्मी पडती है, लेकिन यहा तो आजकल रजाई मे भी ठड लग रही है । तुम्हे इतनी जल्दी पडी कि गर्म कपडे सब दिल्ली भिजवा दिए । भैया से कहो कि जाकर ले आए उन्हे ।

और क्या कहती है ?

कहती हैं—

नाय मान मेरो मनुआ,
मैं तो गोवर्धन को जाऊ मेरी वीर,
नाय मानै मेरा मनुआं ।

सात कोस की द परिक्म्मा,
मानसी गंगा नहा मेरी बीर,
नांय मान मेरो मनुआं।
सात सेर की करी कढ़य्या,
मेंड-मेंड प लाऊ मेरी बीर,
नांय मानें मेरो मनुआं।

कढ़ैया सात सेर की है, तो चकाचकजी हम भी चलेंगे।

अरे यह कढ़ैया गाने की है, खाने की नहीं। खाने का तो वेजीटेबिल की पूड़िया हैं और तेल की जलेबिया हैं। बे-स्वाद पेड़े हैं और बिना खोये की बर्फी है। परिक्म्मा मे कीचड़ है, कंकड़ है, काटे हैं और पत्थर हैं।

और पूछरी के लौठा के दर्शन भी तो हैं? उन्हें देखकर आपकी याद आ जाती है और याद आ जाता है—

धन धन हैं रे पूछरी के लौठा।
अन खाय ना पानी पीव,
काहे ते परौ रे सिलोटा
धन धन है रे पूछरी के लौठा।

और भाई प्यारे लाल, हमे तुमको देखते ही यह याद आ जाता है—"बोलन्त हेला, बचनन्त गारी। देखी श्याम मधुपुरी तुम्हारी।"

यह उक्ति आप पर ही घटती है। दुनिया बदल गई, लेकिन चकाचकजी, न आपका ब्रज बदला, न आप। आज भी वहा के लोगो का यही हाल है कि 'घर मे नाज न पानी, बजाय रह्यो हर-मुनिया।' दुनिया के लोगो से मिलो तो वे राजनीति की बात करेंगे। ज्ञान-विज्ञान की चर्चा छेड़ेंगे और कुशल क्षेम पूछेंगे। लेकिन ब्रज के लोग परस्पर बातें करते हैं—कहो भई, कलेऊ करि आए?

हां, जलेबिया, कचौडिया जप ली, तुम्हारा क्या हाल है?

हम तो भैया रात को छदम्मी के छोरा की ब्याह की ज्योनार मे गए थे। मुखामेल मिठाइया थी। दूध पकौडिया थी। पस्स, पस्स भरिकें खुरचन परोसी, छदम्मी प्यारे नें। अभी तक छाती पर जमी है। कलेऊ को बहानो टारौ, खाली दो-कचौडी और छं जलेबी खाय

के आए है। सद्दा कू फिर सुनहरे की सगाई मे 'लेहु, लेहु, बस्स, बस्स' होइवे वारो है। आज तो एक टैम की नागा रखेंगे।

ठीक कहते हो प्यारेलाल। वल्लभपुर मे और ब्रज मे तो घी खाड के गारो से ही चिनाई होती है। आज के लोगो की तरह नही हैं हमारे ब्रजवासी कि दो से तीन फलकिया हो जाए तो पेट मे दर्द होने लगता है। यह लम्बी-लम्बी परिक्रमा भी ब्रजवासी इसलिए लगाते हैं कि खाना-पीना पचता रहे।

और आज के नेताओ की तरह पदयात्रा का भी कायक्रम चलता रहे।

—22 अप्रल, 83



30



लारे लारे । पैया-पैया !!

प्यारेलाल, आज हमने एक निश्चय किया है।

हुकुम !

कि आज से हम अपना 'चकाचक' कुर्सी पर बैठकर नही लिखवाया करेंगे।

हुकुम !

क्योंकि कुर्सी सब अनिष्टों की जड है। इसलिए हमने इसके त्याग का निश्चय किया है।

हुकुम !

माई डियर, हुकुम यह है कि तुम भी कुर्सी से खडे हो जाओ।

हुकुम !

हम आगे-आगे चलते हैं और तुम पैया-पैया हमारे पीछे लग लो।

हुकुम !

हम यह हुकुम तुमको इसलिए दे रहे है कि हमने भी महात्मा गाधी का नाम लेकर पदयात्रा पर निकलने का निश्चय किया है।

हुकुम !

लेकिन हमारी यह पदयात्रा कन्याकुमारी से लेकर राजघाट तक की नही होगी। क्योंकि कही तो देश मे पेट्रोल के भाव पानी बिक रहा है और कही इतना पानी बरस रहा है कि थमने का नाम ही नही लेता। हमारी सुशोभित, सुचिक्कन यह दुलभ मानवदेह ऐसी विषमताओ और विपरीत परिस्थितियो मे झोकने योग्य नही है। यानी हम कोई चद्रशेखर नही हैं।

हुकुम !

ना हम राजीव गाधी हैं कि जो युवक काग्रेस की मिनी पद यात्राओ मे जत-तत और जहा-तहा, खरामा-खरामा चहल-कदमी कर आए।

हुकुम !

हम चकाचक हैं। अपने सभी काम चकाचक होते हैं। हम देश का हाल जानने से पहले अपने घर का हाल जानना चाहते हैं। देश को सुधारने से पहले अपने घर को ठीक करना मागते है। हम आकाश मे लम्बी-लम्बी कुलाचे भरना मागते है। हम तुमको साथ लेकर अपनी छन की पदयात्रा करेंगे।

हुकुम !

छन पर से ही सूघेंगे कि रसोईघर म रामप्यारी क्या पका रही हैं ? पडोस के किस घर मे स्टोव जल रहा है या गैस जल रही है ? पतियो के दफ्तर या फैक्ट्री जाने के वाद हम देखेंगे कि गृहदेवियो के क्या हाल है ? छत पर टहल-टहल कर ही हम गली-मोहल्ले का नजारा अपनी आखो मे भर लेंगे कि कौन किसके पीछे पडा है, और कौन किसको पीछे छोडकर आगे-आगे भागा जारहा है ? वहा से यह आराम से देखा जा सकता है कि साडी वाली दुकान पर भीड ज्यादा है या जौहरियो की दूकानो के आगे कितनी कारें खडी है ? वहा से ही हम यह भी भाप सकते हैं कि कौन-सा हलवाई मिठाई के के भाव मे डिब्बे को भी तोल रहा है ? कौन गुण्डा किस भले आदमी से क्या-क्या बोल रहा है ? यह सब जानने के लिए हमारी छत की पदयात्रा वहुत जरूरी है। हमारे-तुम्हारे छत पर आ जाने से रामप्यारी और गुलकन्दी को भी चैन की सास मिलेगी। हमारा तुम्हारा लिखने मे भी अधिक मन लगेगा। आस-पास की स्थिति को देखकर ही हम देश की दशा को भी देख सकेंगे। क्योकि देश की दशा को देखने के लिए पदयात्राए जरूरी हैं। इसलिए प्यारे, चलो हमारे पीछे-पीछे, पैया-पैया।

हुकुम !

प्यारे बकौल इन्दिराजी के मध्यावधि चुनाव नही हो रहे है तो क्या हुआ। आम चुनाव तो अधिक दूर नही। उसकी तैयारी अभी से करना वहुत जरूरी है।

हुकुम !

प्यारेलाल, आज के राजनेता यह धमकी दे रहे हैं कि अगर हमारी मागें पूरी न हुई तो इसका फैसला सडको पर किया जाएगा। लेकिन चकाचक-दल की यह घोषणा है कि हम फैसला सडको पर नही, छतो पर करेंगे। ठीक है न ?

हुकुम !

हुकुम, तो आ जाओ लारे-लारे ! पीछे-पीछे !! पैया पैया !!!

—23 अप्रल, 83

□

31



चमचा या फूल सूरजमुखी का

प्यारेलाल, तुम क्या कहलाना पसद करोगे ?

श्री श्री एक लाख ग्यारह हजार एव सौ आठ पूज्य पण्डित प्यारेलाल शर्मा उर्फ गुलकदी देव ।

बहुत अच्छे ! लेकिन लोग तो तुम्हे चकाचक का चमचा समझते हैं ।

ऐसे लोग चुगद हैं । वे इदिराजी की तरह हमारे प्रताप को भी सहन नही कर पा रहे । चरित्र-हनन के दोष मे इन्हे छ महीने की फासी दे दी जाए ।

इनका आरोप है कि तुमने चकाचक जैसे इज्जतदार, लोकप्रिय और भोले मनुष्य को फास लिया है और अपने मन-माफिक बातें हमसे कहलाते रहते हो । 'चमचा' का सबसे बडा गुण यही होता है ।

जी, हम 'चमचा' नही, चाहो तो खुशामदी, यानी प्रशसक कह सकते हो ।

यही तो 'चमचे' के सबसे बडे हथियार होते है ।

इन हथियारो से हम अपनी नही, आपकी रक्षा करते है । आपके गुणो को जनता तक उद्भासित करते हैं । हमारे जैसा समर्थक आपको कोई दूसरा नही मिल सकता ।

हा प्यारेलाल, समर्थन देकर ही चमचा मुह लगता है । आज के सभी चमचे अपने आपको अपने 'प्रिय' का समर्थक ही घोषित करते हैं, 'चमचा' नही । आप जिन चमचो की बात करते है, वे तो 'सदा सुहागिन' हैं । एक मरा तो दूसरा कर लिया, यानी वे कभी विधुर या विधवा नही होते । आज एक मन्त्री या नेता के साथ है—तो कल किसी दूसरे के । वेश्या की तरह जिसके पास शक्ति और सपत्ति देखते हैं उसीके साथ आचर-गाठ जोड लिया करते है । लेकिन हम तो घर

मे एक पत्नीव्रत और बाहर एक पतिव्रता हैं। आप हैं तब भी आपके हैं, आप न रहे तब भी आपके ही रहेंगे। हम तो चकोर की तरह हमेशा आपके चन्द्रमुख की ओर टकटकी लगाए रहते हैं।

यानी मौका पाते ही तुमने चमचागीरी शुरू कर दी। तुम 'फूल' हो। हिन्दी के नही, अंग्रेजी के। चमेली के नही, गोभी के।

जी, इसमें थोडा सा सुधार कर लीजिए। 'फूल' अवश्य हैं। गेंदा, चमेली की तरह छोटे-छोटे नही, गोभी की तरह भी नही कि कोई काट-उबालकर हमारी सब्जी बना ले। हम गोभी से भी बडे हैं। हम सूरजमुखी के फूल हैं। जिधर आपका मुंह फिरता हे, हम भी मुडकर उसी ओर देखने लगते है।

प्यारेलाल, हम तुम्हारी चमचई पर खुश हुए।

शुक्रिया! यह आपकी बन्दानवाजी है, वरना हम क्या नालायक हैं।

और प्यारेलाल, मावदौलत जब खुश होते है, तो उसे बखशीश देते हैं। जाओ आगरे का लाल किला तुम्हे इनाम मे दिया। वहा जाकर जोधाबाई के महलो मे गुलकदी सहित रहने लगो।

मगर मावदौलत यह कैसे मुमकिन है ?

चमचई से कुछ भी नामुमकिन नही। सुनो, एक बार की वात है कि एक बाअकल चमचा एक बडे एलाटमेन्ट अधिकारी के पास गया और बताया कि उसे मकान की सख्त जरूरत है।

जी!

अधिकारी ने कहा—यह कौन सी बडी बात है, जो भी मकान खाली पडा हो, उसका नम्बर ले आओ। हम तुम्हे एलॉट किए देते हैं।

जी!

प्यारेलाल, चमचा तुम्हारी ही तरह फितना था। उसने देखा कि लालकिला बिल्कुल खाली पडा रहता है। जगह भी अच्छी है। लिया उसका नम्बर और पहुच गया अधिकारी के पास।

जी।

अधिकारी जब कागजो पर दस्तखत करते है तो ध्यान होता है उनका अपनी टाइपिस्ट पर और आंखें होती हैं केबिन के दरवाजे पर कि कोई आ न जाए। इसलिए वह फटाफट दस्तखत मारे जाते हैं

और कागज सरकाते जाते हैं। इस तरह हो गए लालकिले के कागज पर दस्तखत।

गजब ! फिर क्या हुआ ?

फिर चमचेजी ने दूसरे अधिकारी से कब्जा दिलाने की बात कही। उसने कागज देखे, पता लगाया और कहा कि हे आधुनिक प्यारेलाल, होश की दवा खाओ—और अपने साथ-साथ जिस अफसर की चमचागीरी से धोखे में तुमने दस्तखत कराए हैं, उसके भी प्राण बचाओ।

जी।

तो भाई हमने भी दे दिया तुम्हें लालकिला। अब अपनी अतिरिक्त चमचई से उस पर कब्जा प्राप्त करलो, तो हम समझें कि तुम वास्तव में प्यारेलाल हो। नहीं तो हम यही समझेंगे कि तुम वह हो, जिन्हें कहा जाता है कि न 'ही' यों में और न 'शी' यों में। कहिए मिजाज मुखलिस है न ?

—5 मई, 83

□

32



बलमा थानेदार सडक पै ?

प्यारेलाल, तुम अपने लडके को क्या बनाना पसन्द करोगे ?

पहले लडका हो तो जाए !

चिंता न करो प्यारे, गुलकदी खट्टी अमिया खाने लगी है, अब अधिक देर नही।

मानलो कि लडका पैदा हो भी गया। उसके बनने, बनाने मे तो कम से कम पच्चीस वर्ष और लगेंगे। तब न जाने किस राजा का राज्य हो।

प्यारेलाल गोस्वामी तुलसीदास कह गए हैं कि 'समय जात नहि लागत वारा।'आजादी को जन्म लिए पेंतीस वष होगए। इस समय का कोई पता लगा ? राज अभी तक कांग्रेस मूल के लोगो का ही है और अगले 25 वर्षों तक भी ये मनहूस किसी न किसी रूप मे राजा की कुर्सी पर बैठे ही रहेंगे, इसलिए इसकी चिन्ता न करो। यह बताओ कि अपने लडके को इंजीनियर बनाओगे या डाक्टर ?

चकाचकजी, हमे कोई पागल कुत्ते ने थोडे ही काटा है कि अपनी होनहार सन्तान को जान-बूझकर असुविधाओ के अधकार मे ढकेल दे।

तो क्या उसे व्यापारी या नेता बनाना चाहोगे ?

जी हमे उसे आदमी बनाना है। चोर, उचक्का, ठग नही बनाना है। आज व्यापारी या नेता से बढकर कोई दूसरी गाली देने की नही बची।

तब क्या गुलकदी के बेटे को अध्यापक या पत्रकार बनाना है ?

जी, वह कुछ भी बने, लेकिन हम अपनी तरफ से उसे फटीचर नही बनने देंगे। अगर वह हाथ से निकल जाएगा तो उससे कहेंगे—पाजी, अपने फूफा की तरह जा मर ! और चकाचक हो जा !

वैसे तुमने इस सम्बन्ध मे कभी गुलकदी से सलाह ली है ?

ली है।

उस रमणी के क्या इरादे है ?

वह तो अपने बेटे को, अगर भगवान की कृपा मे हो जाए तो थानेदार बनाना चाहती है।

थानेदार ? यह तो आज के युग का बडा कुख्यात व्यक्ति माना जाता है। गावो मे चोरिया, कस्बो मे डकैतिया, शहरो मे भ्रष्टाचार और थानो मे बलात्कार के लिए लोग इसी का जिम्मेदार ठहराते हैं। नही नही, अपने बच्चे को पुलिस मे मत भेजना। अगर ऐसा किया तो तुम्हारे पहले की तीन और बाद की तीन यानी सात पीढिया तक की हवाई यात्राओ को देखते ही-देखते उड जाएगी।

हमने गुलकदी को यह बाते समझाई थी, मगर वह नही मानी।

क्या कहती हैं ?

कहती हैं कि बेटा थानेदार हुआ, तो सबसे पहले चकाचकजी को धरवाया। वे हमारे सम्बन्ध मे बहुत उल्टी-सीधी बातें बका करते हैं।

हू।

फिर कहती है कि जो-जो पडोसिनें आज मुझसे जलती हैं। अपनी नई-नई साडियो व गहनो की ठसक दिखाती हैं या अपने को बहुत रूपवती मानती हैं, एक-एक करके सबके घर मे अफीम रखवा दूगी और थाने मे बद करा दूगी। इतनी ऊपरली कमाई आएगी कि फिर बुढापे मे तुम्हे कोई काम करने की जरूरत नही रहेगी। उसकी शादी मे इतना दहेज आएगा कि घर भर जाएगा। बाजार से कभी कोई चीज खरीदनी नही पडा करेगी। आज नौकर मिलना एक समस्या है, तब थाने के सिपाही और मुशी मुफ्त मे घर का काम कर दिया करेगे। तब वही बात हो जाएगी कि "बेटा भया कुतवाल अब डर काहे का।'

प्यारेलाल, गुलकदी का खयाल तो ऊचा है। व्यावहारिक भी लगता है। लेकिन उसे हमारा एक रसिया चुपके से कान मे सुना देना—बेटा थानेदार ! सडक पै ठाडी लुट गई देवरिया !

—7 मई, 83

33



नीलामी लडको की

प्यारेलाल, कहा से आरहे हो ?

परसो आप एक वारात मे गए थे तो कल हमारा नम्बर था। आज वहू को विदा कराके लौट रहे हैं।

तो वताओ लडका कितने मे नीलाम हुआ ?

चकाचकजी, यह वातें वताने की नहीं, समझने की होती हैं।

तो समझा दो प्यारे भैया !

तो समझ लो चकाचकजी, कि आजकल प्राइमरी अध्यापक 25 हजार मे, माध्यमिक स्कूलो का अध्यापक 40 हजार मे, और कालेज का प्राध्यापक शादी के लिए 60-70 हजार मे नीलाम हुआ करता है।

हु !

इजीनियर की लाटरी एक लाख मे खुलती है तो आई० ए० एस० पी०सी०एस० तथा ब` पुलिस अधिकारी के पद पर नियुक्त नए नए छोकरे 3 लाख से लेकर 5 लाख तक की वोली पर खड़े खडे नीलाम कर दिए जाते हैं।

और डाक्टर ?

डाक्टरो को भला आदमी अपनी लडकी देना पसन्द नही करता। क्योकि उनके पास अपनी वीवी के लिए कोई समय ही नही।

यही हाल वकीलो व पत्रकारो का भी है। इनकी वोली भी अपेक्षाकृत सस्ती छूटा करती है।

तव प्यारेलाल, तुम्हारे पिताजी ने हमारे पिताजी को ठग लिया। एक रुपया देकर रोक गए। 21 रुपए देकर सगाई भेज दी। घरा मे ढाई सौ रुपए क्या दिए कि हल्ला मच गया।

चकाचकजी, आपको इतने मिल गए यही बहुत है। वह तो

आपको हमारे पिताजी ने पसन्द कर लिया, नही तो कुवारे ही रह जाते।

गलती होगई प्यारेलाल, अगर तब की बजाय हमारी शादी अब होती तो यह भी बढिया मिलती और माल भी चोखा आता। यार, तुम खुशकिस्मत निकले, तुम्हारी दो चार फैक्ट्रिया लगी देखकर लडकी वाले रोब मे आगए और घर भर दिया।

व्यापारियो का तो यही आलम है चकाचक्जी, यह लोग बच्चो की नीलामी नही करते, पहले से ही टटोल लेते हैं कि आसामी कितने का है।

लेकिन प्यारेलाल, जमाना बडा उल्टा आगया है। लडके तो लडके अब लडकिया भी नीलाम होने लगी हैं।

वे कहा हो रही हैं ?

भइया प्यारेलाल, यह खबर गाधी जी के गुजरात की है। जहा उनके पिताजी दीवान थे, उस राजकोट की है। वहा के एक गाव मिठाकुर नक्की का एक लडकी वाला एक लडके के साथ बात पक्की कर आया और दूसरे को सगाई दे आया। फिर क्या था आगइ दानो बाराते सजधज कर। एक दूल्हा दूसरे को देखकर दात पीसने लगा। लाठी-बल्लम निकल आए। तलवारें म्यानो से खिच गईं। बन्दूक कधो से उतर पडी। खून-खराबा होने ही वाला था कि तुम्हारे जैसे कोई पोदापच बीच म पड गए। उन्होने फसला किया कि ताकत का इस्तेमाल न करो। थैली के बल पर वधू की बहली को हाक ले जाओ। फिर क्या था ! बोलिया बुलने लगी। नीलामी छूटी अन्त मे 15 सौ नकद रुपए पर।

बडा खोटा जमाना आगया है। खोटा क्या है प्यारेलाल, 15 सौ की जगह दो हजार लो, और गुलकन्दी की नीलामी हमारे नाम छोड दो। बोलो है मजूर ?

जी नही, अकाली नेता लोगोवाल की तरह भारत सरकार का यह फार्मूला भी नामजूर।

—17 मई, [redacted]

□

34



लाटरी खुल जाए तो ?

हमें पता लगा है कि

क्या ?

कि महाशय प्यारेलाल, रातो रात लखपति बनने की फिराक में है।

तो इसम कोई बुराई है ?

बुराई भलाई तो बाद में मालूम पडगी, फिलहाल तो यह बताओ कि क्या तुम लाटरी के टिकट खरीदा करते हो ? वह भी एक-दो नही, हर सीरीज के दस-दस।

इसमें थोडी-सी अतिशयोक्ति है। हम तो केवल सवा सौ रुपए की दछिया अपनी ब्राह्मण सरकार को दान किया करते है--

लाटरी टिकट खरीदबो,
विप्रन को व्यवहार।
डूब जाए तो पार है,
पार आए तो पार।

कितने दिन होगए यह नेक काम करते हुए ?

यो समझ लीजिए कि हमारी पचवर्षीय योजना चल रही है।

और अभी तक रकम डूब ही रही है ?

कहा तक डूबेगी, कभी न कभी तो उछलेगी ही। आप जैसे लोग ही तो कहते है—"लगा रह दिल किनारे से, कभी तो लहर आएगी।"

यह बताओ प्यारेलाल अगर लाटरी खुल गई तो उस रकम का करोगे क्या ? अच्छा खासा धधा है, कोठी है, कार है और गुलकदी जैसी कामिनी है। फिर क्या इस रकम को लेकर तुम्हारी धन की हविश नही बुझी ?

चकाचकजी, माया का मोह किसी से छूटा है। अगर लाटरी खुल

जाए तो हमने सोचा है कि आपको उसमें से एक सिल्क का कुर्ता बनवा देंगे और बहिन रामप्यारी को एक साड़ी ला देंगे। बाकी रकम चक्रवृद्धि ब्याज पर छह साल के लिए बैंक में जमा करा देंगे। आप कहते हो लखपति को, छह साल बाद आपके प्यारेलाल करोड़पति हो जाएंगे।

मान लिया होगए। फिर उस रकम का क्या करोगे ? अस्पताल बनवाओगे कि धर्मशाला ? कालेज खुलवाओगे या गरीब छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था करोगे ? अनाथालय खोलोगे या विधवा-आश्रम ?

चकाचकजी, सही-सही बता दें, हम कुछ नहीं करेंगे। देख-देख कर उस रकम को जिएंगे। पड़ोसियों, रिश्तेदारों और जाति बिरादरी वालों को जी भरकर जलाएंगे। लक्ष्मी कोई किसी को देने की चीज है। जो उसकी कद्र नहीं करता, लक्ष्मी भी उसकी कद्र नहीं किया करती है। जो उसे दबाकर या छिपाकर रखता है, लक्ष्मी उसी की कद्र करती है। हम तो रकम को दबाकर महामाया से यही प्रार्थना करेंगे—

दाता घर जाती तो
कदर ऐसी नाहिं पाती
मेरे घर आई तो
बधाई बाट बावरी,
खाने, सहलाने, बस
खाने में छिपाय राखों
होउ ना उदास,
मेरे चित्त यही चाव री !
खाऊं न खवाऊं
मर जाऊं तो सिखाय जाऊं
बेटा और नातिन कूं
अपनो स्वभाव री !
दमरी हूं न दय कभी
सपने में भिखारी कूं
प्यारे कहें लक्ष्मी
तू बठी गीत गाय री !

अरे वाह रे, सूम शिरोमणि प्यारेलाल !

अगर कभी भगवान की कृपा से लाटरी खुल जाए तो आप क्या करेंगे ?

प्यारेलाल, हम अपने आगन मे चार कुए खदवाएगे। एक का पानी नहाने-धोने के लिए होगा। दूसरे मे गर्मी के दिनो मे हर रोज दस-बीस सिल्लिया बफ की डलवा दिया करेंगे। तीसरे मे पानी नही, दूध भरा जाएगा और चौथे मे प्यारेलाल, ठसाठस भर दी जाएगी शक्कर ! समझे ?

समझे और हुए पत्थर के।

हा, तुम मनुष्य नही, पत्थर के ही बुत हो। चार बड़े-बड़े कोठे बनवाएगे। इसमे एक मे भरे होगे बादाम। दूसरे मे भरे होगे पिस्ते-मुनक्के। तीसरे मे प्यारेलाल, इलायची, मगज के बीज, सौफ वगैरह- वगैरह और चौथे मे विराजमान करदी जाएगी विजयाराजे। नही-नही केवल विजया यानी भग-भवानी। लोग घर से अगोछा लेकर आए। सिल-लोढियो के फड पड़े होगे, उन पर घोटा लगाए, छाने और पिए। निवटे और नहाए।

नशा चढ जाए तो कहा जाए ?

इसके लिए प्यारेलाल, हमारे घर के बाहर खुलेंगी चार दुकान। एक पर खोआ के, दूसरी पर बेसन के और तीसरी पर मैदा सूजी के माल मुफ्त मे पाओ और गुपाललाल के गुन गाओ।

चौथी दुकान तो रह ही गई ?

चौथी दुकान पर मिलेंगे—मगही पान, बनारसी सादी पत्ती। पीपरमेंट, छोटी इलाइची, गुलाब जल व केवड़े मे भीगी हुई चार-चार गिलौरिया एक साथ गाल मे जमाओ और प्यारेलाल जिन्दाबाद कहते-कहते अपने घर जाओ।

—24 मई, 83

□

35

ॐ ॐ ॐ

लडकिया पास न होने पाए !

प्यारेलाल, सावधान ! इस बार लडको की अपेक्षा परीक्षाओ म लडकिया अधिक बैठी हैं।

तो इसमे परेशानी की क्या बात ? यह तो खुशखबरी है। लडकिया अगर अधिक पढेंगी तो देश अधिक सुसस्कृत होगा। साक्षरता का ही नही, ज्ञान का भी प्रकाश फैलेगा। वे अपने परिवार के भरण-पोषण मे भी हाथ बटाएगी। घर-गृहस्थी व बच्चो की देखभाल भी बेहतर होगी।

मिया, हम तुम से नारी शिक्षा पर भाषण नही मागते।

तो क्या मागते हो ? पानी कि शिकजी ? शबत कि लस्सी ?

अरे, खस्सी ! हमारी ये फरमाइशें तो जब तुम्हारे घर मे आए, तब पूरी करना। हमारे घर मे ही इन चीजो की चर्चा करके मिया की जूती और मिया की सिर वाली बात ।

तो बोलो क्या बात है ?

प्यारेलाल, बात यह है कि देश मे यदि पढी लिखी लडकियो की सख्या बढ गई तो बेचारे लडके बेरोजगार हो जाएगे। वे सडको पर जूतिया चटकाते फिरेंगे और लडकिया नौकरी पाकर बजाय घर गृहस्थी का खर्चा चलाने के रोज-रोज नई साडिया व सैंडिले खरीदती रहेगी। यह एक राष्ट्रीय समस्या है, सरकार की तो है ही। अगर स्त्री शिक्षा का सिलसिला इसी तरह जारी रहा तो भारतीय समाज भी नारी के हाथ हो जाएगा।

हो जाने दीजिए, वे कमाएगी और हम घर मे बैठकर खाएगे।

कैसी आसानी से कह दिया कि खाएगे। अरे, तब मदु ए पहले डाट खाएगे, पीछे खाना खाएगे। खाना तो पीछे खाएगे, पहले खाना पकाएगे। खाना आसानी से नही मिलेगा, इसके लिए पहले बच्चे खिलाने पडेंगे। बोलो है मजूर ?

चकाचकजी, हमारे-आपके जीवन मे तो यह समस्या आनी नही। आगे की आगे वाले जानें। इस समय मुफ्त समाज-सुधारक बनने मे क्या हर्ज है ?

हर्ज लल्लू यह है कि बेटिया पढी और उन्होने अपनी मम्मियों के कान भरे कि मम्मी तुम पापा से इतनी दबी-दबी क्यो रहती हो ? क्या वे खुद चाय बनाकर नही पी सकते ? खाना खाने के बाद मेज पर से अपने बर्तन उठाकर स्वय साफ नही कर सकते। विदेशो मे ऐसा ही होता है। सभ्य समाज का यही चलन है कि आदमी औरत के काम मे पूरा-पूरा हाथ बटाता है। प्यारेलाल, गुलकन्दो तब शेर हो जाएगी, और बच्चू तुम्हें मेमना बना देगी।

तब क्या किया जाए ? क्या स्त्री शिक्षा पर प्रतिबन्ध लगाने का आदोलन चलाया जाए ? या बेटियो को स्कूल, कालेजो से हटा लिया जाए ?

नही प्यारेलाल, बात बहुत आगे बढ गई है। ऐसी बात मुह से निकाली कि तुम्हारे घर पर औरतो मे प्रदशन किया।

तब ?

तब इसका इलाज लाला यही है कि चोर को क्या मारो, उसकी नानी को मारो।

वह कैसे ?

वह ऐसे कि भगवान की कृपा से अभी तक परीक्षा पुस्तिकाए जाचने वालो मे पुरुषो की सख्या ही सबसे अधिक है, उनसे मिलो और कहो कि भाइयो ! जाति सकट मे है। पुरुषो को विनाश के माग पर जाने से तुम्ही बचा सकते हो। सावधान ! लडकियो का हैंड राइटिंग देखकर पिघलना नही। कलयुग मे दया हत्या के समान है। एकता से ही देश की रक्षा हो सकती है। सकट के समय एक हो जाओ और कमर कसलो तथा फैसला करलो। कानो कान सारे परीक्षको तक हमारी बात पहुचा दो कि इस साल कोई लडकी पास न हो पाए। एक एक लडकी को फेल करदो। न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी। जब बास ही नही होगा तो बासुरी कहा से बजेगी ? फेल हो जाएगी, तो नौकरी कहा से मिलेगी ? नौकरी नही मिलेगी तो लडकिया कैसे सिर पर नाचेंगी ? जैसे ही लडकिया फेल हो कि करो उनकी फटाफट शादी। चट-मगनी पट ब्याह। शादी हुई कि बच्चे हुए। बच्चे हुए कि खतरा टला।

—26 मई 83

□

36



कथा की व्यथा

[illegible] तुमने कभी कथा सुनी है ?

[illegible] सुनकदो हर पूर्णमासी को सत्यनारायण की कथा [illegible]

[illegible] तुम्हारे आचरण साधू नामक वैश्य की तरह हैं। [illegible] लकड़हारे की तरह हैं। लेकिन लकड़हारा तो हर [illegible] था परन्तु हमने तो आपके यहा कभी कथा [illegible]।

37



मूछो की महिमा

प्यारेलाल, आज तो शेव वना आए।

जी हा, अब तो चद्रशेखर पदयात्रा करते हुए आगरा स चले गए। अब दाढी मूछे बढाने से क्या फायदा ?

लकिन प्यारेलाल तुम क्लीन शेव मत रहा करो। चाहे नाममात्र की ही हो, चेहरे पर मूछे बहुत जरूरी है।

क्यो ? क्या भगवान राम और कृष्ण की किसी मूर्ति और चित्र के चेहरे पर मूछे देखी है ? क्या महावीर स्वामी, भगवान बुद्ध, दयानन्द सरस्वती, महात्मा गाधी और विनोबा भाव मूछें रखते थे ? अजी, जब पडित जवाहरलाल नेहरू ने मूछे नही रखी, तो हम क्या रखेंगे ?

लेकिन महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, चन्द्रशेखर आजाद और राजर्षि पुरुषोत्तमदास टडन तो मूछे रखते थे। हिन्दी के युग प्रवर्तक प० महावीर प्रसाद द्विवेदी और सुप्रसिद्ध साहित्य समालोचक प० रामचन्द्र शुक्ल से लेकर पडित किशोरीदास वाजपेई तक सब मूछो वाले थे। फिर तुम निमूछिये क्यो ? क्या तुमने सुना नही—

बिना कुचन की स्त्री
बिन मूछन को ज्वान।
मोके प फीके लगे
बिना सुपारी पान॥

चक्राचकजो, आप नही जानते मूछे रखने से बडे नुकसान है। किसी लडाकू औरत से आपका पाला नही पडा, नहीं तो उससे आपको यही सुनने को मिलता कि ठहर जा बजमारे, अभी तेरी मूछे उखाडे देती हू।

लगता है प्यारेलाल, तुम्हारा अवश्य ही ऐसी किसी जबरजग से पाला पडा है। हमारी रामप्यारी का तो यह कहना है कि वह मद क्या जिसके मुह पर मूछे न हो।

लेकिन हमारी गुलकदी तो न जाने कहा से एक दोहा सीख आई है।

हा हमने भी उनके मुह से यह दोहा सुना है—

कहां बिहारीलाल ह,
कहा जि प्यारेलाल ?
कहा मूछ के बाल ह,
कहा पूछ के बाल ?

अच्छा! तुम्हारे सामने हमारा नाम। और हमारे सामने तुम्हारा नाम हमे वह यो सुनाती है—

कहा बिहारीलाल ह
कहा चकाचकलाल ?

खर छोड़ो प्यारेलाल, मूछ के अपने मजे ह। कोई मक्खीनुमा तो कोई तितलीनुमा। कोई कटार की तरह तो कोई तलवार की तरह। कोई छज्जे की तरह होठो पर झुकी हुई तो कोई गोद और मोम के सहारे मे कानो तक ठुकी हुई। देखे हैं तुमने मूछो के लच्छे ? गोल-गोल गालो पर झूलते हुए मूछ के गलमुच्छे। सुनी है कहानी कि मूछ का वाल रख जा और उधार ले जा। अब तो बिना मूछो के बेटो को देखकर बाप का भर आता है कलेजा। हाय, मरने पर कोई मूछ देने वाला भी नही। आज के साहित्य म मूछो का कोई हवाला भी नही।

तो चकाचकजी, परेशान न हूजिए। मूछो का दुनिया से अभी लोप नही हुआ है। लीजिए पढिए यह खबर—पाकिस्तान मे एक स्थान है—मोजरा। इसके समाचार सुनिए जरा। यहा रहते है मिया नजर अब्बास, इनकी मूछा की लम्बाई का किबला कीजिए अहसास। उनकी मूछ सिर्फ चार फुट तीन इच लम्बी हैं। इनकी वजह से मिया अब्बास बड दम्भी है। यह मरोरने के ही नही, वजन उठाने के काम म भी आती हैं। एक बार म 12 किलोग्राम के बाट ऊपर उठा ले जाती हैं। विश्व प्रतियोगिता मे इनकी मूछो ने पहला नबर पाया है।

तभी तो प्यारेलाल हमने आज चकाचक के लिए मूछो का विषय अपनाया है।

—15 जून, 83

□

38



आय जा रे आगन मे

हम चकाचक लिखवा रहे थे कि अचानक गुलकदी एण्ड कपनी ने हम पर धावा बोल दिया। प्रेम शकर लिख रहे थे और शिवशकर सुन रहे थे। शिवेन्द्र खिडकी से झाककर नजारा ले रहे थे। मनीराम बगल मे बठे थे और नाम के ही बाकेबिहारी कुछ ऐठे-ऐठे थे। दरवाजे पर जो महिलाओ का हुज्जूम देखा तो प्यारेलाल जा छिपे तख्त के नीचे। हम जब तक कागज-पत्तर समेटे कि तब तक बाल्टी भरे पानी और उसके साथ आती हुई "होरी रे रसिया" की वानी ने हमारे तन-मन को सरावोर कर दिया।

गुलकदी इस समय भूत बनी हुई थी। भूत क्या कहे एकदम अवधूत बनी हुई थी। रग और गुलाल ने वह कमाल दिखाया था कि उनके सुचिक्कन काले घुंघराले केश इस समय जटा-लटा बने हुए थे। उनके मुखमडल पर इस समय राष्ट्रीय तिरगा लहरा रहा था। होली का रग उन पर इतना डाला गया था कि कपडे बदन से चिपक गए थे। साडी लथर-पथर होरही थी। उनके एक हाथ मे छोटी छडी थी और दूसरे मे पानी की डोल्ची। दूर से ही उन्होने हमे ललकारा—

'जो तेरे मन मे होरी खेलन की
आय जा रे आगन मे'

हमने अपने दोनो शकर साथियो को साथ लिया और होली के मैदान मे आ डटे। गुलकदी छडी हिलाती ही रह गई कि हमने उसे लपक कर अपने हाथ मे ले लिया और तख्त के नीचे की ओर इशारा करते हुए गुलकदी से कहा—तुम्हारा शिकार यहा छिपा हुआ है। परन्तु गुलकदी ने हमारे इशारे की ओर ध्यान नही दिया, ध्यान दिया उसकी ललिता, विशाखा और चद्रावली आदि सखियो ने। तख्त के नीचे छिपे प्यारेलाल को वे घसीटकर आगन मे ले आई। लाला की ऐसी गत बनाई कि उसे छठी का दूध याद आगया।

एक सखी के सिर पर सदूक भी था। उसे दूसरी ने खोला और वदल दिया प्यारेलाल का चोला। पहना दिया चूडीदार पायजामे पर घाघरा और उढा दी कुर्ते के ऊपर ओढनी और फिर गीत के मधुर बोल गूजे--कि बिंदिया चमकेगी, कि चूडी खनकेगी। हमे मजा आगया।

हमने तुक मिलाई कि फाग अब माचेगा। कि गुलकदा नाचेगा। जश्न जोरो पर था। होली अपने पूरे रग पर थी। कही हमारी भी प्यारेलाली न कर दी जाए, इससे बचने के लिए हमने एक जुगत निकाली। गोरी बने प्यारेलाल को खडा कर लिया बीच में और उसके चारो ओर एक दूसरे का हाथ पकडाकर खडाकर दिया गोपी मडल को। हम जा खडे हुए प्यारेलाल की बगल मे। डाल दी उनके गले मे बाहे। खोलने लगे उनका घूघट तो सारा वातावरण खिल-खिल उठा।

हमने गुलकदी एण्ड कम्पनी से कहा--गाओ मेरी गोपियो गाओ, हमारी तर्ज में जरा ठुमके के साथ--

रसिया को नारि बनाओ री,
रसिया को

नचाते-नचाते हम उन्हे जीने के पास ले गए फिर खोली किवाडें और चढ गए सीढियो पर। वद कर ली अन्दर से साकल और पहुच गए आगन के ऊपर वाली बालकनी पर। लगा दी नल के नीचे नली। कि ठडे पानी की जो फुहार चली तो यह गई और वह निकली।

तो हमारे पाठको हमने तो मनाई ऐसे। तुम्हारी गुजरी कैसे? खर्च करो डाक के कुछ पैसे और लिखो कि तुम्हारे पल्ले पडी भसे या भैसे? लाल गुलाल या कीचड? हमारी तरह छैला रहे या प्यारेलाल की तरह लीचड? नही शर्माना, जो कुछ गुजरी हो सही सही बताना। रहेंगे तो फिर मिलेंगे अगली साल, नही तो होली की राम-राम और याद रखना चकाचक का कमाल।

-- धुलहैडी फाग



39



रडवा रेजीमेन्ट

गुलकन्दी ने आपके लिखने के लिए आज एक चकाचक मजमून दिया है।

गुलकन्दी ने दिया ह तो चकाचक होगा ही। क्या है ?

लेकिन साथ मे उन्होने यह भी कहा है कि इस विषय पर लिखते हुए नन्दोई जो बहके नही।

प्यारेलाल, यह तुम्हारे कुमग का फल है कि सलोनी सलहज हम बहका हुआ समझती हैं। हमारी तरफ से उनके चरण छूते हुए यह कहना कि हम बहके हुए नही, महके हुए हैं। यकीन न हो तो निकट आकर देख लो। हा, बताओ क्या मजमून है ?

जी, पूरा समाचार सुना देते है। लिखा है—

"पटना, 15 जून (यूनी)। बिहार सरकार म एक ऐसा विभाग है, जिसके सभी उच्चाधिकारी या तो विधुर ह या तलाकशुदा। इस विभाग के आयुक्त, अवर सचिव, निदेशक तथा प्रबन्ध निदेशक या तो रडवे हैं या इनकी पत्नियो ने उन्ह तलाक दे दिया है।

सचिवालय सूत्रो के अनुसार यह विभाग समाज कल्याण विभाग है, जिसका प्रमुख काय निराश्रित महिलाओ की देखभाल करना है।"

वाह! इसे कहते है सुखद सयोग! कल रात आगरे मे जो रिमझिम हुई, तो हमने सुना कि कुछ रगीली आगरेवालिया यह गीत गारही है—

रडवा तो रोव आधी रात,
सपने मे देखो कामिनो, जो!
कोई न पानी वाको भर सक,
कोई न राध वाको भात,
सपने मे देखो कामिनी, जो!

कोई न धोव वाकी धोवती,
कोई न पूछे वाकी बात,
सपने मे देखो कामिनी, जी !
अरे रडवा तो रोव आधी रात,
सपने म देखो कामिनी जी,

क्या कहते हो चकाचकजी, सुना द यह गीत आपकी गुलकन्दी को।

नहीं-नही, उनको न सुनाना, नही तो इसे वह अपने ऊपर ले जाएगी। वह तुम्हारी तरह वृद्ध नही है, पलट कर हमे दूसरा लोक गीत लिख भेजेगी—

मोहल्ला रडवन को यारी,
देख पराई नार,
मूड पत्थर ते द मारी।

जीजाजी, वसे आप हैं भी इसी के लायक। वहक गए न ? गुलकन्दी ने यह कतरन इसलिए भेजी थी कि आप विहार के विधुरो का कुछ इलाज कर। या तो उनके पल्ले किसी विधुरा को बाध दे, या समाज कल्याण विभाग से इस मुसीबत को साफ करवा दे।

यानी हम उनसे कहे कि वच्चे, हो जाओ सन्यासी—'राड हुई, घर सम्पत्ति नासी। मूड मुडाय भए सन्यासी।'

सन्यासी वनान को कौन कहता है ? उनसे कहो कि कुछ पराक्रम करक दिखाए। भारत के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू भी तो विधुर थे।

प्यारेलाल, हर विधुर जवाहरलाल नही वन पाता। इसके लिए वडे सयम और लगन की जरूरत होती है। वह आजकल के विधुरो मे कहा ? इनकी हालत यह है—

बिछुआ बजे बगल के घर म,
रडवा उठ उठ बठो होय।

फिर वहके श्रीमानजी ! विधुरो की समस्या केवल बिहार तक ही सीमित नही है। यह विश्वव्यापी महामारी है। इसके कारण दुनिया मे कुठा और नाना प्रकार के कष्ट पैदा होरहे है। समाज का नतिक ह्रास होरहा है। महिलाओ की इज्जत खतरे मे है। इसलिए हम इस विधुर-शक्ति का राष्ट्र के हित मे नियोजन करना चाहिए।

क्या चाहते हो, प्यारेलालजी ! हम सरकार से कहें कि रडवा को गृह उद्योगों में लगा दो कि जिससे नारियों को बेकार के कामों से फुरसत मिल जाए ? रडवे पानी भरें, चक्की पीसें, रसोई तपें, बर्तन मांजें और घर-आंगन की सफाई किया करें। यही न ?

विधुर इस काम का कतई तैयार नहीं होंगे। तब उन्हें अपनी दीन-दशा पर अधिक रोना आएगा। उन्हें तो घर-गृहस्थी की दुनिया से ही दूर रहना चाहिए।

तब तो तुम्हारे सुझाव के अनुसार उन्हें पत्थर तोड़ने और सड़क बनाने के काम पर लगा देना चाहिए।

यह क्या ? उन्हें फौज में भी तो भर्ती किया जा सकता है ?

यह ठीक है।

रडुए रह कर मरने से क्या फायदा ? अरे गोली खाकर मरो। इससे कम से कम गुलकन्दी जैसी नारियों की बोलियों से तो बच जाओगे।

ठीक है, रडुओं का फौज में भर्ती होना ही ठीक है। जैसे सेना में जाट रेजीमेण्ट, राजपूत रेजीमेण्ट, गोरखा रेजीमेण्ट, कुमायूं रेजीमेण्ट और सिख रेजीमेण्ट हैं, वैसे ही एक रडवा रेजीमेण्ट भी बन जाए।

अच्छा हुजूर ! प्रस्ताव मंजूर !!

—17 जून, 83

□

गोपालप्रसाद व्यास

व्यासजी हिन्दी व्यग्य-विनोद के ऐसे हस्ताक्षर हैं। जिन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपने मोद-विनोदी स्तम्भो से देशव्यापी ख्याति अर्जित की है। पहले आप दैनिक 'हिन्दुस्तान' में बीसियों वर्षों तक 'यत्र-तत्र-सर्वत्र' और 'नारदजी खबर लाए हैं' नाम से व्यग्य विनोद के सुप्रसिद्ध स्तम्भ लिखते रहे। फिर 'राजस्थान पत्रिका' में उन्होंने 'बात-बात में बात' निकालना शुरू किया। जब आगरा में वह दैनिक 'विकासशील भारत' के प्रधान-सपादक हुए तो उसे लोकप्रियता प्रदान करने के लिए उन्होंने 'चकाचक' नाम से एक दैनिक स्तम्भ लिखना प्रारम्भ किया। 'चकाचक' शब्द तब पाठको में एक मुहावरा बन गया। लोग पूछते थे—"कहो, कैसे हो ?" तो उत्तर मिलता था—"चकाचक है।" व्यासजी की यही चकाचकी इस पुस्तक में अपना आनन्द बिखेर रही है।